अर्धशती (1963-2013) का रोमांच

सिंहावलोकन/संस्मरण

✍ बलबीर दत्त

रांची एक्सप्रेस' ने इस वर्ष स्वाधीनता दिवस पर अपनी जीवन यात्रा के 50 वर्ष पूरे कर लिये। किसी समाचारपत्र का 50 वर्षों तक एक ही स्वामित्व के अंतर्गत अविच्छिन्न रूप से प्रकाशित होते रहना अपने आप में एक बेजोड़ प्रसंग और विशिष्ट उपलब्धि है।

50 वर्ष पूर्व की रांची

आज से 50 वर्ष पूर्व 1963 में जब रांची एक काफी छोटा शहर था, स्वाधीनता दिवस की पूर्व संध्या पर अत्यल्प साधनों से इस पत्र का समारोहपूर्वक प्रकाशन आरंभ किया गया था। तब अनेक लोगों ने यह आशंका व्यक्त की थी कि अखबारों की मरुभूमि समझे जाने वाले इस क्षेत्र से प्रकाशित होने वाला यह पत्र अपने कई पूर्ववर्तियों की तरह अल्पजीवी सिद्ध होगा। बिना कोई प्रोजेक्ट बनाये, बिना कोई मार्केट सर्वेक्षण किये, मामूली पूंजी से जोश में आकर आरम्भ किया गया यह पत्र भी पत्रकारिता की रणभूमि में कुछ अरसा बाद वीर गति को प्राप्त हो जायेगा।

लेकिन अनेक प्रकार के संघर्षों और प्रतिकूल परिस्थितियों के बावजूद यह निरंतर छपता रहा और 13 वर्ष बाद 1976 में पुन: स्वाधीनता दिवस की पूर्व संध्या पर ही इसका दैनिक में रूपांतरण हो गया। 1967 में रांची में कई दिनों के भीषण साम्प्रदायिक दंगों और कर्फ्यू में भी अखबार समय पर छपता रहा और बंटता रहा।

आज से 50 वर्ष पूर्व रांची की आबादी करीब 1 लाख 50 हजार थी और साक्षरता की दर थी करीब 20 प्रतिशत। आज रांची और उसके तेजी से विकसित हो रहे बाह्यंचल को मिलाकर यानी ग्रेटर रांची की आबादी तकरीबन 15 लाख है और साक्षरता की दर 70 प्रतिशत से अधिक है। इन पचास वर्षों में स्वर्णरेखा नदी के तटों से होकर बहुत पानी बह गया। इस बीच देश-दुनिया में ऐसे परिवर्तन हुए जो इससे पहले अनेक शताब्दियों में नहीं हुए थे। रांची का जितना बड़ा रूपांतरण हुआ वह विस्मयकारक है। आने वाले समय में इस नगर का इतनी तेजी से बहुमुखी विकास होगा कि नया राजधानी नगर बनाये बिना काम नहीं चलेगा। नगर विकास विशेषज्ञों के अनुसार सन् 2035 तक रांची की आबादी 30 लाख तक पहुंच जाने का अनुमान है। बाहर से बड़ी संख्या में लोगों के आप्रवासन से अब यह एक 'कॉजमपॉलिटन' (सर्वप्रादेशिक) नगर बन गया है।

कभी रांची में दो जोड़ी ट्रेनों का आना-जाना होता था। आज 50 जोड़ी से अधिक ट्रेनों का आना-जाना होता है। किसी समय यहां से केवल एक ही दैनिक अखबार प्रकाशित होता था जबकि आज हिन्दी, अंग्रेजी व उर्दू के दैनिकों की संख्या मिलाकर डेढ़ दर्जन हो गयी है। कुछ वर्ष पूर्व यहां कोई टीवी चैनल नहीं था। अब यहां चैनलों के ब्यूरो/मुख्यालयों की संख्या अखबारों से भी ज्यादा हो गयी है।

जब तोप मुकाबिल हो तो अखबार निकालो!

'रांची एक्सप्रेस' का प्रकाशन आरंभ होने का वर्ष दो युगों का संधिकाल था। यह हमारे राष्ट्र के लिये एक कठिन समय था। यह पंडित जवाहरलाल नेहरू के शासन का अंतिम दौर था। चीन के विश्वासघाती हमले ने हमारे देश को झकझोर दिया था। पूरा राष्ट्र सैनिक पराजय के अपमान की व्यथा से कराह रहा था। उसमें आत्मविश्वास और नया जोश भरने की

आवश्यकता थी। देश की आजादी की लड़ाई की तरह इस लड़ाई और उसके बाद की स्थिति में राष्ट्र की पत्र-पत्रिकाओं ने बड़ी रचनात्मक भूमिका निभायी।

'रांची एक्सप्रेस' ने अपनी शायरी से इन्कलाब लाने वाले उर्दू के मशहूर शायर अकबर इलाहाबादी की अभिव्यक्ति 'खींचो न कमानों को, न तलवार निकालो, जब तोप मुकाबिल हो तो अखबार निकालो' को अपना मूलमंत्र और जीवन ध्येय मानते हुए यहां के जनमानस की राजनीतिक चेतना को जाग्रत करने में योगदान किया। 'रांची एक्सप्रेस' में इसी शीर्षक से काफी लंबे समय तक एक स्तंभ भी चलता रहा। यह समाचारपत्र केवल सूचनाओं या समाचारों का माध्यम भर नहीं था बल्कि इसने पाठकों को बहुत कुछ सोचने-समझने और गतिशील होने पर विवश किया।

आज की नयी पीढ़ी आज से आधी शताब्दी पूर्व की स्थिति की केवल कल्पना ही कर सकती है। उन दिनों अधिकतर क्षेत्रीय पत्र बिना अधिक पूंजी लगाये ही शुरू कर दिये जाते थे। उनका आधारभूत ढांचा या इंफ्रास्ट्रक्चर आज के मुकाबले काफी कमजोर होता था। पत्रकारिता में आम तौर पर वही लोग आते थे जिनका इसके प्रति एक जुनून होता था, एक तरह का दीवानापन होता था। पत्रकारों का उद्देश्य शुद्ध नौकरी नहीं होता था, वेतन व अन्य सुविधाएं बहुत कम होती थीं। तब समाचारपत्र निकालना मुनाफे का सौदा नहीं होता था। रांची में तो अखबार उद्योग का कोई इंफ्रास्ट्रक्चर ही नहीं था। इसकी आद्योपांत स्थापना की गयी। यहां सुबह सवेरे अखबार बांटने की कोई प्रथा ही नहीं थी, क्योंकि सब अखबार बाहर से- पटना, कलकत्ता व दिल्ली से- आते थे और दोपहर को या शाम को बंटते थे। सवेरे-सवेरे पैदल या साइकिलों पर सब तरफ अखबार बांटने के लिये हाकरों का नेटवर्क तैयार करने में लम्बा समय लगा। **'रांची एक्सप्रेस' कई वर्षों तक अपना प्रतिस्पर्धी स्वयं था। यह बिहार का पहला अखबार था जिसने ऑफसेट प्रिंटिंग और कम्प्यूटरीकृत कम्पोजिंग का श्रीगणेश कर आधुनिकीकरण की दिशा में लम्बी छलांग लगायी।**

पत्रकारिता की पौधशाला

दिलचस्प बात यह है कि इस समाचारपत्र को 1976 में उस समय दैनिक किया गया जब इमरजेंसी के कारण कई अखबार बंद हो रहे थे और सेंसरशिप के कारण अखबारों की प्रसार संख्या घट रही थी। उस समय अखबार को सरस, रोचक व पठनीय बनाना आसान काम नहीं था। अखबार को आगे बढ़ाने के लिये, अपने चलने के लिये, स्वयं रास्ता बनाने, सड़क बनाने के कठोर अनुभवों से गुजरना पड़ा। उस समय जब रांची में दैनिक पत्र की कोई संस्कृति नहीं थी प्रशिक्षित पत्रकार उपलब्ध होने का कोई प्रश्न ही नहीं था। बाहर से कोई पत्रकार न तो रांची में आना चाहता था न आर्थिक कारणों से लाया जा सकता था। ऐसी अवस्था में इच्छुक युवाओं को प्रशिक्षण देकर ही अखबार में लगाया जा सकता था और वही किया गया। अनेक युवा प्रशिक्षणार्थी पत्रकारों के लिये 'रांची एक्सप्रेस' एक पाठशाला एवं वर्कशाप सिद्ध हुआ। सैकड़ों पत्रकार यहां का प्रशिक्षण व अनुभव प्राप्त कर देश के प्रिंट एवं इलेक्ट्रानिक मीडिया, सरकारी-गैर सरकारी संस्थानों के जनसम्पर्क, राजभाषा आदि विभागों और मीडिया से संबंधित विभिन्न काम-धंधों में कार्यरत हैं।

'रांची एक्सप्रेस' शायद देश का एकमात्र ऐसा दैनिक पत्र है जो अपने क्षेत्र के किसी नामी साहित्यकार की स्मृति में प्रत्येक वर्ष किसी साहित्यकार को पुरस्कृत करता है। 'रांची एक्सप्रेस' पिछले तीन दशक से झारखंड के यशस्वी साहित्यकार स्व. राधाकृष्ण की स्मृति में हर वर्ष इस क्षेत्र के एक साहित्यकार को सम्मानित कर रहा है। 'रांची एक्सप्रेस' ने अनेक उदीयमान युवा साहित्यकारों को प्रोत्साहन प्रदान किया। यहां तक कि किसी समय 'रांची एक्सप्रेस' के 'बाल भारती' व अन्य स्तंभों में अपनी रचनाएं भेजने वाले कई बालक-बालिकाएं व किशोर आज साहित्य या स्क्रिप्ट राइटिंग के क्षेत्र में अपनी एक पहचान बना चुके हैं। 'रांची एक्सप्रेस' ने पत्रकारिता पुरस्कार भी आरम्भ किया था जो कई वर्षों तक चला। **एक ऐसे समय में जब नागपुरी भाषा की कोई कदर नहीं थी, कोई मानप्रतिष्ठा नहीं थी, नियमित रूप से साप्ताहिक नागपुरी स्तंभ चलाया गया जो वर्षों चलता रहा। बहुत से लोग उन दिनों (1960 के दशक तक) नागपुरी को नागपुरिया कहते थे। यहां तक 1954 में राज्य पुनर्गठन आयोग की टीम को छोटानागपुर संयुक्त संघ द्वारा अलग प्रान्त के लिए दिये गये ज्ञापन**

में इस क्षेत्र की सम्पर्क भाषा का उल्लेख नागपुरिया के रूप में ही किया गया था। आकाशवाणी रांची द्वारा भी इसी शब्द का प्रयोग किया जा रहा था। नागपुरी के कई विद्धान इसे नागपुरी की अवमानता मानते थे। उनका तर्क था कि जैसे भोजपुरी भाषा को भोजपुरिया नहीं कहा जाता, वैसे ही नागपुरी को नागपुरिया नहीं कहा जाये। इस निमित्त नागपुरी भाषा के विद्वानों की एक गोष्ठी हुई जिसके निर्णय का समादर करते हुए 'रांची एक्सप्रेस' ने नागपुरी शब्द प्रयोग आरम्भ किया जिसका वांछित प्रभाव पड़ा। 'रांची एक्सप्रेस' के नियमित नागपुरी स्तम्भ ने नागपुरी भाषा को लोकप्रिय बनाने में महती भूमिका अदा की। नागपुरी भाषा ने इस क्षेत्र की लोक भाषा व सम्पर्क भाषा का अकादमिक रूप ग्रहण किया। जब झारखंड की पत्रकारिता का इतिहास लिखा जायेगा तब इस बात का उल्लेख अवश्य रहेगा कि 'रांची एक्सप्रेस' ने प्रत्यक्ष व परोक्ष रूप से हिंदी के क्षेत्रीय प्रेस का स्तर व प्रभाव बढ़ाया। इस आशय के उद्‌गार 'नवभारत टाइम्स' के तत्कालीन संपादक राजेंद्र माथुर ने 'रांची एक्सप्रेस' के रजत जयंती समारोह में व्यक्त किये थे।

झारखंड आंदोलन का रोजनामचा

जिस वर्ष 'रांची एक्सप्रेस' का प्रकाशन आरंभ हुआ था उसी वर्ष झारखंड पार्टी का कांग्रेस में विलयन हुआ और आंदोलन को गहरा धक्का लगा। अलग प्रांत आंदोलन को पुनः आरंभ होने, नये रूप में आरंभ होने, में काफी समय लगा। 'रांची एक्सप्रेस' न केवल इस आंदोलन का साक्षी और रिकार्डर रहा बल्कि इस जन आंदोलन को धार देने में सक्रिय भूमिका निभायी। एक प्रजातीय-आदिवासी आंदोलन ने एक विशाल सर्वसमावेशी क्षेत्रीय आंदोलन के रूप में परिणत होकर नया आकार और आयाम ग्रहण किया। इस आंदोलन की परिणति सन् 2000 में झारखंड राज्य की स्थापना और रांची नगर को उसकी राजधानी बनाने के रूप में हुई। 'रांची एक्सप्रेस' के प्रकाशन वर्ष (1963) में ही पंडित जवाहरलाल नेहरू ने भारी इंजीनियरी निगम (एचईसी) के विशाल उद्योग पुंज का उद्‌घाटन किया जो एक युगांतरकारी घटना थी। इसी दशक में रांची में राष्ट्रीय कोयला विकास निगम और हिन्दुस्तान स्टील की स्थापना के साथ व्यापारिक-व्यावसायिक गतिविधियों का विस्तार हुआ।

ब्रिटिश हुकूमत बनाम बिहार हुकूमत

अविभाजित बिहार में किसी गैर राजधानी नगर यानी पटना को छोड़कर निकलने वाला यह सबसे प्रभावी अखबार था- पहले रविवारी अखबार के रूप में और फिर दैनिक के रूप में। उस समय पटना के अखबारों में दक्षिण बिहार या छोटानागपुर क्षेत्र की काफी उपेक्षा होती थी। 'रांची एक्सप्रेस' के प्रकाशन के बाद इस क्षेत्र में पटना के अखबारों का प्रभाव क्षीण होता गया और **एक समय ऐसा आया जब बिहार में पटना के 'इंडियन नेशन' और 'आर्यावर्त' के बाद 'रांची एक्सप्रेस' तीसरा सबसे अधिक बिक्री वाला अखबार बन गया और पूरे झारखंड में छा गया।** खेद की बात है कि बिहार की राजधानी से प्रकाशित होने वाले ऐतिहासिक महत्व के ये दोनों प्रमुख अखबार बंद हो चुके हैं। जनता के अभाव-अभियोगों को प्रकाश में लाने और अनेक घपलों-घोटालों का खुलासा करने के कारण जहां 'रांची एक्सप्रेस' की लोकप्रियता बढ़ी वहीं इसे निहित स्वार्थी तत्वों का कोपभाजन भी बनना पड़ा। यहां तक कि इसमें प्रशासन भी पीछे नहीं रहा।

एक बार तो 1966 में बिहार सरकार ने एक कार्टून के प्रकाशन पर आपत्ति व्यक्त करते हुए अंग्रेजों के जमाने की याद दिला दी और 1962 के चीनी हमले के समय घोषित इमरजेंसी के समय जारी डिफेंस आफ रूल्स के एक नियम (नियम 45 के एक उपनियम) का हवाला देते हुए अखबार से सिक्युरिटी जमा करने की मांग कर दी, जिसे देने से इनकार कर दिया गया। पटना हाईकोर्ट ने 'रांची एक्सप्रेस' की रिट याचिका स्वीकार करते हुए सरकारी आदेश पर स्थगनादेश (स्टे) जारी कर दिया। अखिल भारतीय समाचारपत्र संपादक सम्मेलन ने राज्य सरकार की कार्रवाई का खुलकर विरोध किया। इस प्रकरण की व्यापक तीखी प्रतिक्रिया हुई जिसकी गूंज संसद में भी सुनायी दी।

तीन सांसदों अटलबिहारी वाजपेयी (जनसंघ), ए.डी. मणि (संपादक 'हितवाद' (नागपुर) और लाला जगत नारायण (संपादक 'पंजाब केसरी' जालंधर) ने राज्यसभा में एक ध्यानाकर्षण प्रस्ताव द्वारा पुरजोर ढंग से इस मुद्दे को उठाया। गृहमंत्री गुलजारी लाल नन्दा को यह आश्वासन देना पड़ा कि डिफेंस आफ रूल्स 1962 में हम ऐसा संशोधन कर रहे हैं कि भविष्य में यदि कोई राज्य सरकार किसी अखबार के विरुद्ध कोई कार्रवाई करना चाहेगी तो उसे केन्द्र सरकार की पूर्व अनुमति लेनी होगी। उधर राज्य सरकार ने अक्लमंदी का परिचय देते हुए सिक्युरिटी जमा करने का आदेश खुद वापस ले लिया। हाईकोर्ट के चीफ जस्टिस न्यायमूर्ति आर.एल. नरसिंहम और न्यायमूर्ति एस. अनवर की खंडपीठ ने सुनवाई के दिन सरकार पर व्यंग्यपूर्ण टिप्पणी करते हुए केस का निष्पादन कर दिया। 'रांची एक्सप्रेस' की ओर से हाईकोर्ट में वरिष्ठ अधिवक्ता ठाकुर प्रसाद (भाजपा नेता रविशंकर प्रसाद के पिता) ने रिट याचिका प्रस्तुत करते हुए कोर्ट में कहा था कि बिहार सरकार में विनोद भावना का अभाव है और उसे कानून की परख नहीं है जो उसने एक व्यंग्य चित्र को भारत की सुरक्षा से जोड़ दिया।

इमरजेंसी से साक्षात्कार

यहां एक दिलचस्प प्रकरण का उल्लेख करना प्रसंगानुकूल होगा। 1963 में साप्ताहिक 'रांची एक्सप्रेस' का उद्घाटन बिहार के तत्कालीन राज्यपाल अनन्तशयनम आयंगर नहीं किया था। आयंगर लोकसभा के स्पीकर रह चुके थे। उन दिनों राज्यपाल का स्थायी निवास पटना हुआ करता था। राज्यपाल ग्रीष्म ऋतु में या किसी खास मौके पर रांची आते थे और ब्रिटिशि शासनकालीन गवर्नमेंट हाउस (राजभवन) में ठहरते थे। 1976 में 'रांची एक्सप्रेस' को दैनिक में परिवर्तित करने के निर्णय के बाद पत्र के संचालक सीतारामजी राज्यपाल से अनुरोध करने पटना गये। 30 जुलाई को उन्होंने राज्यपाल डा. जगन्नाथ कौशल से, जो पंजाब में एडवोकेट जनरल रह चुके थे, भेंट की। डा. कौशल ने उनका अनुरोध स्वीकार करते हुए कहा कि मैं 15 अगस्त को रांची में झंडोत्तोलन से पांच-छह दिन पहले ही पहुंच जाऊंगा और 14 अगस्त को सायंकाल आपके समारोह में शामिल हो जाऊंगा। राज्यपाल सड़क मार्ग से पटना से रांची आये। रास्ते में वह हजारीबाग में रुके। दस अगस्त को गिद्दी कोल वाशरी में सेन्ट्रल कोल फील्ड्स लिमिटेड के एक कार्यक्रम में वह शामिल हुए जहां उनसे मेरी भेंट हुई। उन्होंने मुझे देखते ही कहा- मैं रांची पहुंच रहा हूं, 14 अगस्त को आपके प्रोग्राम में। यानी उनको कार्यक्रम और उसकी तारीख अच्छी तरह याद थी। लेकिन रांची पहुंचने के बाद स्थिति बदल गयी। जब कार्यक्रम से एक दिन पहले सीताराम जी और मैं राजभवन में उनसे मिलने गये तो उनके प्रधान सचिव ने कहा कि राज्यपाल आपके कार्यक्रम में नहीं आ पायेंगे, उनकी तबीयत ठीक नहीं है।

दाल में कुछ काला महसूस होने पर राजभवन सूत्रों से ही पता चला कि सत्ता पक्ष के कुछ लोग राज्यपाल से भेंट करने आये थे, उन्होंने राज्यपाल को कहा कि आप किस अखबार के कार्यक्रम में जा रहे हैं। यह अखबार तो सत्ता-विरोधी अखबार है। इमरजेंसी में भी इसके पहले वाले तेवर बरकरार हैं।

हमारे देश का यह दुर्भाग्य है कि इमरजेंसी (1975-77) में अनेक लोग इतने खौफजदा हो गये थे कि गवर्नर जैसे पद पर प्रतिष्ठित व्यक्ति भी दबकर रहने में ही अपना कल्याण समझने लगे थे। रांची में एक बड़े पब्लिक सेक्टर के सीएमडी को समारोह की अध्यक्षता के लिए कहा गया तो वह सहमते हुए कुछ आनाकानी के बाद राजी हुए। लेकिन इस आशंका से कि कहीं उन्हें इसका खमियाजा न भुगतना पड़े, हम लोगों ने स्वयं ही अंतिम क्षणों में उन्हें मना कर दिया। उन्होंने राहत की सांस ली। तब हिन्दी के नामी साहित्यकार राधाकृष्ण जी से अध्यक्षता करने का अनुरोध किया गया। उन्होंने साप्ताहिक 'रांची एक्सप्रेस' के उद्घाटन समारोह की भी अध्यक्षता की थी। राधाकृष्णजी ने जेपी आंदोलन के दौरान 1974 में रांची के बारी पार्क में जयप्रकाश नारायण की विशाल जनसभा की भी अध्यक्षता की थी, इसलिए वे बेखौफ राजी हो गये। समारोह में मुख्य वक्ता सुशील कुमार बागे ने, जो कई वर्षों तक झारखंड पार्टी के नेता जयपाल सिंह के सिपहासालार थे, कटाक्ष करते हुए कहा कि हम ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि 'लाट साहब' की तबीयत कल सुबह झंडोत्तोलन के समय तक ठीक हो जाये!

'रांची एक्सप्रेस' पर लागू नहीं!

मजेदार बात यह है कि दैनिक 'रांची एक्सप्रेस' के प्रवेशांक का मुख्य समाचार था : **'आपात स्थिति अनिश्चितकाल तक नहीं- इंदिरा गांधी।'**

इमरजेंसी के दौर में डा. जगन्नाथ मिश्र बिहार के मुख्यमंत्री थे। कांके रोड में मुख्यमंत्री निवास था जहां मुख्यमंत्री आकर ठहरा करते थे। झारखंड बनने के बाद इसे विधानसभाध्यक्ष का निवास बना दिया गया है। उसी वर्ष दस नवम्बर को डा. मिश्र ने अपने निवास पर चार-पांच पत्रकारों को आमंत्रित किया जिनमें मैं भी था। उन्होंने मेरी ओर देखकर मुस्कराते हुए कहा- कुछ लोगों ने आपके खिलाफ शिकायत की है और कहा है कि लगता है 'रांची एक्सप्रेस' पर इमरजेंसी लागू ही नहीं हुई है। इस पर मैंने कहा- मैं जानता हूं किन लोगों ने ऐसी शिकायत की है। इस पर डा. मिश्र ने कहा- हम तो केवल सुन लेते हैं। मैंने पलट कर कहा- बस यही कीजिये।

डा. मिश्र की इस बारे में तारीफ की जायेगी कि चाहे जो हो इमरजेंसी में पत्रकारों से उनके संबंध कुल मिलाकर ठीक-ठाक रहे। उन्होंने प्रेस या पत्रकारों के खिलाफ प्रतिशोध भावना से कोई कार्रवाई नहीं की, भले ही हरियाणा में मुख्यमंत्री बंसीलाल कहर ढाये हुए थे।

इमरजेंसी में सरकार के 'प्रेमपत्र'

'रांची एक्सप्रेस' देश के उन गिने-चुने समाचारपत्रों में से एक था जिसने आपातकाल के अन्तर्गत अखबारों पर सेंसर लगाये जाने पर 'मूक विरोध प्रदर्शन' किया था। पत्र ने आपातस्थिति लागू होने के तुरन्त बाद के अपने संस्करण में मुख्य पृष्ठ पर आपात स्थिति लागू होने का अलग से उल्लेख करते हुए मुख्य स्थान पर संपादकीय टिप्पणी/राजनीतिक समीक्षा का स्थान कोरा छोड़ कर अपना प्रोटेस्ट जाहिर किया था। समाचारपत्रों के इस स्वतंत्र विवेकाधिकार को, जिसे ब्रिटिश हुकूमत ने भी प्रकारान्तर से स्वीकार किया हुआ था, केन्द्रीय सरकार ने एक चुनौती माना और इस पर आपत्ति प्रकट की। सरकार ने कोरा स्थान छोड़ने वाले सभी समाचारपत्रों, जिनकी संख्या उंगलियों पर गिनने लायक थी, के विरुद्ध सख्त कार्रवाई की धमकी दी। लेकिन अंततः उसने इस मामले को चेतावनी तक ही सीमित रखा और कोई कार्रवाई करने का विचार त्याग दिया। शायद इसलिए कि कार्रवाई करने पर सरकार की ही खिल्ली उड़ जाती।

आपातकाल में प्रेस इंफारमेशन ब्यूरो ने 'रांची एक्सप्रेस' के कई समाचारों पर आपत्ति जाहिर की। इनमें एक समाचार फीचर था- **'शेरों द्वारा विधवा गांव की उत्पत्ति'** (10 अगस्त, 1975)। इसमें इस बात का उल्लेख किया गया था कि पश्चिम बंगाल के सुन्दरवन क्षेत्र में आदमखोर शेरों की वृद्धि के साथ ही इस क्षेत्र में विधवाओं की संख्या भी बढ़ती जा रही है। तीन गांवों का नाम देते हुए बताया गया था कि इन्हें लोग 'विधवा गांव' कहते हैं। सरकार के अधिकारियों के रंगीन चश्मे के अनुसार 'रांची एक्सप्रेस' ने एक निर्वाचित संस्थापित सत्ता की क्षमता के प्रति लोगों की आस्था डिगाने का देश-विरोधी काम किया था!!

सरकारी अधिकारियों की दृष्टि में आपत्तिजनक समझे जाने वाले समाचारों पर जारी किये गये 'कारण बताओ' नोटिसों के माकूल जवाब दे दिये जाते रहे। जिन पर और आगे कोई कार्रवाई करना इन फरमा बरदार अधिकारियों को उपयुक्त नहीं लगा। इसी दौर में गोवध के विरुद्ध आचार्य विनोबा भावे के आमरण अनशन की घोषणा का समाचार जारी होते ही रोक देने की हिदायत के बावजूद 'रांची एक्सप्रेस' में उसे छाप दिया और जो कैफियत दी गयी, वह एक प्रकार का चकमा था, उस पर सरकार कुछ कर नहीं पायी।

'रांची एक्सप्रेस' संपादकीय विभाग में इन नोटिसों को विनोदपूर्वक 'प्रेम पत्र' कहा जाता था और अगले 'प्रेम पत्र' की प्रतीक्षा की जाती थी।

वस्तुतः सरकार के ऐसे ही अति उत्साही, चापलूस, कूड़मगज अधिकारियों ने, जिन्हें सरकार के नादान दोस्त कहा जा सकता है, इंदिरा गांधी की सरकार को बदनाम करने और उसका बेड़ा गर्क करने में बड़ी भूमिका निभायी थी।

बाजारवाद और व्यावसायिकता

यह अखबार किसी व्यावसायिक उद्देश्य से आरम्भ नहीं किया गया था। कुछ आदर्शों और मूल्यों को लेकर इसकी स्थापना की गयी थी। जिसके कारण यह जल्द ही यहां की जनता के दिल की धड़कन बन गया। बाद के वर्षों में व्यावहारिक आवश्यकताओं ने 'रांची एक्सप्रेस' को व्यावसायिक बनने पर विवश किया, लेकिन बाजारवाद की वर्तमान प्रवृत्तियों और विकृतियों से स्वयं को दूर रखने के लिए अखबार आज भी संकल्पबद्ध है।

'रांची एक्सप्रेस' के स्वर्ण जयन्ती वर्ष में साल भर 'सुनहरी यादें' स्तंभ से यह जाहिर होता है कि 'रांची एक्सप्रेस' ने पाठकों के साथ अपने रिश्तों को जितना आत्मीय बनाया है वह अपने आप में एक मिसाल है। यह रिश्ता अब दूसरी-तीसरी पीढ़ी के दौर से गुजर रहा है। 'रांची एक्सप्रेस' ने जो भी उपलब्धियां हासिल की हैं वे अनगिनत लोगों के सहयोग से ही संभव हुई हैं।

इस अखबार ने अपनी जीवन-यात्रा में अनेक उतार-चढ़ाव देखे हैं। कोई भी अखबार हमेशा शिखर पर नहीं रह सकता। इसी प्रकार कोई भी अखबार या संस्थान अपनी पुरानी उपलब्धियों के बल पर टिका नहीं रह सकता। अखबार बहुत तेजी से व्यवसाय और फिर उद्योग बनते गये हैं। समाचारपत्र अब एक प्रोडक्ट बन गये हैं। वे देश के जागरूक नागरिक या पाठक बनाने के बजाय ग्राहक बना रहे हैं। आक्रामक मार्केटिंग के इस दौर की गलाकाट स्पर्धा में अपने आदर्शों और मूल्यों पर कायम रहते हुए स्वयं को युगानुरूप ढालने की आवश्यकता महसूस की जा रही है, लेकिन यह काफी जटिल और उलझनपूर्ण प्रक्रिया है।

स्वर्ण जयन्ती के अवसर पर एक संग्रहणीय विशेषांक प्रकाशित किया गया है और एक विशेष समारोह का आयोजन किया जा रहा है। इस अवसर पर हम अपने पाठकों, पत्र विक्रेताओं, लेखकों, विज्ञापनदाताओं और पिछले पचास वर्षों में अखबार से संबद्ध रह चुके और वर्तमान में अखबार से संबद्ध विभिन्न विभागों के कर्मचारियों और मुफस्सिल व अन्य संवाददाताओं के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हैं, जिनके सद्भावपूर्ण सहयोग से हम अपनी लम्बी सेवा यात्रा पर निर्विघ्न भाव से अग्रसर हो रहे हैं।

●●●

देश का लोकप्रिय व गौरवशाली पत्र सिद्ध हो

✍ **अनन्तशयनम आयंगर,** *बिहार के तत्कालीन राज्यपाल*

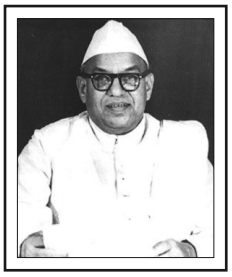

रांची के पत्रकारों द्वारा प्रारम्भ किये गये साप्ताहिक पत्र 'रांची एक्सप्रेस' का उद्घाटन करते हुए मुझे अपार प्रसन्नता हो रही है।

प्रबुद्ध जनमत लोकतंत्र की आत्मा है। लोगों को समय-समय पर जन-जीवन के सभी पहलुओं के बारे में सूचनाएं देने की आवश्यकता होती है। लोगों को सही समाचार दिये जाने चाहिए जिनमें कोई अतिशयोक्ति न हो। साथ ही, किसी कारणवश या स्वार्थवश महत्वपूर्ण मामलों को उनसे छिपाना भी नहीं चाहिए। जहां तक मैं समझता हूं 'रांची एक्सप्रेस' किसी दल या गुट का पत्र नहीं है बल्कि यह एक स्वतंत्र साप्ताहिक है। ऐसा प्रतीत होता है कि पत्रकार इसी प्रकार का ही पत्र चाहते हैं। मुझे विश्वास है कि समय-समय पर वे अपने सभी साधनों का उपयोग करते रहेंगे और ऐसी ख्याति अर्जित करेंगे कि उनके पत्र में जो कुछ प्रकाशित होगा, वह पूर्णतः सत्य होगा। किसी विशेष घटना को लेकर विचारों और निष्कर्षों में मतभेद हो सकता है, लेकिन किसी पत्र की ऐसी स्थिति नहीं होनी चाहिए कि उसमें प्रकाशित समाचारों को चुनौती दी जा सके।

विचारों की अभिव्यक्ति निर्भीक और पक्षपातरहित होनी चाहिए। यदि गलतियों और खामियों की ओर संकेत करना है और उन्हें दुरुस्त करने के लिए तथ्यों को उजागर करना है तो यह काम जरूर किया जाना चाहिए भले ही यह कितना ही अप्रिय और कष्टसाध्य हो। हर पक्ष की विचारधारा को भी पत्र में पूरी स्थान मिलना चाहिए। राज्य से संबंधित ऐसे महत्वपूर्ण मामलों का जो बाहर के लोगों के लिए उपयोगी हो और यहां के लोगों को जानकारी दे सकें, विशेष अध्ययन किया जाना चाहिए। महत्वपूर्ण घटनाओं की जांच-परख करने और उनके संबंध में जानकारी प्राप्त करने के लिए विशेष प्रतिनिधि भेजे जाने चाहिए। संवाद समितियां सामान्य रूप में यह काम तो करती ही हैं, लेकिन महत्वपूर्ण पत्र अपने प्रतिनिधियों को भेजते हैं ताकि वे ऐसी घटनाओं के अधिक से अधिक और तथ्यात्मक ब्योरे प्राप्त कर सकें।

पत्र की भाषा

जहां तक भाषा का प्रश्न है वह आम फहम और संतुलित होनी चाहिए। अच्छी भाषा प्रभावकारी हो सकती है और यथासंभव निन्दात्मक शब्दों अथवा गाली-गलौज का प्रयोग नहीं किया जाना चाहिए। पत्र ऐसा संवेदनशील माध्यम है जिसका सदुपयोग और दुरुपयोग दोनों किया जा सकता है। केवल इसी देश में ही नहीं वरन् अन्य देशों में भी कागज पर छपे हुए शब्दों का अधिक और व्यापक प्रभाव पड़ता है, क्योंकि बोले गये शब्द तो कुछ ही लोगों तक पहुंच पाते हैं। पत्रों में जो कुछ लिखा रहता है उस पर लोग विश्वास करते हैं और आशा करते हैं कि यदि वह सत्य नहीं है तो उसका प्रतिवाद भी प्रकाशित हो। अतः समाचारों के प्रकाशन में बहुत सावधानी की आवश्यकता होती है। स्वार्थी तत्व प्रायः पत्रों का उपयोग दूसरों के भयादोहन के लिए करना चाहते हैं। पत्रों को किसी विशेष पार्टी, ग्रुप या व्यक्ति के हाथों की कठपुतली कदापि नहीं बनना चाहिए चाहे इसके लिए कितने ही प्रकार के प्रलोभनों की तिलांजलि क्यों न देनी पड़े।

बिहार में पंचायत राज लागू किया गया है और अभी पहले दौर में चार जिले उसके अन्तर्गत रखे गये हैं। इसका उद्देश्य लोगों के बीच सत्ता का हस्तान्तरण करना है जो अभी तक केन्द्र सरकार और राज्य के बीच बंटी हुई थी। इस कार्यक्रम का उद्देश्य और अधिक विकेन्द्रीकरण है। प्राचीन भारत ग्राम स्वायत्तता और स्वतंत्र गणतंत्रों के लिए विख्यात था। जो ग्रामीण राज्य की विधानमंडलों में अपने प्रतिनिधि चुनकर भेजने के दायित्व का अच्छी तरह से निर्वहन करते हैं वे निः संदेह किसी एक छोटे गांव की प्रबंध-व्यवस्था बड़ी ही कुशलता से सम्भाल सकते हैं। लोगों में दायित्व की भावना तभी जाग्रत होगी जब वे गांवों के प्रशासन में प्रत्यक्ष रूप में हाथ बंटायेंगे। मुझे विश्वास है कि यह पत्र पंचायती व्यवस्था की प्रगति पर विशेष ध्यान देगा।

दिलचस्प व शिक्षाप्रद

केन्द्र और राज्यों ने बहुत से सार्वजनिक उद्यम स्थापित किये हैं। उनकी प्रगति पर भी निगाह रखनी है। यह राज्य जल और खनिज संसाधनों की दृष्टि से सम्पन्न है, लेकिन उत्तर में बाढ़ और दक्षिण में सूखे के कारण यहां की अधिकांश जनता निर्धन हैं। लघु और मध्यम उद्योगों से मध्य वर्ग और आम लोगों की आर्थिक स्थिति सुधर सकती है। इस राज्य की आर्थिक प्रगति के लिये विशेष सतर्कता की आवश्यकता है। सौभाग्यवश बिहार की आर्थिक स्थिति में सुधार हुआ है। सभी महत्वपूर्ण पत्रों में देश की वित्तीय स्थिति के बारे में पूरे एक पृष्ठ में जानकारी प्रकाशित की जाती है। मुझे विश्वास है कि इस साप्ताहिक में भी वित्त, वाणिज्य और आर्थिक प्रगति के बारे में पर्याप्त जानकारी दी जायेगी। विशेषज्ञों के लिखे हुए अनेक लेख भी प्रकाशित होते रहेंगे। लेखों का दिलचस्प और शिक्षाप्रद होना आवश्यक है।

अपने देश की बढ़ती हुई जनसंख्या को देखते हुए यहां पत्र-पत्रिकाओं की संख्या पर्याप्त नहीं है। 'रांची एक्सप्रेस' के प्रकाशन से इस क्षेत्र में प्रौढ़ शिक्षा के विकास को भी बल मिलेगा। भाषाई पत्रों का भविष्य उज्ज्वल है। मेरी शुभकामना है कि यह पत्र लोकप्रिय हो और बिहार के सर्वप्रमुख पत्रों में से एक हो और चूंकि हिन्दी भारत की राजभाषा है अतः इस पत्र का सारे देश में व्यापक प्रचार-प्रसार व प्रभाव हो।

मुझे इस पत्र का उद्घाटन करने और विशेषकर स्वाधीनता दिवस के अवसर पर इसका उद्घाटन करने में अत्यधिक प्रसन्नता हो रही है। स्वतंत्रता तो निःसंदेह प्राप्त हो चुकी है, लेकिन स्वतंत्रता और लोकतंत्र को बनाये रखना और उस स्वतंत्रता को आर्थिक स्वरूप प्रदान करना आज के युग की सबसे बड़ी आवश्यकता है। ये सभी ऐसे विषय हैं जिन्हें इस पत्र में प्रमुखता मिलनी चाहिए। मैं इसकी पूर्ण सफलता की कामना करता हूं।

('रांची एक्सप्रेस' के उद्घाटन के अवसर पर व्यक्त किये गये उद्गार - 14 अगस्त, 1963)

स्वतंत्र और निर्भीक प्रेस लोकतंत्र का आधार

✍ **अटल बिहारी वाजपेयी,** *तत्कालीन विदेश मंत्री*

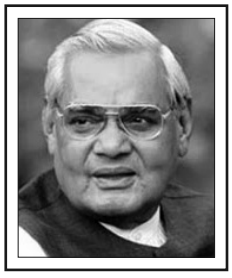

मैं 'रांची एक्सप्रेस' से इसके जन्मकाल से ही संबद्ध रहा हूं। इस पत्र से मेरा पुराना रिश्ता है। इसलिए जब मुझे रोटरी मशीन पर इसकी छपाई आरंभ होने के अवसर पर इस समारोह में आने के लिए कहा गया तो मैं तुरंत राजी हो गया।

मंत्री नहीं पत्रकार के रूप में

हम लोग बड़े कर्मकांडी हैं। हर समारोह को कर्मकांड देने की कला कोई भारतीयों से सीखे। एक रोटरी मशीन का उद्घाटन करना है तो उसके लिए एक अदद मंत्री की जरूरत है। पर क्षमा करें मैं यहां एक मंत्री के रूप में नहीं एक भूतपूर्व पत्रकार के रूप में आया हूं (करतल ध्वनि)। 'रांची एक्सप्रेस' के एक पाठक के रूप में आया हूं।

हमें पत्रकारों, साहित्यकारों और कलाकारों का सम्मान करना चाहिए। इन्हें मंच पर बैठाओ और मंत्री को जनता के बीच बैठाओ। मंत्री को इतना ऊपर न उठाओ कि जब उसे नीचे लाना पड़े तो उसे चोट लगे (करतल ध्वनि)।

मैंने अपने पत्रकारिता जीवन में बहुत कुछ सीखा। स्व. दीनदयाल उपाध्याय मेरे मार्गदर्शक और गुरु थे। मुझे लखनऊ से प्रकाशित 'पांचजन्य' साप्ताहिक और 'राष्ट्रधर्म' मासिक के आरंभिक दौर में संपादन का कार्यभार सौंपा गया। मैं इन पत्रों के जन्म की प्रसव-पीड़ा और उत्तरोत्तर उत्पति का साक्षी रहा। स्व. दीनदयाल जी के मार्गदर्शन और सक्रिय भागीदारी में उत्तमोत्तम सामग्री के कारण इन पत्रों की लोकप्रियता बढ़ती गयी। अल्प साधनों के कारण हमें कई मोर्चे संभालने पड़ते

थे। दीनदयाल जी स्वयं प्रेस का सब काम सीखते रहे और मुझे भी सिखाते रहे। वह स्वयं कम्पोजिंग करते थे, और उन्होंने मुझे भी कंपोजिंग सिखा दी, जिससे कंपोजिटरों के न आने पर काम में रूकावट न हो। हम देर रात तक जागकर संपादन और कंपोजिंग के कार्य करते थे। हम गैली प्रूफ भी देखते थे, जरूरत पड़ने पर मशीन भी चलाते थे, पत्र के बंडल भी बांधते थे। हम लोगों के सामने अनेक दिक्कते थीं, कभी-कभी हम कार्यालय में जमीन पर चटाई बिछा कर सो जाते थे।

समाचार पत्रों का महत्व

राष्ट्रजीवन में समाचार पत्रों का बहुत महत्व है। स्वतंत्र और निर्भीक प्रेस ही लोकतंत्र का आधार है। समाचार पत्रों का कार्य सत्य की रक्षा करना तथा परिवर्तन की सही दिशा में योगदान करना है। पत्रकारिता एक मिशन है। समाचारपत्र अपनी अपरिमित शक्ति का सदुपयोग राष्ट्रनिर्माण एवं कल्याण में करें तो वे राष्ट्र के अभ्युत्थान में महत्वपूर्ण योगदान कर सकते हैं।... ... ... मैं 'रांची एक्सप्रेस' की निरंतर प्रगति की कामना करता हूं। यह 'एक्सप्रेस' है पर रुक-रुक कर चलेगी, नगरों और कस्बों से खबरें लायेगी और व्यापक क्षेत्रों तक इसकी पहुंच होगी।

(19 मार्च, 1978 को रांची में 'रांची एक्सप्रेस' की रोटरी मशीन के उद्घाटन अवसर पर दिये गये भाषण के अंश।)

श्री वाजपेयी ने महात्मा गांधी नगर भवन के खचाखच भरे हॉल में अपने 50 मिनट के ऐतिहासिक भाषण में पत्रकारिता और प्रेस की स्वाधीनता के अलावा अन्य विभिन्न विषयों और प्रसंगों पर भी अपने विचार व्यक्त किए। उनके भाषण के कुछ चुनिंदा अंश पृष्ठ ... पर प्रस्तुत किए गए हैं।)

वाजपेयी के उद्गार

- कितने कष्ट-कंटकों से स्थानीयता का कारवां गुजरा, नयी पीढ़ी को नहीं मालूम।
- जितना हमसे आशा की जाती थी उतना हमने नहीं किया। लेकिन हमारी उपलब्धि संतोषजनक नहीं तो निराशाजनक भी नहीं है।
- लोकतंत्र मर्यादा का नाम है। लोकतंत्र के चारों ओर लक्ष्मण-रेखा खींची हुई है, अगर उस रेखा का उल्लंघन किया जाएगा तो लोकतंत्र की सीता को कोई रावण अवश्य उठा ले जाएगा।
- मंत्री को इतना ऊपर न उठाओ कि जब नीचे लाना पड़े तो उसे चोट लगे।
- लोकतंत्र की चक्की धीमी चलती है, परन्तु बारीक पीसती है।
- मंत्री अपनी गद्दी पर बैठकर सोचता है- मैं कुछ हूं, व्यापारी अपनी गद्दी पर बैठकर सोचता है- मैं कुछ हूं। अफसर अपनी कुर्सी पर बैठकर सोचता है- मैं कुछ हूं। पर अगाध, विशाल समुद्र के तट पर जाओ! विस्तृत, उन्नत हिमालय की तराई में जाकर खड़े हो! तुम्हारे मुख से यही निकलेगा- मैं नहीं, तू ही है! तू ही है!
- समुद्र की उत्ताल तरंगों को जाकर देखो, समुद्र के किनारे खड़े होकर पूर्णिमा के चांद की शोभा निहारो, अनंत आकाश में चमकते सितारों को देखो, तब तुम्हें लगेगा कि इस अखिल ब्रह्माण्ड में तुम्हारी क्या हस्ती है!!!
- बुढ़ापे में पंडित जवाहरलाल नेहरू को मैंने 'ओम् नमः शिवाय, ओम् नमः शिवाय' का जाप करते देखा। जवानी में जिस 'चीज' को उनकी बुद्धि ने स्वीकार नहीं किया, बुढ़ापे में उसी 'चीज' को उनके हृदय ने स्वीकार कर लिया। जवानी में जो ईश्वर और धर्म को नहीं मानता, बुढ़ापे में मानने लगता है।
- मैं ऐसे लोगों को नहीं मानता जो 'ओम नमः शिवाय' मंत्र भी जपते हैं और टेलीफोन पर बात भी करते रहते हैं- ओम नमः शिवाय- बेच दो, ओम नमः शिवाय-खरीद लो.....।'
- हमारी बहनों ने वेद-ऋचाएं लिखीं और उन्हें वेद पढ़ने से मना कर दिया!! भगवान और भक्त आमने-सामने खड़े हैं और मन्दिर का दरवाजा बंद कर दिया!!
- लोग हमसे पूछते हैं- आप रूस की तरफ जा रहे हैं या अमेरिका की तरफ? और मैं कहता हूं - हम किधर भी नहीं जा रहे, वे दोनों हमारी तरफ आ रहे हैं। जितनी हमसे अपेक्षा की जाती थी, उतना हम नहीं कर सके। हमारी उपलब्धियां संतोषजनक नहीं हैं, लेकिन निराशाजनक भी नहीं।
- तीस साल में कुछ हुआ है। एक साल में भी कुछ हुआ है। हमने एक ऐसी पीढ़ी तैयार की है, जिसने विज्ञान और

टेक्नॉलाजी पर भुत्व कायम किया है।

- हमें कुछ कर दिखाने की तमन्ना है, और अगर नहीं कर सका तो निकल जाने की तमन्ना है।
- हम बच्चे हैं, हम कच्चे हैं पर हम सच्चे हैं।
- साहित्यकारों का सम्मान करो। कलाकारों का सम्मान करो। मंत्री को जनता (श्रोताओं) के साथ और उन्हें मंच पर बिठाओ।
- हम आज मंत्री हैं कल नहीं रहेंगे। जिन्होंने हमेशा 'मंत्री' बने रहने की कोशिश की, उनका परिणाम आपने देख लिया।
- राजनीति के साथ रोटी जुड़ी है। लेकिन फिर भी राजनीति जीवन का एक हिस्सा है, संपूर्ण जीवन नहीं।
- हमें छोटी-छोटी बातों में नहीं पड़ना चाहिए। दुनिया को हम कहते हैं-शान्ति, शान्ति! और क्या अपनी समस्याओं को, मनमुटाव को सड़क पर ले जायें? क्या विधायक सदन में बेंच पर खड़े हो जायें?
- वाजपेयी रांची आया, सब कुछ शान्तिपूर्ण सम्पन्न हो गया, यह खबर नहीं है। वाजपेयी को काले झंडे दिखाये गये, यह खबर है। निर्माण खबर नहीं है, काला झंडा खबर है, सभा में गड़बड़ी खबर है। पर मैं पत्रकारों को दोष नहीं देता हूं। उन्हें अपना अखबार बेचना है। और अखबार की बिक्री के लिए कुछ चटपटी खबरें चाहिए। पर ज्यादा चटपटे खाते-खाते स्वाद बिगड़ जाता है।

- अटल बिहारी वाजपेयी

(19 मार्च 1978 को 'रांची एक्सप्रेस' की रोटरी मशीन के अवसर पर आयोजित समारोह में दिये भाषण के कुछ महत्वपूर्ण अंश)

हिन्दी के क्षेत्रीय पत्रों का महत्व

✍ जय प्रकाश नारायण

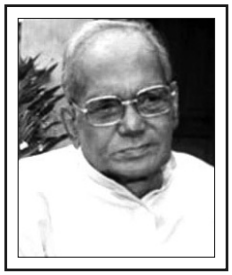

हाल के वर्षों में हिन्दी में क्षेत्रीय स्तर पर पत्र-पत्रिकाओं का विकास पत्रकारिता के साथ हिन्दी के बढ़ते महत्व को उजागर करता है। वस्तुत: पत्रकारिता का भविष्य क्षेत्रीय और भाषाई पत्र-पत्रिकाओं पर ही निर्भर है। खेद की बात है कि आजादी के इतने वर्षों के बाद भी हिन्दी भाषा को अधिक महत्व नहीं दिया जाता। हर कोई अंग्रेजी के महत्व की बात करता है जबकि हिन्दी तथा भाषाई पत्रों के माध्यम से ही हम जन-जन से जुड़ सकते हैं।

(दैनिक 'रांची एक्सप्रेस' के सहयोगी प्रकाशन 'जय मातृभूमि' साप्ताहिक के पटना में उद्घाटन अवसर पर व्यक्त विचार, 8 अक्तूबर 1978)

क्षेत्रीय पत्रों का विकास एक शुभ लक्षण

✍ **राजेन्द्र माथुर,** *प्रधान संपादक 'नवभारत टाइम्स'*

एक क्षेत्रीय समाचारपत्र के रूप में 'रांची एक्सप्रेस' की उत्तरोत्तर प्रगति और रजत जयंती का एक ऐतिहासिक महत्व है। क्षेत्रीय पत्रों का विकास एक शुभ लक्षण है। वस्तुत: एक क्षेत्रीय पत्र ही अपने क्षेत्र विशेष के लोगों की भावनाओं, उनकी आशाओं-आकांक्षाओं, समस्याओं और सांस्कृतिक विशिष्टताओं को प्रतिबिंबित कर सकता है।

भारतीय भाषाओं के अखबारों में स्थानीय विशिष्टता झलकती है। उनमें स्थानीय यथार्थ समाहित होता है जो महानगरों से निकलने वाले अखबारों में नहीं दिखाई देता। वस्तुत: राष्ट्रीय और स्थानीय अखबारों के निर्धारण का मापदंड ही गलत है। सही अर्थों में हिन्दी का कोई भी अखबार राष्ट्रीय नहीं है। क्षेत्रीय स्तर पर पत्र-पत्रिकाओं के प्रकाशन में तीव्रता लोक चेतना की जागृति का द्योतक है। हिन्दी पत्रकारों को अपने किसी भी सहयोगी की सफलता को पूरे हिन्दी समाज की सफलता के रूप में देखना चाहिए तभी एक महान राष्ट्र का पुनर्निर्माण संभव हो सकता है।

कोई भी उत्कृष्टता प्रतिस्पर्धी नहीं हो सकती। उत्कृष्टता से राष्ट्र, समाज, देश व संस्कृति की समुन्नति होती है।

किसी अखबार का लंबी अवधि तक निर्विघ्न प्रकाशित होते रहना और तिस पर स्थापना काल से लेकर 25 वर्ष तक एक ही श्रमजीवी पत्रकार के संपादकीय नेतृत्व में चलते रहना अपने आप में एक बड़ी उपलब्धि है। इसके लिए मैं 'रांची एक्सप्रेस' के प्रबंधन को बधाई देता हूं।

('रांची एक्सप्रेस' के रजत जयंती समारोह में विशिष्ट अतिथि के रूप में व्यक्त उद्गार के अंश।)

पत्रकारिता में सराहनीय स्थान

✍ **दीनानाथ झा,** *पूर्व संपादक, इंडियन नेशन*

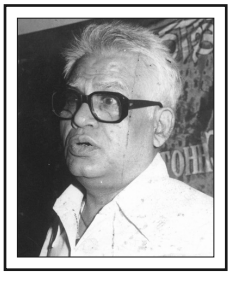

'रांची एक्सप्रेस' ने बिहार, विशेषता दक्षिण बिहार की पत्रकारिता में जो स्थान बना लिया है, वह सराहनीय है। आज क्षेत्रीय अखबारों के समक्ष अनेक समस्याएं हैं। इसके बावजूद इन अखबारों को व्यापक जनसमर्थन मिल रहा है तो इसलिये कि वे जमीन से जुड़े हैं और जनता की नब्ज पहचानते हैं।

('रांची एक्सप्रेस' के रजत जयंती समारोह में अध्यक्षीय उद्गार)

अपने दायित्व में सफल क्षेत्रीय अखबार

✍ **एस. सहाय,** *पूर्व संपादक द स्टेटसमैन।*

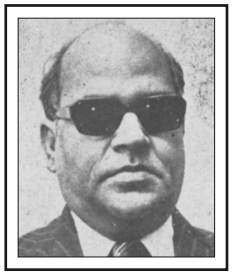

रांची मेरा अपना नगर है। पत्रकारिता के अपने आरंभिक दौर में मैं पटना के अंग्रेजी दैनिक इंडियन नेशन का रांची में विशेष संवाददाता था। 'रांची एक्सप्रेस' नाम में मुझे रांची के प्रति अपनत्व का बोध होता है। जब मुझे 'रांची एक्सप्रेस' के रजत जयंती समारोह में मुख्य अतिथि के तौर पर रांची आने का आमंत्रण दिया गया तो मुझे बहुत अच्छा लगा। अखबार का यह रजत जयंती वर्ष है, जानकर खुशी हुई।

आज के दौर में क्षेत्रीय अखबारों का महत्व तेजी से बढ़ रहा है। वस्तुतः अखबारों का भविष्य क्षेत्रीय अखबारों पर ही निर्भर है। इसलिये इनकी जिम्मेदारियां भी बढ़ गयी हैं। समाचार-पत्रों में आजादी का संबंध केवल प्रेस, प्रबंधन या संपादक तक ही सीमित नहीं है, इसका सीधा संबंध जनता के जानने के अधिकार से संबंधित है। इसलिए प्रेस को जनता के प्रति जवाबदेह होना चाहिये। क्षेत्रीय अखबार अपनी जिम्मेदारी के निर्वाह में सफल हुए हैं और इसका प्रमाण मानहानि विधेयक के विरुद्ध छिड़े आंदोलन के समय मिला जिसमें क्षेत्रीय पत्रों की महत्वपूर्ण भूमिका रही।

('रांची एक्सप्रेस' के रजत जयंती समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में व्यक्त उद्‌गार)

झारखंड में 'रांची एक्सप्रेस' की भूमिका

✍ **भैरो सिंह शेखावत,** *तत्कालीन उपराष्ट्रपति।*

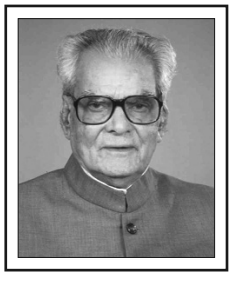

'रांची एक्सप्रेस' ने झारखंड की समस्याओं और उनके समाधान के प्रकाशन की दिशा में अच्छा प्रयास किया है। मैं उम्मीद करता हूं कि यह सिलसिला भविष्य में भी जारी रहेगा। इससे अखबार की प्रतिष्ठा बढ़ेगी और देश के प्रति जो उत्तरदायित्व है वह पूरा होगा।

अखबारों का दायित्व है कि देश की समस्याओं को उजागर करें और जनता को सावधान करें। भारतीय अखबारों ने संकट के समय हमेशा जनता का साथ दिया। आपातकालके समय तमाम बंदिशों के बाद भी अखबारों ने आपातकाल के खिलाफ लिखा, वातावरण बनाया और आपातकाल हटा। इसी तरह आजादी के आंदोलन के समय बहुत ज्यादा अखबार तो नहीं निकलते थे, लेकिन अंग्रेजों के खिलाफ अखबारों ने संघर्ष किया, स्वतंत्रता की भावना पैदा की और देश को गुलामी से मुक्ति दिलायी।

('रांची एक्सप्रेस' की 40वीं वर्षगांठ पर आयोजित समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में उद्‌गार 18 नवम्बर 2003)

पत्रकारिता की आधाशिला

✍ **वेदप्रकाश मारवाह,** *तत्कालीन राज्यपाल, झारखंड*

'रांची एक्सप्रेस' ने झारखंड में पत्रकारिता की नींव रखी और एक नेतृत्व दिया। नये राज्य में उसे अपनी भूमिका को और भी कारगर बनाना होगा। हिंदी समाचार-पत्रों का स्तर अंग्रेजी समाचार पत्रों में कम नहीं- बल्कि कई मायनों में ऊंचा है। हिंदी समाचार पत्रों ने समाज को नयी दिशा दी है।

('रांची एक्सप्रेस' की 40वीं वर्षगांठ पर आयोजित समारोह में अध्यक्षीय उद्‌गार।)

अपने पुराने गौरव पर लौटे

✍ **अरुण शौरी,** *वरिष्ठ पत्रकार और पूर्व केंद्रीय मंत्री*

सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक घटनाओं-आंदोलनों को नजदीक से देखने-जांचने-परखने में 'रांची एक्सप्रेस' की निष्पक्षता और विश्वसनीयता तारीफ के लायक रही है। मीडिया को पूरी गंभीरता के साथ अपनी जिम्मेदारियों का निवर्हन करना चाहिये। मीडिया का काम लोगों को सही-सही सूचनाएं देना, उन्हें शिक्षित करना और गंभीर मुद्दों को उठाना है।

खेद की बात है कि मीडिया में व्यवसायीकरण शुरू हो गया है और इससे पत्रकारिता को धक्का लगा है। अखबार में अच्छे लेख हों, अच्छे विश्लेषण हों, जिन्हें पढ़ने के लिये पाठक मजबूर हो जायें तभी अखबार का आस्तत्व बचा रहेगा। अन्यथा हम डूब जायेंगे।... मैं इस अवसर पर कामना करता हूं कि पांच वर्ष बाद स्वर्णजयंती के अवसर पर 'रांची एक्सप्रेस' अपने पुराने गौरव पर पुनः लौट आये।

('रांची एक्सप्रेस' के 45वीं वर्षगांठ के समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में व्यक्त उद्‌गार)

क्या भूलूं, क्या याद करूं

✍ **डा. जगन्नाथ मिश्र,** *(पूर्व मुख्यमंत्री बिहार/पूर्व केन्द्रीय मंत्री भारत सरकार)*

समय किस प्रकार गुजर जाता है पता ही नहीं चलता। 'रांची एक्सप्रेस' 50 वर्ष का हो चला, लेकिन यह बूढ़ा नहीं कहलायेगा। इसके तेवर अब भी वैसे ही हैं, जैसे पहले थे। बिहार की अस्मिता की लड़ाई मं 'रांची एक्सप्रेस' के योगदान को भूला नहीं जा सकता। एकीकृत बिहार के वक्त 'रांची एक्सप्रेस' दक्षिण बिहार का मुखर पत्र रहा। यूं तो इस क्षेत्र से कई अन्य अखबार निकलते रहे, लेकिन 'रांची एक्सप्रेस' के मुकाबले खड़ा नहीं हो सके। पत्र की नीति या विचारधारा भले ही किसी संगठन या पार्टी से मिलती-जुलती हो, लेकिन खबरों के प्रकाशन में कभी पक्षपात नहीं। यही खासियत रही इस पत्र की। रांची से बड़े-बड़े घरानों के पत्रों के प्रकाशन के बावजूद यह अब भी मार्केट में टिका है, बड़ी मजबूती के साथ टिका है।

बिहार प्रेस बिल का विरोध

पत्रकारिता से मेरा पुराना लगाव रहा है, इसलिए अखबार-प्रबंधन और पत्रकारों की पीड़ा से मैं पूरी तरह अवगत हूं। 'रांची एक्सप्रेस' ने इन 50 वर्षों के भीतर कई उतार-चढ़ाव देखे, लेकिन अपनी नीतियों से नहीं डिगा। इसका श्रेय अगर किसी को जाता है तो इसके संस्थापक सम्पादक श्री बलबीर दत्त को। मैं तब के बिहार का तीन बार मुख्यमंत्री रहा। मेरे तत्कालीन सहयोगियों करमचंद भगत, टी. मुचिराम मुंडा, इन्द्रनाथ भगत, रामरतन राम आदि सरकारी फैसलों को 'रांची एक्सप्रेस' में तत्काल प्रेषण और प्रकाशन के लिए तत्पर रहते थे। इससे पत्र की लोकप्रियता का पता चलता है। बहुचर्चित बिहार प्रेस बिल के विरोध में तब के दक्षिण बिहार के पत्र 'रांची एक्सप्रेस' के नेतृत्व में एकजुट थे, पहाड़ की तरह अडिग थे। परन्तु मेरी व्यक्तिगत आलोचना एवं आक्षेप से परे। सन् '74 के जेपी आन्दोलन के बाद अप्रैल, 1975 से अप्रैल 1977 तक मैं मुख्यमंत्री रहा। राजनीति में अनुकूल और प्रतिकूल परिस्थितियां आती रहती हैं। आलोचनाएं हुई जमकर हुई, पर मैं विचलित नहीं हुआ। सूबे का मुखिया होने के नाते मैंने अपनी जिम्मेवारियां का कुशलतापूर्वक निर्वहन किया।

लेकिन इसके उलट सन् '77 के चुनाव में मिली पराजय के बाद जब 1978 में मैं बिहार विधानसभा में विरोधी दल का नेता बना, 'रांची एक्सप्रेस' ने मेरी खबरों को कभी दरकिनार नहीं किया। यही है निष्पक्ष पत्रकारिता जिसमें 'रांची एक्सप्रेस' खरा उतरता है। मुझे याद है जब मेरे नेतृत्व में गठित बिहार जन कांग्रेस की कई रैलियां तब के दक्षिण बिहार के कई क्षेत्रों में हुई थी 'रांची एक्सप्रेस' ने इसका भरपूर कवरेज किया और बलबीर जी ने सम्पादकीय टिप्पणी प्रकाशित कर हौसला अफजाई भी की। अब के छोटानागपुर की समस्याओं को उजागर करने में 'रांची एक्सप्रेस' कभी पीछे नहीं रहा। चाहे वह विस्थापन का मसला हो या खनिजों की रायल्टी में वृद्धि का। आदिवासियों को महाजनों और ठीकेदारों से मुक्ति का सवाल हो या वनवासियों के परम्परागत रीति-रिवाजों पर आधारित पर्व-त्योहारों को हाईलाइट करने का। मेरी सरकार ने भी ऐसे ही कुछ कार्यक्रम बिहार विधानमंडल के संयुक्त अधिवेशन में महामहिम राज्यपाल के अभिभाषण के क्रम 18 जनवरी, 1990 को करने की घोषणा की थी।

पत्रकारों की पाठशाला

'रांची एक्सप्रेस' से जुड़ी कई सुनहरी यादें हैं। समझ नहीं आता क्या भूलूं और क्या याद करूं। यादों की एक लम्बी फेहरिस्त है। मुझे यह कहने में कोई हिचक नहीं कि 'रांची एक्सप्रेस' पत्रकारों की एक ऐसी पाठशाला है जहां से एक से बढ़कर एक पत्रकार निकले और आज देश के विभिन्न भागों में बड़े-बड़े अखबारों में कार्यरत हैं। यह जानकारी मेरे लिए दुःखद है कि पत्र प्रतिस्पर्द्धा की दौड़ में पिछड़ रहा है। यह अच्छी बात नहीं होगी। पत्र संचालकों को चाहिए कि वे या तो इसकी नये सिरे से 'रिलांचिंग' करें या किसी अच्छे फ्रेंचाइजर को देकर 'रांची एक्सप्रेस' की अलख को जलाये रखने में अपनी महती भूमिका अदा करें। 'रांची एक्सप्रेस' झारखंड के मिट्टी-पानी से सना अखबार है। बुलंदिया छूने में इसे देर नहीं लगेगी। पत्र शतायु हो यही कामना है।

अपनी अलग पहचान कायम रखनी होगी

✍ **कड़िया मुंडा** (सांसद एवं लोक सभा उपाध्यक्ष)

'रांची एक्सप्रेस' का प्रकाशन तब शुरू हुआ था जब देश को आजाद हुए 16 साल हुए थे। रांची एक छोटा नगर था। वैसे समय में झारखंड में अखबारी जगत कोरे कागज के समान था। तब 'रांची एक्सप्रेस' ने सिद्धान्तों, विचारों, इरादों एवं भावनाओं के साथ पत्रकारिता की नींव डाली। इसने लोगों की आदतों में अखबार पढ़ना शामिल करवाया। यही इस समाचारपत्र की ताकत है। 'रांची एक्सप्रेस' ने राष्ट्रवादी भावना, देशभक्ति और समाज के प्रति सच्चे अर्थों में सोचने का हौसला जगाया।

लेकिन बाद में स्थितियां-परिस्थितियां बदलीं। हर क्षेत्र में मूल्यों का ह्रास हुआ और अखबारी व्यवसाय में करोड़पतियों-अरबपतियों का बोलबाला बढ़ा। इधर पत्रकारिता जनसेवा, राष्ट्रवादिता आदि की अभिव्यक्ति के बजाय बाजारवाद, उपभोक्तावाद, भौतिकवाद आदि का शिकार बनने लगी। पहले जहां लोग अपने सिद्धान्तों की डोर को सख्ती से थामकर पत्रकारिता में आते थे वहीं बाद के दिनों में बात-बेबात वे समझौतावादी बन गये।

इस अखबार की सबसे बड़ी पूंजी इसके प्रधान संपादक बलबीर दत्त हैं। उन्हें जब से देख रहा हूं वे बिल्कुल बदले नहीं हैं। वह बिल्कुल वैसे ही हैं जो आज से वर्षों पहले थे। झारखंड में पत्रकारिता की उन्होंने न केवल बुनियाद रखी बल्कि बार-बार उन्होंने रास्ता भी दिखाया है। झारखंड के संदर्भ में उनकी समझ, सोच और नजरिया बहुत उत्साहवर्द्धक और सूझबूझपूर्ण है। बदले माहौल में 'रांची एक्सप्रेस' को उन उपायों और रास्तों की खोज करनी चाहिए जिनपर आगे बढ़कर पत्रकारिता की विकृतियों का सामना किया जा सके। इसके लिए 'रांची एक्सप्रेस' के प्रबंधन को कठोर निर्णय लेते हुए समाज की अपेक्षाओं तथा पत्रकारिता के नये दायित्व और स्वरूप को भी समझना होगा। स्वर्ण जयंती वर्ष में ठोस निर्णय लेकर तेजी से आगे बढ़ने की जरूरत है रांची एक्सप्रेस को।

'रांची एक्सप्रेस' को अपनी अलग पहचान बनाये रखनी होगी और नये संदर्भ में अपनी नयी पहचान कायम करनी होगी।

●●●

रांची एक्सप्रेस ने पत्रकारिता की आधारभूमि तैयार की

✍ **डा.श्रवण कुमार गोस्वामी** *(वरिष्ठ साहित्यकार)*

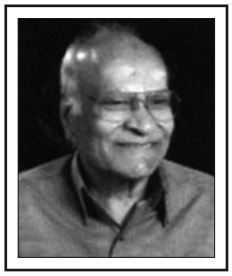

रांची एक्सप्रेस ने रांची और झारखंड के लोगों में न केवल अखबार पढ़ने की आदत डाली बल्कि, देश-दुनिया के संदर्भ में उनकी जागरूकता बढ़ायी, एक रुझान उत्पन्न किया। एक अखबार के मौलिक धर्म और कर्त्तव्य से कहीं आगे बढ़कर इसने अनेक लोगों को जहां पत्रकारिता सिखायी वहीं दूसरी ओर देश-दुनिया की गतिविधियों को अपने पन्नों में समेटकर बिहार व झारखंड के लोगों को बताया कि हम सभी को आगे बढ़ने का उतना ही अधिकार है जितना शेष दुनिया के लोगों का। इस अखबार ने महत्वाकांक्षी लोगों के सपनों और अरमानों में पंख लगाये। यह इसकी सबसे बड़ी उपलब्धि है। आज रांची एक्सप्रेस में पत्रकारिता की एबीसी सीखकर निकले लोग भारत और दुनिया के हर कोने में मिलेंगे। ऐसी शानदार उपलब्धि के साथ अपने 50वें वर्ष में प्रवेश करते वक्त रांची एक्सप्रेस की प्रशंसा, शब्दो से परे हैं। ऐसी उपलब्धियां के साथ 50वें वर्ष में प्रवेश करनेवाले अखबार ऊंगलियों पर गिने जाने लायक हैं। जबकि झारखंड में तो यह निर्विवाद रूप में ऐसी अकेला अखबार है।

1963 में रांची में कोलकत्ता के विश्वमित्र, सन्मार्ग, दैनिक लोकमान्य, जैसे समाचार पत्र सुबह 9 बजे के बाद मिलते थे जबकि पटना के आर्यावत, प्रदीप, इंडियन नेशनल, सर्चलाईट आदि शाम 5 बजे के बाद। समाचारों के मामले में रांची व झारखंड की उनके बड़ी उपेक्षा होती थी। उसी दौर में रांची एक्सप्रेस का जन्म हुआ। सीताराम मारू जी ने हौसला दिखाया और उन्हें बलबीर दत्त जैसे सुयोग्य संपादक का संबल मिला। तब साधनों के अभाव के बावजूद पहले साप्ताहिक और बाद में दैनिक के रूप में रांची एक्सप्रेस ने अनेक कीर्तिमान गढ़े। आज भले ही औद्योगिक घराने व अखबारी प्रबंधन के महारथियों की नजर में रांची एवं झारखंड देश के उर्वर क्षेत्रों में से एक हो पर इसकी आधार भूमि यदि तैयार करने का सारा श्रेय रांची एक्सप्रेस को ही जाता है। यह समाचार पत्र अनेक परेशानियों से दो चार होकर आगे बढ़ा। रांची एक्सप्रेस को बिहार का पहला फोटो कंपोजिंग अखबार होने का भी श्रेय है। तब वरिष्ठ अधिकारियों राजनीतिक, नेताओं, व्यापारियों प्रोफेशनल लोगों किसानों, छात्र-छात्राओं, गृहणियों से लेकर मजदूरों-रिक्शा चालकों तक के बीच रांची एक्सप्रेस की तूती बोलती थी।

पिछले 32 वर्षों से प्रदान किये जा रहे राधाकृष्ण साहित्यिक पुरस्कार ने रांची एक्सप्रेस की गरिमा बढ़ायी। रांची एक्सप्रेस द्वारा न केवल अपने पाठकों बल्कि आम लोगों की सेवा करने की लंबी परंपरा है, अनोखी कहानी है। 'रांची एक्सप्रेस' अब तक अपेक्षाओं पर खरा प्रमाणित हुआ है लेकिन नयी परिस्थितियों में पाठको व समाज की जरूरतों के मद्देनजर स्वयं को निरंतर अपग्रेड करते हुए आगे बढ़ते रहने की जरूरत है। यही वक्त का तकाजा है।

●●●

छायाकार ने अटलजी को कराया इंतजार!

✍ **अशोक नागपाल,** (व्यवसायी, समाजसेवी /मानद सचिव रांची नागरिक समिति)

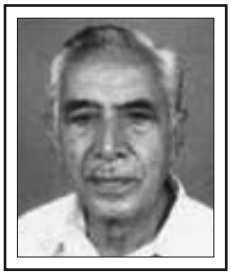

'रांची एक्सप्रेस' की शुरुआत 1963 में हुई। एक छोटा सा पौधा बाद में विशाल वटवृक्ष बन गया। जब 'रांची एक्सप्रेस' की शुरुआत की गयी थी उस समय पूरे छोटानागपुर का अपना कोई समाचारपत्र नहीं था।

मुझे याद है रांची के लोगों को पटना से निकलने वाले दैनिक 'आर्यावर्त' तथा 'प्रदीप' का इंतजार करना पड़ता था। लेकिन इन समाचारपत्रों में रांची तथा आसपास की समाचार नहीं के बराबर होने से शहर या आसपास की घटनाओं की जानकारी नहीं मिल पाती थी। पाठकों को राष्ट्रीय एवं प्रांतीय समाचारों के साथ स्थानीय स्तर पर रोज-रोज के समाचारों की भी चाह होती थी, जिसे 'रांची एक्सप्रेस' ने साप्ताहिक के बाद दैनिक के रूप में प्रकाशित होकर पूरा किया। वैसे तो लोग साप्ताहिक का भी इंतजार करते थे, इसकी पृष्ठ संख्या 16 हो गयी थी और इसमें काफी स्थानीय व क्षेत्रीय समाचार रहते थे।

'रांची एक्सप्रेस' की चाहत रांची के लोगों को ही नहीं गुमला, लोहरदगा, जमशेदपुर, रामगढ़, हजारीबाग, चास, बोकारो, धनबाद, डालटनगंज, चाईबासा, चक्रधरपुर के लोगों की भी थी। इसे वे अपना अखबार मानते थे।

बल्ब फ्यूज़!

यहां मैं एक बात बताना चाहता हूं कि 'रांची एक्सप्रेस' ने ही रांची तथा आसपास के नगरों के अनेक लोगों को अखबार पढ़ने की आदत डलवायी। यहां के हिन्दू-मुस्लिम आज भी कहते हैं कि उन्हें अखबार पढ़ना सिखाया 'रांची एक्सप्रेस' ने। उन दिनों छपाई का आधुनिक तरीका नहीं था, समाचारपत्र छापने के लिये बिजली का होना तो आवश्यक था ही, पर रांची में बिजली हमेशा उपलब्ध नहीं रहती थी। इस लिये कभी-कभी साप्ताहिक से लेकर दैनिक तक के छपने में देरी हो जाती थी। इस समाचारपत्र से मेरा एक पारिवारिक रिश्ता रहा है। शुरू-शुरू में मैं तथा मेरे एक सहपाठी श्री रामजी लाल शारदा मिलकर 50-50 प्रतियां रोज रांची कालेज के कैम्पस में बेचा करते थे तथा उसकी राशि स्व. सीताराम मारू के पास जमा कराते थे। तब श्री मारू बहुत खुश होते थे। स्व. मारूजी हमेशा श्री बलबीर दत्त से कहा करते थे हमारे तो इस प्रकार के पाठक-हॉकरों के कारण ही अखबार ऊंचाइयों पर पहुंचा है। मैं शुरुआती समय से 'रांची एक्सप्रेस' से जुड़ा रहा हूं। मैंने तो कलम पकड़ना भी 'रांची एक्सप्रेस' से ही सीखा। मुझे अखबारों में लिखना सिखाया सम्पादक श्री बलबीर दत्त तथा वरिष्ठ पत्रकार श्री रतनेश जैन ने। 'लोकवाणी' कॉलम के माध्यम से मैंने अपने विचार लिखकर अभिव्यक्त करने शुरू किये। मैं जिस महल्ले में रहता हूं डा. फतेह उल्ला रोड उसी इलाके में शुरुआती दौर में 'रांची एक्सप्रेस' का आफिस खोला गया था।

मुझे याद है 'रांची एक्सप्रेस' साप्ताहिक का प्रकाशन आरम्भ होने के ठीक एक वर्ष बाद 14 अगस्त, 1964 को इसका अपना छोटा फ्लैट बेड प्रिंटिंग प्रेस हो गया था। लालपुर चौक के निकट सीतारामजी की पारिवारिक सम्पत्ति की एक बिल्डिंग में 'रांची एक्सप्रेस' का आफिस स्थानान्तरित किया गया था। इस अवसर पर आयोजित एक सादे समारोह की अध्यक्षता 'न्यू रिपब्लिक' साप्ताहिक के सम्पादक एन.एन. सेनगुप्ता ने की थी। सीताराम जी और बलबीरजी दोनों ने अपने विचार व्यक्त किये और कहा कि इसे छोटे आकार के दैनिक में परिवर्तित करने का विचार किया जा सकता है। यह संकल्पना कोई एक दशक बाद पूरी हुई।

लालपुर स्थित कार्यालय और प्रिंटिंग प्रेस में कुछ अरसा बाद जनसंघ नेता अटल बिहारी वाजपेयी पधारे। जब वह प्रिंटिंग मशीन का अवलोकन कर रह थे उस समय के फोटोग्राफर तबरेज के कैमरे का फ्लैश बल्ब फ्यूज हो गया। अटलजी को बलबीर जी के चेम्बर में यह बोलकर बिठाया गया कि फोटोग्राफर नया बल्ब लेकर आ रहा है, तब तक नया फोटो खींचने का इंतजार किया जाये। तबरेज को किसी कारण काफी देरी हो गयी। लेकिन अटलजी बिना कोई बेचैनी प्रदर्शित किये बातचीत करते रहे। तबरेज के आने पर अटलजी को दोबारा मशीन रूम में आकर मशीन का अवलोकन करने के लिए कहा गया ताकि फोटो खींचा जा सके! ज्ञातव्य है कि उस समय भी अटलजी राष्ट्रीय स्तर के नेता माने जाते थे।

इस समाचारपत्र के संचालक स्व. सीताराम मारू तथा सम्पादक श्री बलबीर दत्त ने समाचारपत्र को आगे बढ़ाने के लिये लम्बा संघर्ष किया है। मेरा तो प्रबंधन से अनुरोध होगा कि समय के अनुरूप इसकी मुद्रण और वितरण व्यवस्था आदि पर ध्यान दें। मुझे पूरा विश्वास है कि समाचारपत्र अपनी पुरानी पहचान को बना पायेगा। पुनः वह पुराने दिन चर्चा में आये जिससे लोग कहें-क्या आज का 'रांची एक्सप्रेस' पढ़ा?

प्रतिस्पर्द्धा का सामना तो करना ही होगा

? डा. वी.पी. शरण, *(प्रतिकुलपति, रांची विश्वविद्यालय, रांची)*

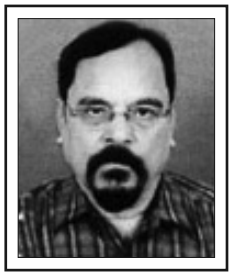

खुशी की बात यह है कि आज आपके साथ झारखंड की पत्रकारिता के संबंध में अपने संस्मरण व अनुभव साझा करने का अवसर मिला है। किसी अखबार के सफर में अर्द्धशताब्दी का पड़ाव वाकई में बहुत महत्वपूर्ण अवसर होता है। यदि कोई समाचार पत्र पिछले 50 वर्षों से निरन्तर प्रकाशित हो रहा है तो यह अपने-आप में इस तथ्य को प्रमाणित करता है कि इस क्षेत्र व समाज में इस अखबार की गहरी छाप तथा अहम पहचान है।

बीपीएससी की प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता के बाद साक्षात्कार के दौरान मेरा प्रदर्शन उत्कृष्ट रहा। मेरा चयन सुनिश्चित हो गया, लेकिन मेरे पिता श्री त्रिपुरारी शरण इससे बहुत दुःखी थे। वह नहीं चाहते थे कि मैं सरकारी सेवा में जाऊं। इसी दौरान 1969 में मेरी नियुक्ति रांची के सेंट जेवियर्स कॉलेज में राजनीति विज्ञान विभाग में हुई और मैं रांची आ गया। ...और तब मेरे पिता से ज्यादा प्रसन्न कोई नहीं था, क्योंकि उनकी दिली इच्छा बस इतनी थी कि मैं शैक्षणिक क्षेत्र में जाऊं। आज जब पीछे मुड़कर देखता हूं तो लगता है कि शैक्षणिक क्षेत्र और पत्रकारिता ही मेरे जीवन के दो उद्देश्यों में समाये थे।

जीवंत पत्रकारिता

उन दिनों रांची से एक अंग्रेजी साप्ताहिक 'न्यू रिपब्लिक' का प्रकाशन होता था जिसमें मेरे समाचार-आलेख आदि नियमित रूप से आने लगे थे। पत्रकारिता की सीमित दुनिया में मेरी पहचान बन रही थी। एक दिन दोपहर में मैं अपने कॉलेज से लौटकर विश्राम कर रहा था कि उसी समय श्री सीताराम मारू व श्री गौरीशंकर मोदी घर पहुंचे। यह 1971 की बात है और तब तक इस पूरे क्षेत्र की पत्रकारिता में 'रांची एक्सप्रेस' की सशक्त पहचान बन चुकी थी। बल्कि यह कहना कहीं ज्यादा उपयुक्त होगा कि यहां के सभी वर्ग के पाठकों के बीच 'रांची एक्सप्रेस' की तूती बोलती थी। श्री मारू और श्री मोदी ने मुझे बताया कि वे 'रांची हेरल्ड' के नाम से एक अंग्रेजी अखबार निकालने जा रहे हैं। उसमें सम्पादकीय योगदान के लिए उनके निमंत्रण को मैंने सहर्ष स्वीकार कर लिया।

उन दिनों पत्रकारिता के साथ कम ही लोग जुड़े होते थे। लेकिन जो भी इस प्रोफेशन में थे उनमें अधिकांश की पत्रकारिता के मान्य सिद्धांतों-आदर्शों और संबद्ध संस्थान या अखबार की मूल्य आधारित नीतियों के प्रति अटूट निष्ठा होती थी। यह बात 'रांची एक्सप्रेस' पर भी गहरे रूप से लागू होती थी। कड़ी मेहनत करने के मामले में श्री सीताराम मारू

और उनके तीनों सुपुत्रों विजय मारू, पवन मारू, अजय मारू के साथ ही सभी निदेशकों व संबद्ध लोगों ने भी कभी कोई समझौतावादी रवैया नहीं अपनाया। न ही कोई उदासीनता दिखायी। यही 'रांची एक्सप्रेस' की ताकत थी और अब भी है।

दूसरी तरफ यशस्वी सम्पादक के रूप में श्री बलबीर दत्त की भूमिका थी। तब से अब तक वह बिल्कुल नहीं बदले। उतनी ही मेहनत और वैसी ही जीवंत पत्रकारिता। अपने अनुभवों को निचोड़कर अपनी उत्कृष्ट लेखन शैली से उन्होंने 'रांची एक्सप्रेस' को सशक्त पहचान दिलायी। वस्तुतः वह जितने परिश्रमी हैं उतनी ही पत्रकारिता के मान्य सिद्धांतों के प्रति उनकी गहरी निष्ठा है। आज वह झारखंड के सबसे वरिष्ठ पत्रकार हैं और मेरे साथ अनेक लोग भी उन्हें झारखंड की पत्रकारिता का भीष्म पितामह मानते हैं। इन सब लोगों ने अपना खून-पसीना बहाकर 'रांची एक्सप्रेस' की सशक्त बुनियाद डाली।

इस बीच पिछले 15-20 वर्षों में इलेक्ट्रॉनिक मीडिया का भी भरपूर विकास हुआ। लेकिन एक बात मैं निश्चित रूप से कहूंगा कि यह प्रिन्ट मीडिया का स्थान कभी नहीं ले सकता।

...और अब सबसे अंतिम बात। स्वच्छ-पारदर्शी समाचार देने के साथ-साथ 'रांची एक्सप्रेस' को वक्त के अनुरूप अपनी प्रिंटिंग तकनीक व प्रबंधकीय कुशलता को उत्कृष्ट बनाने पर जोर देना होगा। 'रांची एक्सप्रेस' केवल अखबार ही नहीं बल्कि झारखंड में पत्रकारिता की पौधशाला है, झारखंडी आकांक्षाओं का प्रतिबिम्ब भी है। इसलिए इस अखबार की जिम्मेदारी कहीं ज्यादा है।

पत्रकारिता की साख का स्तम्भ

✍ ऋता शुक्ल,
(वरिष्ठ साहित्यकार एवं पूर्व निदेशक, पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग, रांची विश्वविद्यालय)

चांदनी रात में धरती की मखमली घास पर चलने की अनुभूति का शब्दों में वर्णन असंभव है। जीवन में अनेक क्षण ऐसे आते हैं जब शब्द उन भावनाओं का, जो दिल में उमड़ती-घुमड़ती हैं, प्रतिनिधित्व करने में अक्षम हो जाते हैं। ऐसी ही स्थिति मेरे सामने है जब 'रांची एक्सप्रेस' के स्वर्ण जयन्ती वर्ष में इस अखबार के संदर्भ में मुझे बात करनी है।

बरसो 'रांची एक्सप्रेस' ने जीवन की जिस सुगंध और पारदर्शितापूर्ण स्वच्छ पत्रकारिता का प्रतिनिधित्व कर जैसी साख कायम की है वह अन्यत्र दुर्लभ है। यही कारण है कि आज मेरे घर में ग्यारह खबार आते हैं और 'रांची एक्सप्रेस' सबसे ऊपर है। मैं उसे सबसे पहले देखती भी हूं और पढ़ती भी हूं।

साहित्य पुरस्कार

सन् 1969 में मैं अपने छोटे से परिवार के साथ रांची आयी और तब से यहीं की होकर रह गयी। अपनी दो मुलाकातों की चर्चा मैं विशेष रूप से करना चाहूंगी। सुप्रसिद्ध साहित्यकार राधाकृष्ण जी मेरे पिता (स्वर्गीय) रामेश्वर नाथ तिवारी के अभिन्न मित्र थे और मैं उनसे मिली। मेरी दूसरी मुलाकात श्री बलबीर दत्त से हुई जिनका मैंने बहुत नाम सुना था। पत्रकारिता के प्रति समर्पित श्री दत्त ने अपना जीवन इस पेशे को समर्पित किया। इसी का परिणाम है कि व्यावसायिकता भरे इस युग में भी 'रांची एक्सप्रेस' की साख व लोकप्रियता के साथ इसे पढ़ने के प्रति अनगिनत लोगों के दिलों में ललक, निरन्तर बरकरार है। मीडिया के प्रति रचनात्मकता के धर्म का स्वच्छता से निर्वाह करते हुए 'रांची एक्सप्रेस' को मैं 1969 से पढ़ती आ रही हूं और हमेशा यूं ही पढ़ती रहूंगी।

'रांची एक्सप्रेस' का वर्तमान स्वरूप अनेक महानुभावों की तपस्या व कर्तव्य पथ पर निरन्तर आगे बढ़ने का सुपरिणाम है। सीताराम मारू जी ने जीवन पर्यन्त इस अखबार को अपनी संतान की तरह माना। प्रत्येक विभाग ने अपनी निष्ठा में कभी भी कमी नहीं आने दी। घोर व्यावसायिक प्रतिस्पर्द्धा के इस युग में भी समर्पण की मशाल इस अखबार में कायम है।

मैं जब रांची विश्वविद्यालय में पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग की निदेशक थी तब सीताराम मारू जी ने सर्वोच्च अंक प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को स्वर्ण पदक से सम्मानित करने की योजना बनायी। उनके निधन के पश्चात् उनके संवेदनशील पुत्रों विजय मारू और अजय मारू ने इस योजना को यथावत माना। वास्तव में यह संस्कृति यहां केवल इसी अखबार में कायम है। झारखंड के किसी श्रेष्ठ लेखक को सुप्रसिद्ध साहित्यकार राधाकृष्ण के नाम पर सम्मानित करने की योजना इस अखबार ने 32 वर्ष पहले बनायी। किसी अन्य अखबार या राज्य सरकार ने इस संदर्भ में सोचने की जरूरत भी नहीं समझी।

स्वरूप निखार की जरूरत

जब बात ठोस पत्रकारिता की हो तो तकनीक, प्रबंधन आदि भी मायने रखती है। यकीनन हमारे वेद-पुराण ताड़पत्र पर ही लिखे गये, पर समय के बहाव के साथ-साथ हमें तकनीकी एवं प्रबंधकीय कुशलता पर भी ध्यान देना होगा। मारू परिवार की नयी पीढ़ी सामने है और वह अखबारी व्यावसायिकता की नब्ज पकड़ना सीख रही है। अखबार को नये कलेवर में सामने लाने के लिए साहस जुटाने के साथ इस क्षेत्र में भी प्रयास करने की जरूरत है। बेशक इसके लिए पर्याप्त पूंजी की जरूरत है पर धीरे-धीरे पहल करने से समस्या हल हो जायेगी। 'रांची एक्सप्रेस' को यदि पुरखों की निशानी मनकर इसकी बेहतरी के लिए कदम आगे बढ़ाया जाये तो पत्रकारिता की यह मशाल और अधिक उदीप्त होगी। स्वयं बलबीर दत्त जी पत्रकार समाज के सच्चे आदर्शों के आईना हैं। अनेक दिग्गज सम्पादकों को मैंने उनसे परामर्श लेते पाया है। 'रांची एक्सप्रेस'के पास तमाम संसाधन हैं और इसके मानव संसाधन की गुणवत्ता सर्वोच्च है। केवल नयी परिकल्पना करते हुए जुटने की जरूरत है।

अखबार का अर्थ 'रांची एक्सप्रेस' हुआ करता था

✍ **अनुज कुमार सिन्हा,** *(वरिष्ठ संपादक, 'प्रभात खबर', झारखंड)*

स्कूल के दिनों से ही 'रांची एक्सप्रेस' से संबंध बना था- एक पाठक (वह भी छात्र पाठक) के तौर पर। शायद पहली बार 1976 में 'रांची एक्सप्रेस' पढ़ा था। हजारीबाग में रहता था। सबसे पहले यही अखबार हजारीबाग पहुंचता था। वैसे उन दिनों 'प्रभात खबर', 'हिन्दुस्तान', 'आज', 'जागरण' और 'भास्कर' अखबार का झारखंड से प्रकाशन नहीं होता था। पटना से 'आर्यावर्त' आता था। लेकिन दोपहर बाद बंटता था। वैसे भी पटना से प्रकाशित होने वाले अखबारों में झारखंड क्षेत्र की खबरें कम होती थीं। इसलिये स्थानीय खबरों के लिये 'रांची एक्सप्रेस' पहली प्राथमिकता होती थी।

स्कूल के दिनों में

उन दिनों हजारीबाग में सांवरमल अग्रवाल 'रांची एक्सप्रेस' के संवाददाता हुआ करते थे। स्कूल के दिनों में उनसे बहुत संपर्क नहीं होता था। खबरों और मैट्रिक की परीक्षा के कार्यक्रम के लिए अखबारों को देखना अनिवार्य था। मैट्रिक पास करने के बाद जब संत कोलंबा कालेज, हजारीबाग में दाखिला लिया, छात्र संघों से जुड़ गया तो अखबार के मित्रों

से संपर्क बढ़ा। फिर तो एक कार्यक्रम कराता, दौड़ पड़ता 'रांची एक्सप्रेस' में कवरेज के लिये। उन दिनों किसी अखबार का कहीं कार्यालय नहीं हुआ करता था। मिलना होता तो संवाददाता के घर पर जाते या कोई ऐसा अड्डा होता, जहां संवाददाता आया करते थे। मुझे याद है सांवरजी से मिलने के लिये कई बार मैं केसरी जी (झंडा चौक के पास एक दुकान थी, आटा मिल भी था), वहीं जाया करता था। उन्हीं के पास 'रांची एक्सप्रेस' के लिये विज्ञप्ति छोड़ दिया करता था। इस अखबार से ब्रजमोहन जी भी जुड़ गये। वे वक्राक्ष नाम से कालम लिखते थे। सीनियर पत्रकार थे। दो-तीन साल पहले उनसे एक बार मुलाकात हुई थी। अखबार पर चर्चा भी हुई थी।

'लोकवाणी' का असर

उन दिनों लोकवाणी (संपादक के नाम पत्र) कालम का बहुत महत्व हुआ करता था। लगभग हर सप्ताह मैं 'रांची एक्सप्रेस' में लोकवाणी के लिये कुछ न कुछ लिख दिया करता था। छपता तो बेहद खुशी होती थी। सौ शब्दों का पत्र भी इतना असरदार होता था कि प्रशासन को कार्रवाई करने के लिये बाध्य होना पड़ता था। जब भी कोई सड़क खराब हो गयी हो, बिजली गुल हो गयी हो, छात्रवृत्ति नहीं मिल रही हो, परीक्षा तिथि बढ़ाने की मांग करनी हो, सबसे पहले 'रांची एक्सप्रेस' की याद आती थी। उन दिनों पत्रकारिता और पत्रकार दोनों पर लोग बहुत ज्यादा भरोसा करते थे। बलबीर दत्तजी प्रारंभ से ही इस अखबार से जुड़े हैं। बेहद समर्पित, सरल, व्यवहार-कुशल और कलम के धनी। उन्होंने झारखंड में लोगों को अखबार पढ़ना सिखाया। मैं भी उनमें से एक था। असर यह हुआ कि धीरे-धीरे मैं भी पत्रकारिता में आ गया। सच कहूं तो 'रांची एक्सप्रेस' में लगातार पत्र छपने के बाद पत्रकारिता का नशा मुझे लगा और मैं पत्रकरिता में आ गया।

अब समय बदल गया है। अनेक अखबार आ गये हैं। लोगों के पास अनेक विकल्प हैं। पर 30-35 साल पहले झारखंड क्षेत्र में अखबार का अर्थ सिर्फ 'रांची एक्सप्रेस' ही हुआ करता था। इस अखबार में उन दिनों एक सिंगल कालम न्यूज छपने से सभी को वह शांति-संतुष्टि मिलती थी, जो आज चार कालम में भी नहीं मिलती।

मीडिया संस्कृति का सृजनकर्ता है 'रांची एक्सप्रेस'

✍ **बुलु घोष,** *(सुप्रसिद्ध संगीतकार, गायक एवं सह संस्थापक बुलु-पापा आरकेस्ट्रा, रांची)*

रांची और झारखंड, अपने देश का उभरता हुआ क्षेत्र है। रांची तथा झारखंड की प्रतिभाओं ने यह प्रमाणित कर दिया है कि वे किसी से भी कम नहीं हैं।

हर व्यक्ति की जिन्दगी में

'रांची एक्सप्रेस' और मुझमें एक समानता है। दोनों ने अपने-अपने क्षेत्र में रांची व झारखंड को अपनी जमीन तब बनाया जब यहां कोई भी आधारभूत संरचना नहीं थी। जबकि आज मीडिया और म्यूजिक उद्योग अर्थात् दोनों ही क्षेत्रों में यहां तरक्की की असीम संभावनाएं हैं। आज से 50 साल पहले रांची से नियमित रूप से प्रकाशित होनेवाला 'रांची एक्सप्रेस' न केवल पहला साप्ताहिक समाचारपत्र था बल्कि पत्रकारिता का वैसा अकेला स्तंभ था जो यहां के लोगों की आकांक्षाओं को पूरा करता था। कहने को तो पटना-कलकत्ता के अखबार भी यहां दिन ढले पहुंचते थे, लेकिन उससे यहां के बुद्धिजीवी, सामाजिक-राजनीतिक कार्यकर्ताओं, अधिकारियों, आम लोगों व विद्यार्थियों अर्थात् किसी की भी जरूरत पूरी नहीं होती थी। उस रिक्त स्थान की प्रतिपूर्ति 'रांची एक्सप्रेस' ने की और वह निरन्तर लोकप्रियता के साथ ही तरक्की की सीढ़ियों

पर चढ़ता गया और बहुत जल्द साप्ताहिक समाचारपत्र से दैनिक अखबार के रूप में तब्दील हो गया। एक लम्बे अरसे तक 'रांची एक्सप्रेस' यहां के हर आदमी की जिन्दगी में शिद्दत से शामिल रहा। उन दिनों 'रांची एक्सप्रेस' का क्या महत्व था, इसे आपको कोई भी वैसा व्यक्ति बता सकता है जो यहां कम से कम 30-35-40 वर्षों से रह रहा हो।

मीडिया कल्चर का विकास

इस लोकप्रियता के पीछे बल्कि इसे यो कहें कि इस अखबार का सभी के जीवन का अहम हिस्सा बनने के पीछे कुछेक लोगों की महान तपस्या थी। वे वैसे लोग थे जो न केवल पत्रकारिता के माध्यम से आम-खास लोगों को फायदा पहुंचाने के प्रति समर्पित थे बल्कि वे इस जमीन के भी सच्चे सपूत प्रमाणित हुए। इनमें से एक महत्वपूर्ण नाम स्व. सीताराम मारू जी का है जो इस अखबार के संस्थापक थे और दूसरे हैं इसके यशस्वी प्रधान सम्पादक बलबीर दत्त जी। रांची में मीडिया कल्चर अर्थात् अखबार पढ़ने की संस्कृति को तैयार करने के पीछे सौ फीसदी 'रांची एक्सप्रेस' का ही हाथ है। मुझे भी अपने संघर्षकाल से अबतक हमेशा ही 'रांची एक्सप्रेस' का साथ मिलता रहा। विशेष बात यह भी रही कि बलबीर दत्त जी का व्यक्तिगत मार्गदर्शन भी मुझे विविध अवसरों पर मिला है। हमेशा ही मुझसे संबंधित समाचार-साक्षात्कार के साथ ही मेरे द्वारा आयोजित संगीत कार्यक्रमों को 'रांची एक्सप्रेस' में बेहतर कवरेज मिला।

पगडंडी भी नहीं थी

जब मैंने म्यूजिक व आरकेस्ट्रा में अपनी यात्रा शुरू की थी तो यहां पगडंडी भी नहीं थी जबकि धीरे-धीरे प्रयास करने के फलस्वरूप आज बेहतर संभावनाएं तैयार है। आज न केवल दिल्ली-मुम्बई की फिल्म इंडस्ट्रीज का ध्यान रांची-झारखंड पर है बल्कि यह म्यूजिक फिल्म की प्राफिट मेकिंग जमीन बन चुकी है। यदि केवल रांची व झारखंड की भी बात की जाये तो यहां लगभग 400-500 लोग म्यूजिक सीडी, वीडियो फिल्म आदि क्षेत्र से जुड़कर अपना जीवन यापन कर रहे हैं। आज यदि पुराने दिनों को याद करता हूं तो तब रांची में कोई भी स्टूडियो वगैरह नहीं था। मैंने निजी स्तर पर कदम बढ़ाया और बैंक लोन के साथ ही अपने निजी निवेश के बलबूते स्टूडियो के साथ ही तब की सर्वश्रेष्ठ आधारभूत संरचना को जमीन पर उतारा। मुझे किसी का भी वैसा साथ नहीं मिला जिसे मैं अभी बता सकूं। जीवन भर संघर्ष करता रहा। स्थिति ऐसी रही कि लोग मेरे से कुछ लेने को ही मेरे पास आये, लेकिन कभी कुछ देने नहीं आये। सही बात कहूं तो इससे काफी पीड़ा होती है और अपने संघर्ष के बारे में इतना ही कहूंगा कि अब भी लोगों की मानसिकता में कोई वैसा बदलाव नहीं आया है जिसे मैं अभी बता सकूं। लेकिन इतना जरूर कहूंगा कि 'रांची एक्सप्रेस' ने हर कदम पर मेरा साथ दिया। बलबीर जी ने हमेशा मेरा मनोबल बढ़ाया, प्रोत्साहित किया। इसकी बेहद खुशी है। इस क्षण एक बात बहुत याद आ रही है। आज से 32 वर्ष पहले 1980 में एक दिन 'रांची एक्सप्रेस' के पृष्ठ तीन पर मेरा एक लम्बा इंटरव्यू छपा था जिसका शीर्षक था 'मैं रांची छोड़कर कभी नहीं जाऊंगा।' मैं जीवनपर्यन्त यहीं हूं। मैंने यहां की प्रतिभाओं को निखारने, संगीत से जुड़ी उद्योग-व्यवस्था के विकास और नागपुरी व क्षेत्रीय भाषाओं के गीत-संगीत को पहचान दिलाने में अपना जीवन समर्पित कर दिया। यही मेरी ताकत का आधार है और शायद 'रांची एक्सप्रेस' की अर्द्धशताब्दी की सच्ची सम्पदा भी इससे मिलती-जुलती है।

●●●

अपने दौर का अकेला एक्सप्रेस : 'रांची एक्सप्रेस'

✍ **विद्याभूषण,** *(वरिष्ठ साहित्यकार)*

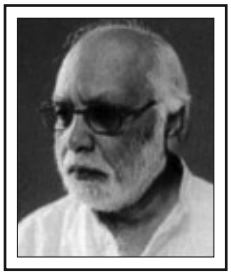

रोज बदलती इस दुनिया में शिखर और उसके शीर्ष पर काबिज हस्ती, दोनों की स्थिति बदलती चलती है। इस बदलाव से न व्यक्ति बच पाते हैं, न संगठन या संस्थान। लिहाजा इसमें शोक मनाने जैसी कोई बात नहीं दिखती। निस्संदेह एक लंबी अवधि तक 'रांची एक्सप्रेस' दक्षिण बिहार यानी आज के झारखंड राज्य का अकेला मीडिया प्रतिनिधि था। कहना तो यह चाहिये कि जैसे-जैसे रांची और उसके आसपास के इलाकों का रूपान्तर होता गया, वैसे-वैसे 'रांची एक्सप्रेस' भी अपने स्वरूप को समयान्तर की अपेक्षाओं के अनुसार ढालता गया। इस अखबार के उतार-चढ़ाव भरे लंबे सफर के जिन सात बिन्दुओं को मेरी तरह कई लोग गौरतलब मानते हैं, वे इस तरह रखे जा सकते हैं-

पत्रकारों का प्रशिक्षण संस्थान

सन् 1963 में एक साप्ताहिक पत्र के रूप में शुरुआत के तेरह वर्षों बाद समय से संवाद विकसित करते हुए 'रांची एक्सप्रेस' सन 1976 से दैनिक पत्र के रूप में प्रकाशित होने लगा। इस दौरान उसके प्रकाशन की पूरी प्रक्रिया भी नयी तकनीक के मेल में बदलती गयी। लेटर प्रेस में प्रचलित हैंड कंपोजिंग की जगह कंप्यूटर डीटीपी ने ली तो ट्रैडिल, फ्लैट और अन्य भारी मशीनें आफसेट और कलर आफसेट में बदल गयीं। इस बदलाव से लेआउट-मेकअप की प्रस्तुति को इंद्रधनुषी बनाने में मदद मिली।

कथित रूप से दक्षिणपंथी प्रतिष्ठान के स्वामित्व के बावजूद इस दैनिक का स्वर हमेशा निरपेक्ष और तटस्थ बना रहा। विचार और समाचार दोनों ही स्तरों पर बरती गयी निष्पक्षता से पाठकों में इसकी साख और पैठ बनी। आज भी यह गुटनिरपेक्षता बची हुई है, लेकिन कई दीगर चुनौतियों की वजह से बाजार की प्रतियोगिता अब भारी पड़ती दिख रही है।

जिस समय पत्रकारिता के अध्ययन-अध्यापन के लिये इस पठारी अंचल के किसी विश्वविद्यालय में स्वतंत्र विभाग जैसा कोई प्रबंध अस्तित्व में नहीं था, उन दिनों एक्सप्रेस टीम में नये पत्रकारों को रूटीनी कार्य करते हुए प्रशिक्षण और प्रयोग के अवसर मिला करते थे। सदी के अंतिम वर्षों में जब इस शहर से कई दैनिकों के क्षेत्रीय संस्करणों का प्रकाशन शुरू हुआ तो एक्सप्रेस में रह कर मंज चुके कलमकारों ने वहां पहुंच कर उन्हें स्थानीयता का अनुभवसिद्ध स्वाद दिया।

एक दौर ऐसा भी था जब झारखंडी समाज के प्राय: सभी घटकों के मत-मतान्तरों को मुखर करने का काम इस अखबार ने पूरी जवाबदेही के साथ किया। इसकी कवरेज के दायरे में पूरा झारंखंड क्षेत्र रहा और आज भी अन्य अखबारों की तरह इसके अलग-अलग नगर संस्कारण नहीं हैं। शायद अपने समय के साथ अन्त:क्रिया के इसी रुझान के कारण यह संभव हो सका कि इसके संस्थापक सम्पादक और आज के प्रधान संपादक बलबीर दत्त झारखंड आंदोलन के उतार-चढ़ाव भरे इतिहास को अपनी बहुचर्चित पुस्तक 'कहानी झारखंड आंदोलन की' में एक प्रत्यक्षदर्शी की तरह दर्ज कर सके।

साहित्य पर दृष्टि

सन् 1981 में राधाकृष्ण पुरस्कार श्रृंखला शुरू करके इसने पूरे झारखंड क्षेत्र में साहित्य सृजन को मान देने का अपना अलग रूझान आज तक कायम रखा है। इस मोर्चे पर इस क्षेत्र में उसका कोई प्रतियोगी न कल था, न आज है। इसके

संयोजक की खास बात यह भी है कि इस पुरस्कार की साख और गुणवत्ता तीस वर्षों के लंबे सफर में भी बरकरार है। इसकी सांस्कृतिक सजगता की तस्दीक इस बात से भी होती रही कि इसके फीचर पेजों और साप्ताहिक परिशिष्टों में सामयिक प्रश्नों के समान्तर सांस्कृतिक विषयों पर भी सामग्री दी जाती रही है। झारखंड के जानेमाने शब्दकर्मियों के देहावसान पर उनके योगदान का पुनर्पाठ करते कई विशेषांक इस पत्र की संवेदनशील दृष्टि को रेखांकित करते हैं।

'रांची एक्सप्रेस' के संपादकीय विभाग के कार्य में प्रबंधकीय हस्तक्षेप की परम्परा नहीं रही है। यहां डेस्क पर लंबे समय से काम कर रहे लोग अपनी कमियों से उबरते हुए, अपनी गलतियों से खुद सीखते हुए व्यक्ति हैं। एक ही प्रतिष्ठान में दशकों तक टिके रहकर उन सबने शायद अपने हितों का अहित भी किया है और परिणामत: कभी-कभी उनके परफार्मेंस पर उसके असर का अनुमान होता है। लेकिन इस स्थिति से होने वाले लाभ-हानि के बारे में अलग-अलग नतीजे निकाले जा सकते हैं।

कुछ बात है कि हस्ती बनी रही सलामत

✍ **अशोक प्रियदर्शी,** *(वरिष्ठ साहित्यकार/स्तंभ लेखक)*

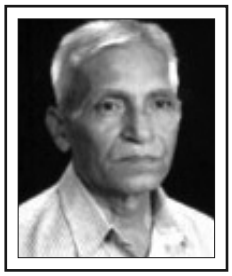

उन दिनों मैं सिमडेगा कालेज में हिन्दी विभाग में शिक्षक था। वहां जाना कि रांची से 'रांची एक्सप्रेस' नाम का साप्ताहिक पत्र निकल रहा है। मैं दिल्ली से प्रकाशित होने वाले 'इंडियन एक्सप्रेस' का ग्राहक बन गया था। ठीक याद नहीं कि शाम को या एक दिन बाद वह अखबार सिमडेगा पहुंचता था।

पत्रकारिता की पाठशाला

एक दिन मेरे एक सहकर्मी, जिन्होंने अखबारों की एजेंसी ले रखी थी, स्वयं अखबार पहुंचाने मेरे निवास पर आए और 'इंडियन एक्सप्रेस' (अंगरेजी) की जगह 'रांची एक्सप्रेस' थमाया। मैं चकित। रांची से दैनिक अखबार निकल रहा है? मित्र ने कहा-हां। और अपने अखबार को हमें प्रश्रय देना ही चाहिए। मैं केवल कल्पना ही कर सकता था कि दैनिक का प्रकाशन- वितरण, संवाद-संकलन, पूरे छोटानागपुर-संतालपरगना में इसका भेजा जाना, कैसे संभव हुआ होगा यह सब? मुझे इस 'गंगा' को लाने वाले 'भगीरथों' में से केवल श्री सीताराम मारू (अब स्व.) और श्री बलबीर दत्त (सम्पादक) से परिचित होने का सौभाग्य मिला। 'रांची एक्सप्रेस' और हम सबों का सौभाग्य कि बलबीर दत्त जी आज भी 'रांची एक्सप्रेस' के प्रधान सम्पादक हैं और तूफानों से जूझते हुए 'कश्ती' को यहां तक ले आये हैं। मेरा सौभाग्य यह भी कि एक प्रकार का जुड़ाव मेरा भी 'रांची एक्सप्रेस' के साथ है। मेरा मानना यह है कि अखबार की पहली शर्त निरन्तरता होनी चाहिए, उसके बाद स्तरीयता। एक समय रांची से निकलने वाला यह इकलौता दैनिक था। कहें तो पत्रकारिता की पाठशाला जहां से सीखकर पत्रकार देश भर में फैले।

'रांची एक्सप्रेस' कितने लोगों द्वारा उन दिनों पढ़ा जाता था, इसका एक प्रमाण यह भी है कि प्रायः हर सप्ताह किसी न किसी दिन, किसी न किसी पाठक/पाठिका की टिप्पणी मेरे व्यंग्य-कॉलम में पढ़ने को मिल जाती थी।

साहित्य को प्रोत्साहन

'बड़े' अखबारों को साहित्य-वाहित्य की क्या चिन्ता! किसी-किसी अखबार में साहित्य का पेज है भी तो वो प्रायः विज्ञापन की भेंट चढ़ जाता है। कई की सामग्री उनके मुख्यालय से आती है, आपका आलेख भी उसमें समा गया तो आप भाग्यशाली हैं।

'रांची एक्सप्रेस' द्वारा प्रायोजित राधाकृष्ण पुरस्कार तो क्रांतिकारी पहल है। अखबार का प्रबंधन किसी साहित्यकार

की स्मृति को जगाए रखने के लिए ऐसे पुरस्कार देने का संकल्प ले, मुझे नहीं पता कि देश के किसी अखबार ने ऐसा कदम उठाया है। सीताराम जी के साथ भी निर्णायक समिति में मैं रहा। उन्होंने कभी अपनी ओर से किसी नाम की अनुशंसा नहीं की। शेष लोग जो फैसला ठीक समझें ले लें। 'रांची एक्सप्रेस' प्रबंधन उसे कार्यान्वित कर देगा। आज भी कमोबेश स्थिति यही है।

'रांची एक्सप्रेस' हर शनिवार को अनिवार्यतः 'साहित्य-मीडिया' को पूरा एक पृष्ठ देता है। इस पृष्ठ पर मेरे द्वारा लिखित पुस्तक-समीक्षाएं भी जगह पाती हैं। इस संदर्भ के दो प्रसंग सुनाता हूं।

मैं उन दिनों स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग (रांची वि.वि.) में था। एक दिन दिल्ली के एक प्रसिद्ध-प्रतिष्ठित प्रकाशक के यहां से एक रजिस्टर्ड डाक मिली। एक किताब थी-'शिवप्रसाद सिंहः सृष्टि और स्रष्टा।' संपादित किया था पांडेय शशिभूषण 'शीतांशु' (अमृतसर में हिन्दी के विश्वविद्यालय प्रोफेसर) ने। मैं चकित। किताब में शिवप्रसाद सिंह की एक पुस्तक पर मेरी वह समीक्षा छपी था जो 'रांची एक्सप्रेस' में प्रकाशित हो चुकी थी। मैंने शीतांशु जी को पत्र लिखा कि आप समीक्षा मांग लेते। अखबार में छपी समीक्षा की सीमा होती है। उनका पत्रोत्तर आया- 'जब छपी-छपाई ठीक-ठाक समीक्षा मुझे मिल गई तो फिर आपको क्यों कष्ट देता!

राजकमल प्रकाशन के मालिक ओमप्रकाश जी के सुपुत्र अरविन्द कुमार साहित्यिक सुरुचि के अधीत व्यक्ति हैं। (पहले राजकमल बंटा, एक हिस्सा अरविन्द जी के हिस्से आया। नेशनल बुक ट्रस्ट के छह वर्षों के लिए अध्यक्ष बनाये जाने पर उन्होंने अपने हिस्से का प्रकाशन-गृह भी बेच दिया। संप्रति अरविन्द जी गुड़गांव में रहते हैं और 'अरविन्द कुमार पब्लिशर्स' के नाम से विश्वख्यात बेस्टसेलर्स के हिन्दी अनुवाद छापते हैं, अपने तरह की खास किताबें। इनमें से कई की समीक्षा मैंने लिखी अरविन्द जी ने श्री बलबीर दत्त से फोन नं. लेकर उन समीक्षाओं के लिए आभार व्यक्त किया। ये प्रसंग मैंने 'रांची एक्सप्रेस' की लोकप्रियता के एक कोण के संदर्भ में उठाये।

बचपन की याद और झारखंड की पहचान है 'रांची एक्सप्रेस'

✍ **अशोक शरण,** *(सुप्रसिद्ध फिल्म निर्माता एवं निर्देशक)*

'रांची एक्सप्रेस', झारखंड का सबसे पुराना दैनिक, मेरी बचपन की यादों में शुमार है। 'रांची एक्सप्रेस' के साथ बचपन से लेकर अब तक की जुड़ी अपनी यादों को शब्दों में बयां करना मुश्किल है। जब से होश संभाला तब से 'रांची एक्सप्रेस' पढ़ने की शुरुआत की और अब भी दिमाग में यह पहले की तरह ही बसा है। अपनी फिल्मों, विविध पैनोरमा, अंतरराष्ट्रीय फिल्म समारोहों, पुरस्कारों अर्थात फिल्म के साथ ही रंगमंच एवं अन्य गतिविधियों के दौरान देश-दुनिया के पता नहीं कितने समाचार पत्रों-पत्रिकाओं में मेरे से संबंधित समाचार छपे। लेकिन जितनी खुशी आज से 35-36 साल पहले 'रांची एक्सप्रेस' में अपना समाचार छपने से मिली थी वैसी कभी नहीं मिली। आप ही बताइए...क्या कभी 'रांची एक्सप्रेस' मेरे दिमाग में धुंधला हो सकता है?

'रांची एक्सप्रेस' जब छपना शुरू हुआ तब झारखंड में दूसरा कोई अखबार नहीं था। इलेक्ट्रानिक टीवी चैनल भी नहीं आये थे और आकाशवाणी की पहुंच सीमित दायरे में थी। तब अखबार निकालना बड़े साहस का काम था। वैसे समय

सीताराम मारू जी ने यह हिम्मत और हौसला दिखाया और उनके लगाये पौधे को बलबीर दत्त जी ने बटवृक्ष बना दिया। वैसे तो 'ओल्ड इज गोल्ड' वाली कहावत कभी बासी हो ही नहीं सकती, लेकिन 'रांची एक्सप्रेस' के संदर्भ में यह अखबार ऐसा सुनहरा इतिहास और भविष्य समेटे है जो तब भी विकल्पहीन था जब इसका एकछत्र राज्य था और अब भी विकल्पहीन ही है, जबकि अखबारी दुनिया में भारी-भरकम पूंजी, अति आधुनिक तकनीक व प्रबधन का बोलबाला है। रांची के साथ ही झारखंड के विविध नगरों से कई पृष्ठों के पूर्णत: रंगीन अखबार भले ही छप रहे हों पर विश्वसनीयता, पारदर्शिता और साख के मामले में 'रांची एक्सप्रेस' तक पहुंचने में उन्हें अभी लम्बा समय लगेगा। एक अन्य महत्वपूर्ण बात यह है कि 'रांची एक्सप्रेस' की गुडविल झारखंड की भौगोलिक परिधि के दायरे में नहीं बंधी है। दिल्ली में भी झारखंड के सांसदों, मंत्रियों और यहां से सम्बद्ध लोगों के घर या कार्यालय में जब भी जाता हूं तो 'रांची एक्सप्रेस' पढ़ने को मिल जाता है। मेरे जैसे वैसे अनेक लोग हैं जो वहां भी 'रांची एक्सप्रेस' देखना-पढ़ना पसंद करते हैं। अर्थात आपको झारखंड से यदि थोड़ा सा भी प्यार है तो आप 'रांची एक्सप्रेस' को नजरअंदाज कर ही नहीं सकते। दिल्ली, मुम्बई, चेन्नई, बड़ौदा, नागपुर, पटना जैसे भारतीय नगरों के साथ ही लंदन, न्यूयार्क, वाशिंगटन, मध्य पूर्व तक में वैसे पचासों लोगों को मैं जानता हूं जो नेट पर सर्फिंग के दौरान सबसे पहले 'रांची एक्सप्रेस' की साइट पर ही जाते हैं।

परंतु अब पत्रकारिता के साथ ही लोगों का नजरिया भी बदला है और अस्तित्व बनाये रखने के लिए अखबार को भी बदलना होगा। अब स्थिति यह है कि आम पाठक अखबार पढ़ता नहीं बल्कि देखता है और मात्र अपने मतलब की खबरों को सरसरी निगाह से पढ़ता है। अश्लील तस्वीरें छापकर और तकनीक, पृष्ठ संख्या आदि के बलबूते प्रसार संख्या बढ़ाने की प्रवृत्ति बढ़ी है। युवाओं में अखबारों के प्रति रुझान घटा है। ये सभी बातें नकारात्मक है। मानव समाज, पत्रकारिता और देश के हित में एक बहुत बड़ी क्रांति की जरूरत है। इसमें 'रांची एक्सप्रेस' भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है और भरोसा है निभाएगा भी।

अक्स भी बदल गया आईना भी

✍**प्रियदर्शन,** *(सीनियर न्यूज एडीटर, एडीटीवी इंडिया, नयी दिल्ली)*

'रांची एक्सप्रेस' के जब 25 साल पूरे हुए थे तो उस अवसर पर निकाले गए एक विशेषांक में मैंने रांची के साहित्यिक-सांस्कृतिक परिवेश पर एक लंबा लेख लिखा था। जब 'रांची एक्सप्रेस' द्वारा दिया जा रहा राधाकृष्ण पुरस्कार 10 वर्षों का हुआ तब भी रांची एक्सप्रेस के विशेष परिशिष्ट में मैंने एक टिप्पणी की। 1987 के क्रिकेट वर्ल्ड कप पर मेरी टिप्पणियां साप्ताहिक तौर पर छपती रहीं और 1991 के वर्ल्ड कप में तो बाकायदा मैं कई मैचों पर पहले पन्ने पर लिखता रहा।

'रांची एक्सप्रेस' में किशोर संवाददाता

यह सारा कुछ याद करने का मक़सद यह बताना नहीं है कि मैंने 'रांची एक्सप्रेस' में कितना लिखा, बस यह याद करना है कि अपनी पत्रकारिता के बिल्कुल शुरुआती दौर में 'रांची एक्सप्रेस' में मुझे वह घर-परिवार और मंच मिला, जहां मैंने अपने-आपको तरह-तरह से आजमाया और पूरी आज़ादी से काम किया। अब याद करता हूं तो वह दौर सपने जैसा लगता है। मैं 1985 से 1992-93 तक की रांची की बात कर रहा हूं जो उन दिनों साहित्यिक-सांस्कृतिक हलचलों से जैसे धड़कती रहती थी। एक के बाद एक साहित्यिक आयोजन, एक के बाद एक रंग प्रदर्शन, एक के बाद एक सांस्कृतिक कार्यक्रम, यूनियन क्लब, मेकॉन क्लब, जवाहर नगर और सीएमपीडीआई के हॉल, सत्य भारती, संस्कृति विहार- जैसे कुछ न कुछ सार्थक- सा हमेशा चलता ही रहता था। और बताते हुए कुछ पुलक का अनुभव होता है कि

इन सबमें सक्रिय साझेदारी के अलावा मैं इन सबकी खबर भी लिखता था। 'रांची एक्सप्रेस' के उस किशोर सांस्कृतिक संवाददाता की हैसियत तब उसकी एक बड़ी पूंजी थी क्योंकि आज का जो भी हाल हो, उस दौर में रांची और 'रांची एक्सप्रेस' जैसे एक-दूसरे का अक्स और आईना थे। यह अक्स कैसे बिखर गया, इस आईने पर क्यों कर ऐसी धूल बैठती गई कि सब कुछ जैसे विस्मृति के गर्त में चला गया, यह एक उदास करने वाला सवाल है जिसकी पड़ताल दूसरे लोग कर सकते हैं, लेकिन मैं उस दौर के 'रांची एक्सप्रेस' को बड़ी कृतज्ञता से याद करता हूं।

घरेलू वातावरण

'रांची एक्सप्रेस' में लिखने की शुरुआत मैंने 1987 में बलबीर दत्त जी के दौर में की थी और कई विषयों पर लिखता रहा था। इन सबमें कुछ भूमिका मेरे मामाजी उदय वर्मा की भी रही और विद्याभूषण मिश्र और बैजनाथ मिश्र जी की भी, और जिस घरेलू माहौल और आजादी की बात मैंने ऊपर की, वह दरअसल इन सबका बनाया हुआ था। 1987 के क्रिकेट विश्व कप पर मेरी साप्ताहिक टिप्पणियों ने मुझे कई युवा पाठक और मित्र दिए थे।

1991 में पवन मारू के संपादन काल में मैं सीधे अखबार से जुड़ा। अब यह याद करना अच्छा लगता है कि इस युवा पत्रकार पर पवन मारू भी पूरा भरोसा करते थे। उन दिनों कई बार मैं संपादकीय भी लिखा करता था। 21 मई, 1991 को राजीव गांधी के निधन के बाद निकले अख़बार में बिल्कुल पहले पन्ने पर मेरी टिप्पणी छपी। 6 दिसंबर 1992 को बाबरी मस्जिद ध्वंस के बाद छपा संपादकीय भी मैंने लिखा। इस टिप्पणी में अगर मैं-मैं अगर कुछ ज़्यादा होता लग रहा है तो शायद इसलिए भी कि यह सब लिखते हुए अचानक बहुत सारी चीजें याद आ रही हैं। सबसे ज्यादा यही बात कि 'रांची एक्सप्रेस' के उस नितांत सक्रिय दौर ने दिल्ली में मेरी बड़ी मदद की।

मई 1993 की एक दोपहर, मैंने पवन मारू को बताया कि मैं अखबार छोड़ रहा हूं और दिल्ली जा रहा हूं। वे कुछ हैरान थे, उन्होंने मुझसे देर तक बात की, अपनी तरफ से 'रांची एक्सप्रेस' में बने रहने का आग्रह भी किया और यह आश्वस्ति भी दी कि कभी मैं लौटूंगा तो मेरी जगह यहां बनी रहेगी। लेकिन मैं लौटा नहीं। उन पांच-सात सघन वर्षों के अभ्यास की पूंजी ने मेरे लिए दिल्ली के संघर्ष को काफी कुछ आसान किया। वैसे उन दिनों जब भी लौटता तो 'रांची एक्सप्रेस' के दफ़्तर जरूर जाता जहां कई आत्मीय और वरिष्ठ लोग बड़े करीने से मिलते।

5 हजार वर्ष तक छपता रहे अखबार

✍**गजेन्द्र चौहान,** *(फिल्म एवं टीवी अभिनेता/राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य भाजपा)*

मुझे यह जानकर बहुत खुशी हुई कि 'रांची एक्सप्रेस' अपने गोल्डन जुबली वर्ष में है। पचास वर्ष की अवधि एक अच्छी-खासी अवधि होती है।

आज की दुनिया में मीडिया से बड़ी कोई ताकत नहीं। यह एक सच्चाई है। विशेष रूप से भारत जैसे लोकतांत्रिक पद्धति वाले देश में मीडिया जितनी अधिक निष्पक्षता, गंभीरता और विवेकशीलता के साथ अपनी भूमिका अदा करेगा देश के हित में उतना ही अच्छ होगा।

हमारे देश में पालिटिक्स सब जगह हावी है, मीडिया भी उससे अछूता नहीं है। आज देश के अनेक महत्वपूर्ण पदों पर वैसे लोग काबिज हैं जो देश सेवा के काबिल नहीं हैं। उनका चरित्र भी विवादास्पद है, साथ ही उनके अन्दर देशभक्ति की भावना भी मर चुकी है। तस्वीर के बिल्कुल दूसरी तरफ एक दूसरी हकीकत सांस ले रही है। भ्रष्टाचार विरोधी आंदोलनों ने पूरे देश में एक माहौल तैयार किया है। अन्ना हजारे तथा स्वामी रामदेव के आंदोलनों के बाद एक बार फिर से यह साबित हो गया है कि अच्छे विचारों

वाले सामाजिक नेताओं-कार्यकर्त्ताओं की पहुंच सीमित ही होती है। चाहे विचार, सोच व उद्देश्य कितने भी अच्छे हों और क्षमता कितनी भी ज्यादा हो।

'महाभारत' में युधिष्ठिर की भूमिका

जहां तक मीडिया की बात है, आज मीडिया की जो तस्वीर है, उसके अनेक पहलू हैं। यह अपने आदर्श स्वरूप में नहीं है। एक तरफ प्रिंट मीडिया है तो दूसरी तरफ इलेक्ट्रानिक मीडिया भी है। इन दोनों की भूमिका को नजरअंदाज करना मुश्किल है। प्रिंट मीडिया में छपे समाचारों व अन्य सामग्री का जीवन स्थायी होता है। अखबारों एवं पत्र-पत्रिकाओं में जो भी छपता है उसका असर लंबे समय तक रहता है।

दूसरी तरफ इलेक्ट्रानिक मीडिया है जो जब-तब, बल्कि हमेशा ही, सनसनी फैलाता रहता है। वह हर समाचार को इस तरह पेश करता है मानो वह बहुत बड़ा समाचार हो, बहुत महत्वपूर्ण हो। नतीजा यह कि समाचार चैनलों में उठे मुद्दों की कोई लाईफ ही नहीं होती। हालांकि उनकी हर खबर 'ब्रेकिंग न्यूज' होती है!

रांची यात्रा और 'रांची एक्सप्रेस'

देश में एक राजनीतिक तूफान मचा है और ऐसे में जरूरत इस बात की है कि मीडिया अपनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा करे। पारदर्शी, जिम्मेदार, निष्पक्ष और मजबूत मीडिया इस देश की जरूरत है। जिस तरह से राजनीति, प्रशासन, सरकार और हर प्रकार के प्रोफेशन में अच्छे लोगों की जरूरत है उसी तरह मीडिया में भी बड़ी तादाद में अच्छे लोग चाहिए, अच्छे प्रोफेशनल्स चाहिए। वैसे लोग चाहिए जो ईमानदार और निष्पक्ष तो हों ही साथ ही उनका इरादा भी सही हो। एक मछली सारे तालाब को गंदा कर देती है।

मीडिया में भी 90 प्रतिशत लोग अच्छे हैं जो रिपोर्टिंग या लिखने के दौरान पूरी ईमानदारी बरतते हैं लेकिन बाकी के 10 प्रतिशत लोग वैसे नहीं हैं। वे निष्पक्ष नहीं रह पाते और क्यों नहीं रह पाते? इसे वे ही बता सकते हैं।

मीडिया की इतनी बड़ी ताकत का सही इस्तेमाल जरूरी है। मैंने कई बार चैनलों पर या अखबारों-पत्रिकाओं को दिये गये इंटरव्यू में साफ-साफ कहा है कि, 'भाई, जब हमारी बॉलीवुड फिल्म इंडस्ट्री में कुछ होता है तब तो आप धड़ाधड़ दिखाते हो या लिखते हो कि ये हो गया, वो हो गया। जब पार्लियामेंट या राजनीति में कोई गड़बड़ करता है तो बहुत हल्ला मचता है। यदि किसी आईएएस अफसर का मामला आता है तब भी ऐसी ही बात होती है। लेकिन यदि मीडिया में कोई गड़बड़ करता है तब आप क्यों नहीं उसे प्रमुखता से दिखाते या लिखते? आखिर यह भी तो जिम्मेदारी ही है। मीडिया के किसी जिम्मेदार व्यक्ति के द्वारा कोई गलती की जाती है तो उस पर उंगली कौन उठायेगा? यह जिम्मेदारी आखिर किसकी है?

'रांची एक्सप्रेस' को स्वर्ण जयंती पर फिर ढेर सारी शुभकामनाएं। भगवान कृपा करें और आपका अखबार पांच हजार साल तक छपता रहे। मैं चार-पांच बार रांची आ चुका हूं और दो बार दिल्ली में भी मिला हूं आपसे। लगभग दो वर्ष पहले मैं रांची आया था। एयरपोर्ट से मैं और मुकेश खन्ना, अर्जुन मुंडा जी के साथ एक ही कार में चाईबासा गये। तब अर्जुन मुंडा जी ने ही मेरे हाथों में 'रांची एक्सप्रेस' की कॉपी दी थी। उस दिन इसमें मेरी तस्वीर भी छपी थी और मुझसे संबंधित समाचार भी प्रकाशित हुआ था। पुनः बहुत-बहुत बधाई।

●●●

एक तमन्ना जो दफन हो गयी!

✍ मुश्ताक परवेज,

यह जानकर बड़ी खुशी हुई कि दैनिक 'रांची एक्सप्रेस' 50वें वर्ष में प्रवेश कर गोल्डन जुबिली मनाने जा रहा है। हमारे सम्पूर्ण परिवार की ओर से 'रांची एक्सप्रेस' समूह को बहुत-बहुत शुभकामनाएं।

'रांची एक्सप्रेस' का मैं नियमित पाठक हूं। हमारे स्व. पिता जी रमजान शाह 'रांची एक्सप्रेस' के उस समय से पाठक थे जिस समय यह पत्र साप्ताहिक के रूप में छपता था। हमलोग पहले गिरिडीह जिले में थे। बाद में बोकारो जिले में आ गये, जहां के नावाडीह प्रखंड अंतर्गत मूंगो ग्राम में रहने लगे। हमारे स्व.पिता जी 'रांची एक्सप्रेस' के नियमित पाठक थे और आज तक हम भी इसके नियमित पाठक हैं। हमारे घर 'रांची एक्सप्रेस' के सिवा दूसरा अखबार आज तक नहीं लिया गया।

पूरा गांव एकत्र!

हमारे पिता जी 'रांची एक्सप्रेस' के कितने पक्के पाठक थे, इस बात को जानने के लिए कई दशक पीछे जाना होगा। बात 1970-71 की है। उस समय हमारे गांव में 'रांची एक्सप्रेस' की चार प्रतियां आती थीं। पटना के 'आर्यावर्त' की एक प्रति आती थी, जो एक दिन पुरानी होती थी। मुझे एक घटना याद आती है- उस समय मैं दूसरी जमात में पढ़ता था। एक दिन मैंने देखा हमारे घर के दरवाजे पर लोगों की भीड़ जुटी हुई है। मेरे पिता जी जोर-जोर से 'रांची एक्सप्रेस' में छपी एक खबर पढ़कर लोगों को सुना रहे थे। महिलाएं पेपर में छपी फोटो देखने के लिए व्याकुल थीं। यह समाचार था- रामगढ़ के एक सीपीआई नेता की हत्या और हत्यारे के फरार होने से संबंधित। इस समाचार को सुनकर सभी लोग बहुत दुःखित थे। उन दिनों संचार साधन बहुत कमजोर थे, खासकर ग्रामीण क्षेत्रों में। गांव के लोगों को इस घटना की जानकारी 'रांची एक्सप्रेस' से ही मिली थी। हम लोग अखबार आने के इंतजार में रहते थे। कब अखबार आये और देश-दुनिया की खबरों की जानकारी मिले। समय बीतता गया। वर्ष बीतते गये। लेकिन मेरे पिताजी ने 'रांची एक्सप्रेस' पढ़ना नहीं छोड़ा।

इस अखबार से उनको कितना लगाव था, यह एक घटना से जाहिर होता है। बात 1985-86 की है, तब दो-तीन और अखबार बाजार में आ गये थे। एक दिन हमारा हॉकर 'रांची एक्सप्रेस' के बजाय एक दूसरा अखबार देकर चला गया। जब वह चला गया, तब पता चला कि जो अखबार वह दे गया वह 'रांची एक्सप्रेस' नहीं है। पिता जी का मूड खराब हो गया। उन्हें बहुत गुस्सा आया। उन्होंने दोपहर को भोजन ही नहीं किया।

पिता जी ने हम सबको समझाते हुए कहा कि 'रांची एक्सप्रेस' में देश के कई नामी लेखकों और पत्रकारों के लेख छपते हैं और मैं संपादक बलबीर दत्त की टिप्पणियां और लेख नियमित तौर पर पढ़ता हूं। नहीं पढ़ने से एक अभाव महसूस होता है।

संपादक जी के लिए सत्तू!

मेरे पिता जी ने सन् 1989-90 में एक इच्छा जताया और कहा कि बेटा मेरी तमन्ना है कि एक बार 'रांची एक्सप्रेस' के उस संघर्षशील संपादक बलबीर दत्त से भेंट करूं, जिन्होंने अपने कलम से छोटानागपुर को एक दिशा दी है। एक सप्ताह बाद मेरे पिता जी ने अपने साथ पन्ना वाला भागलपुरी गमछा और शुद्ध चने का दो किलो सत्तू लिया और बोले कि कलम के उस पुजारी से भेंट कर उन्हें यह भेंट देना है। मेरे पिता जी काफी जईफ थे, हम दोनों बाप-बेटा बस से रवाना हुए। जैसे-तैसे रांची में 'रांची एक्सप्रेस' कार्यालय पहुंचे। चपरासी से बोलकर अंदर गये। वहां एक सज्जन बैठे थे। मैंने

और मेरे पिता जी ने उनको अभिवादन कर पूछा कि संपादक जी कहां हैं, उनसे भेंट करनी है। कृपया भेंट करवा दें। उस व्यक्ति ने हम दोनों को नीचे-ऊपर गौर से देखा और कहा कि संपादक जी दिल्ली गये हैं, किसी सम्मेलन में भाग लेने। फिर उन्होंने पूछा- संपादक जी से क्या काम है? मेरे पिता जी बोले- हम गिरिडीह से आये हैं। मैं 'रांची एक्सप्रेस' का पाठक हूं। इस पर उस व्यक्ति ने नाराजगी जाहिर करते हुए मेरे पिता जी से कहा- पाठक हैं तो अखबार पढ़ें, संपादक से भेंट करने की क्या तुक है? मेरे पिता जी बहुत ही निराश भाव से बोले- श्रीमान् कुछ भेंट संपादक जी के लिए लाया था, क्या आप उन्हें आने पर दे देंगे। मेरे पिता जी ने झोले से निकाल कर सत्तू और गमछा उन्हें दे दिया और पूछा- श्रीमान् क्या मैं आपका परिचय जान सकता हूं। मुझे आज भी याद है कि उन्होंने अपना नाम राम इकबाल सिंह बताया था। उसके बाद हम दोनों बाप-बेटा रांची बस डिपो आये। बस में बैठकर घर चले आये। सन् 2009 में 92 वर्ष की उम्र में मेरे पिता जी का इंतकाल हो गया और इसी के साथ संपादक बलबीर दत्त जी से भेंट करने की तमन्ना मेरे पिता जी के साथ दफन हो गयी।

श्रीमान् यह पत्र छपेगा या नहीं, यह मैं नहीं जानता। निवेदन है कि यह पत्र संपादक जी जरूर पढ़ें। यदि यह पत्र छपता है तो हमारे लिये यह सौभाग्य की बात होगी और शायद हमारे पिताजी को श्रद्धांजलि भी।

ग्राम- मूंगो, मेन गली, पोस्ट-गुंजरडीह, वाया- भंडारीडीह, जिला- बोकारो-829132

अखबार ने कई नेता बनाये

✍पी.एन. सिंह , *(कांग्रेस नेता, सदस्य अ.भा. कांग्रेस कमेटी)*

'रांची एक्सप्रेस' के पचास वर्षों का सफर कथा-कहानियों की तरह लगता है। यह अखबार उस समय शुरू हुआ जब दक्षिण बिहार के इस पटारी क्षेत्र को अपनी आवाज के साथ-साथ एक हमदर्द की जरूरत थी। कहना चाहिए कि 'रांची एक्सप्रेस' ने इन दोनों जरूरतों को पूरे दमखम के साथ पूरा किया। मैं अब भी इसे इसके संस्थापक सीताराम जी मारू की दुर्दमनीय इच्छा शक्ति और संघर्ष क्षमता का प्रतीक मानता हूं। उन्होंने, जैसा कि हमें ज्ञात है, साधनों-संसाधनों के अभाव के बीच अपने बेजोड़ हौसले के बल पर अपनी महत्वाकांक्षी यात्रा फर्श से शुरू की थी और देखते-देखते वह 'रांची एक्सप्रेस' के साथ अर्श पर पहुंच गये। उनकी इस सफलता में यशस्वी सम्पादक बलबीर दत्त जी का ऐतिहासिक योगदान रहा।

सबके हाथ में 'रांची एक्सप्रेस'

1976 में 'रांची एक्सप्रेस' का रूपान्तरण दैनिक के रूप में हुआ और इसके साथ झारखंड में हिन्दी पत्रकारिता के एक नये युग का सूत्रपात भी हुआ। जल्दी ही 'रांची एक्सप्रेस' सबकी जरूरत बन गया। तब फिरायालाल चौक (अल्बर्ट एक्का चौक) पर राजनीतिज्ञों, समाजसेवियों, विद्यार्थियों, शिक्षकों की भीड़ जुटती थी। सबके हाथों में 'रांची एक्सप्रेस' होता था। खबरों और लेखों पर चर्चा भी होती थी। रामप्रवेश द्विवेदी, रौशनलाल भाटिया, वसंत लाल और कभी-कभी जनसंघ के ननी गोपाल मित्रा के अलावा कई पत्रकार भी चर्चा में शामिल होत थे। तब रांची का माहौल कस्बाई शहरों जैसा था और इसकी अपनी निजता थी। लोग एक-दूसरे के सुख-दुःख में शामिल होते थे। तब रांची में आज की तरह दूरियां और औपचारिकता नहीं थी। इसी लिए हमें 'रांची एक्सप्रेस' अपने घर का अखबार लगता था और इससे नजदीक का नाता जुड़ गया था। इसे पढ़े बिना चैन नहीं मिलता था।

हालांकि 'रांची एक्सप्रेस' को संघ परिवार प्रेरित अखबार कहा जाता था, लेकिन खबरों के प्रकाशन में आमतौर पर भेदभाव नजर नहीं आता था। राजनीतिक कार्यकर्ताओं को 'रांची एक्सप्रेस' से विशेष लगाव था, क्योंकि बाहर के अखबारों

में उनकी खबरें नहीं के बराबर छपती थीं। हमें लगता था कि हमारा एक अपना अखबार है जिसमें क्षेत्र को महत्व मिलता है। 'रांची एक्सप्रेस' में कांग्रेस की आलोचना सबसे अधिक छपती थी, लेकिन हमें बुरा नहीं लगता था, अगर हमारी गलती होती थी तो हम उसे सुधारने का प्रयास करते थे। इस प्रकार कहा जा सकता है कि 'रांची एक्सप्रेस' ने इस क्षेत्र में न केवल पत्रकारों का निर्माण बल्कि नेताओं के निर्माण का भी अपना दायित्व निभाया। 'रांची एक्सप्रेस' का शुरू से ही दायित्वपूर्ण पत्रकारिता से सरोकार रहा है। पिछले 50 वर्षों में रांची ने कई दंगों का दंश झेला है। इस दौरान 'रांची एक्सप्रेस' की समन्वयकारी भूमिका न केवल उल्लेखनीय बल्कि सराहनीय रही है। अपने सामाजिक सरोकारों के कारण ही 'रांची एक्सप्रेस' सफलता की सीढ़ियां चढ़ते हुए लोकप्रियता के शिखर पर पहुंच गया।

'जनसत्ता' की टिप्पणी

1980 का दशक 'रांची एक्सप्रेस' का स्वर्णकाल था। इसी दौरान अखबार कम्प्यूटरीकृत हुआ और झारखंड में अखबार का मतलब 'रांची एक्सप्रेस' हो गया। तब दिल्ली से प्रकाशित अखबार 'जनसत्ता' में यह टिप्पणी पढ़कर हमलोग रोमांचित हो गये थे कि 'रांची एक्सप्रेस' क्षेत्रीय स्तर पर सबसे अधिक सुसंपादित अखबारों में से है और पूर्वी क्षेत्र में पहला कम्प्यूटरीकृत अखबार है। तब हमलोग दिल्ली से प्रसारित आकाशवाणी का एक राष्ट्रीय कार्यक्रम सुनना नहीं भूलते थे जिसमें ज्वलन्त समस्याओं पर अखबारों की सम्पादकीय टिप्पणियां प्रसारित की जाती थी, इनमें क्षेत्रीय अखबारों में 'रांची एक्सप्रेस' की सम्पादकीय टिप्पणियां भी शामिल रहती थीं।

सिख समुदाय का प्रिय अखबार

✍ **डा. आर.एस. गांधी,** *(अध्यक्ष तख्त श्रीहरिमंदिरजी प्रबंधक कमेटी, पटना साहिब)*

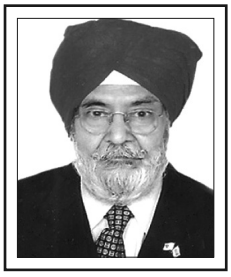

वह भी क्या दिन था जब गुरु पर्व पर कड़ाके की ठंड में रांची की सड़कों पर निकलने वाली प्रभातफेरी की खबर पढ़ने के लिए रांची का सिख समाज सुबह-सुबह 'रांची एक्सप्रेस' को पाने को बेचैन रहता था। चाहे वह सिख बहुल पेपी कम्पाउंड रहा हो या मेन रोड या रातू रोड। बेचैनी और ललक आज भी है पर वैसी नहीं। अपने क्षेत्र और समय के एकलौते अखबार 'रांची एक्सप्रेस' की न केवल रांची बल्कि सम्पूर्ण छोटानागपुर में तूती बोलती थी। हाथों में 'रांची एक्सप्रेस' जब तक न आ जाये तब तक सुबह होने का ही एहसास नहीं होता था। हमें यह जानकार अति प्रसन्नता हुई कि 'रांची एक्सप्रेस' ने अपनी सेवा यात्रा के पचास वर्ष पूरे कर लिये हैं।

गुरुपर्व के मौके पर

छोटानागपुर मेरा बराबर आना-जाना होता रहा है। मेरे कई करीबी आज के झारखंड के विभिन्न भागों में बसे हैं। डाक टिकट के संग्रह के शौक के कारण छोटानागपुर में लगने वाली प्रदर्शनियों में भी मैं भाग लेता रहा हूं। पेशे से प्राध्यापक रहा, सो सुबह की भूख नाश्ते से कम अखबार पढ़ने से ज्यादा मिटती है। मैंने रांची में ऐसा अनुभव किया कि सन अस्सी के दशक में वहां के सिख समाज का यह अपना अखबार था। आज भी है लेकिन झारखंड में अखबारों की बढ़ रही भीड़ में यह थोड़ा कम दिखता है। अब तो वहां राष्ट्रीय अखबारों के बीच ही मारा मारी है। बावजूद इसके खबरों के चयन या उन्हें परोसने के जो तरीके 'रांची एक्सप्रेस' में अपनाये जाते हैं वे दूसरे अखबारों में नहीं।

इस अखबार को गुरू पर्व के मौके पर विज्ञापन की चाह भी नहीं। पहले भी नहीं थी और आज भी नहीं है। जबकि दूसरे अखबार ऐसे आयोजनों पर विज्ञापन प्राप्त करने के लिये अभियान चला देते हैं। चाहे श्री गुरू सिंह सभा रांची में

कोई कार्यक्रम हो या सुदूर चतरा जिले के हंटरगंज के गुरूद्वारा में गुरु पर्व, 'रांची एक्सप्रेस' की पैनी नजर इन कार्यक्रमों को कवर करने पर गड़ी रहती थी। हो भी क्यों नहीं इसके संस्थापक संपादक श्री बलबीर दत्त की भी तो सिख धर्म और सिख गुरुओं में आस्था जुड़ी है। कहने का तात्पर्य यह कि सिख गुरूओं की जयंती के अवसरों पर 'रांची एक्सप्रेस' में विशेष आलेखों का प्रकाशन और गुरूपर्व के मौके पर आयोजित समारोहों का विशेष कवरेज बताता रहा है कि यह आज के झारखंड की साध संगत का लोकप्रिय अखबार है।

चालीस वर्षों तक पटना विश्वविद्यालय में प्राध्यापकी करने के दौरान मैंने महसूस किया कि सूबे के किसी भी हिस्से में अखबार का प्रकाशन क्यों न हो, उसकी नजर राजधानी पर ज्यादा रहती है। 'रांची एक्सप्रेस' जो कभी दक्षिण बिहार या यूं कहें छोटानागपुर का पॉपुलर पत्र था जरूर, लेकिन उसकी निगाह राजधानी पटना पर ज्यादा केन्द्रित रहती थी। जहां तक मुझे स्मरण आता है सन 1980 के आसपास 'रांची एक्सप्रेस' ने पटना में अपने कार्य क्षेत्र का विस्तार कार्यालय खोल कर किया। उसके बाद यह पटना में सहज रूप से उपलब्ध होने लगा।

1984 के दंगे

सन् 1984 में देशव्यापी हिंसा के दौरान 'रांची एक्सप्रेस' जिस तरीके से छोटानागपुर के सिखों के साथ खड़ा रहा उससे वहां के सिखों को बड़ी राहत मिली। मैं तो दंग रह गया हाल के महीने में 'रांची एक्सप्रेस' में बिहार के गुरूद्वारे और तख्त श्री हरिमंदिरजी प्रबंधक कमिटी पटना साहिब के चुनाव तथा भावी कार्यक्रमों के बारे में प्रकाशित खबरों को पढ़ कर। बिहार की साध संगत की गतिविधियों से झारखंड की संगत को अवगत कराने में 'रांची एक्सप्रेस' की दिलचस्पी स्पष्ट करती है कि यह सिखों का अपना अखबार है।

गहराई में है पत्रकारिता की जड़

✍**राजीव रंजन प्रसाद,** *(पूर्व डाइरेक्टर जनरल पुलिस, झारखंड)*

अखबार सार्वजनिक जीवन के साथ ही निजी जीवन का भी महत्वपूर्ण हिस्सा है। इसकी भूमिका को नजरअंदाज करना मुश्किल है। दुनिया में मुझ जैसे करोड़ों लोग हैं जिन्हें सुबह एक प्याली गर्म चाय के साथ अखबार की तलब होती है। यही आदत है। चाय से ताजगी तभी मिलती है। जब सुबह-सवेरे का अखबार हाथों में हो। आप चाहे देर रात तक न्यूज चैनलों को देखते रहें लेकिन अखबार के बिना दिन फीका लगता है।

पत्रकारिता की मजबूत नींव

वास्तव में समाचारपत्रों की भूमिका इससे बहुत ज्यादा है। अखबार न केवल लोकतंत्र का चौथा खंभा है बल्कि लोकतंत्र की मजबूती भी बहुत हद तक इसी पर निर्भर करती है। इतिहास गवाह है कि जिन देशों में मीडिया स्वतंत्र, निष्पक्ष और जिम्मेदार रहा है वहां न केवल विकास की रफ्तार बढ़ी है बल्कि लोगों में जागरूकता का स्तर भी ऊंचा उठा है।

अखबारों की भूमिका टी.वी. चैनलों, इंटरनेट, रेडियो, सोशल मीडिया आदि से बहुत अधिक व्यापक है।

1986 में मैं रेंज डी आई जी के रूप में पदस्थापित होकर रांची आया। तब भी 'रांची एक्सप्रेस' का ही बोलबाला था। 'रांची एक्सप्रेस' के माध्यम से ही रोज सुबह मुझे और हजारों लोगों को न केवल रांची व झारखंड के समाचारों बल्कि झारखंड के इतिहास, यहां की संस्कृति, झारखंड के लोगों के दु:ख, दर्द अर्थात् हर पहलू को समझने का मौका मिलता था। तब यहां कार्पोरेट तथा औद्योगिक घरानों के अखबारों का पदार्पण नहीं हुआ था। स्थानीय समाचारों की

प्रधानता होती थी। हालांकि तत्कालीन बिहार की और राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय खबरें भी होती थी लेकिन स्थानीय समाचारों की प्रस्तुति के दौरान अखबार ने निष्पक्षता के बलबूते जैसी विश्वसनीयता अर्जित की वह काबिल -ए-तारीफ है। 'रांची एक्सप्रेस' में वही बात अब भी है। इसका श्रेय इसके प्रधान संपादक बलबीर दत्त जी को जाता है। उत्तरदायित्वपूर्ण पत्रकारिता के वह प्रतीक हैं। उन्होंने न केवल 'रांची एक्सप्रेस' बल्कि झारखंड की पत्रकारिता को मजबूत आधार दिया है और इसके लिए वह वाकई प्रशंसा के पात्र हैं। झारखंड पर उनकी गहरी पकड़ है।

उन दिनों 'रांची एक्सप्रेस' के अखबारी कागज की क्वालिटी बढ़िया थीं बल्कि प्रिंटिंग और सामग्री भी बढ़िया थी। उन दिनों जब भी जरूरत पड़ती थी तो लोग एक-दूसरे से पूछते थे कि आज का 'रांची एक्सप्रेस' पढ़ा क्या? अथवा क्या आज आपने 'रांची एक्सप्रेस' में फलां समाचार देखा? इसका एक प्रभाव था जिसे आप केवल ड्राइंग रूम या आफिस में ही नहीं बल्कि राह चलते या बाजारों में भी महसूस कर सकते थे। यह बड़ी बात थी। समाज का हर तबका अर्थात् राजनीतिज्ञ, प्रशासक, सरकारी कर्मचारी, व्यापारी, वकील, छात्र अर्थात् किसी भी पेशे के लोग 'रांची एक्सप्रेस' को पढ़े बिना रह ही नहीं सकते थे।

परन्तु समय बदला। 2000 में झारखंड बना और उसके कुछ वर्ष पहले से लेकर बाद के वर्षों में भी अनेक अखबार आये। समाचारों के मामले में 'रांची एक्सप्रेस' की निष्पक्षता भले ही बरकरार रही लेकिन आधुनिकीकरण में वह पिछड़ गया। जबकि ऐसा नहीं होना चाहिए था। 'रांची एक्सप्रेस' का प्रबंधन यदि अब भी प्रयास करे तो उसे पर्याप्त सफलता मिलेगी।

रांची के पत्रों से लगाव

न केवल 'रांची एक्सप्रेस' बल्कि अन्य हिन्दी अखबारों से भी मेरा आत्मिक लगाव है। हिन्दी तथा भाषाई अखबारों में आत्मीयता और अपनेपन की खुशबू है। यह अंग्रेजी अखबारों में कही नहीं मिलती। मुझे रांची के अखबारों से विशेष लगाव है। यही कारण है कि जब बाहर जाता हूं तो अखबार पढ़ने का मन नहीं करता। बस न्यूज चैनल देखकर काम निकाल लेता हूं।

अखबारों में सकारात्मक खबरों को प्राथमिकता मिलनी चाहिए। अब तो मैं गांव में रहता हूं इसलिए महसूस करता हू कि कृषि एवं मौसम से जुड़े समाचारों, आलेख और सूचनाओं को ज्यादा जगह चाहिए। अखबारों को अब प्रकाशित होने वाली सामग्रियों के स्वरूप में बदलाव करना चाहिए। इस संबंध में लोगों की जरूरतों को समझना वक्त की कसौटी हैं।

बहरहाल, 'रांची एक्सप्रेस' को शुभकामनाएं (शायद वे दिन फिर से आयें और लोग 'रांची एक्सप्रेस' का हवाला दें और साथ ही जरूरत पड़ने पर एक-दूसरे से पूछें, 'आज का रांची एक्सप्रेस पढ़ा क्या?'

●●●

संबंधों की मिठास बरकरार

✍**बृजनंदन यादव,** *(वाइस प्रेसीडेंट, दिल्ली लैंड एंड फाइनेंस (DLF) लिमिटेड, दिल्ली)*

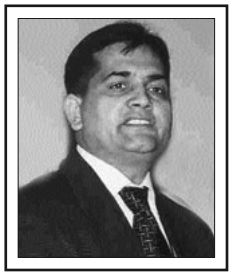

पत्रकारिता, समाचारपत्रों और न्यूज चैनलों से मेरा सम्बन्ध बस इतना है कि एक संवेदनशील पाठक एवं दर्शक के रूप में मैं स्वयं को इस सेक्टर का हिस्सा मानता हूं। वैसे तो इस सेक्टर की स्थिति बिल्कुल दर्पण की तरह है। आप अखबार और चैनल देखकर उसकी पारदर्शिता-निष्पक्षता का स्तर माप सकते हैं। बस सामान्य समझ और देश-समाज-दुनिया की जानकारी होनी चाहिए। तब आप यह आसानी से जान सकते हैं कि कहां कैसी खिचड़ी पक रही है। इसके अलावा कारपोरेट सेक्टर में काम करते हुए अनेक मामले सामने आये जब मीडिया के किसी खास ब्रांड के विषय में यह पक्की जानकारी मिली कि वहां जो कारनामा हो रहा है वह पत्रकारिता के सिद्धान्तों और मापदंडों के बिल्कुल विरुद्ध है।

नाम भूल नहीं सकते

सबसे पहले बात रांची 'रांची एक्सप्रेस' और झारखंड की। झारखंड जैसी प्राकृतिक दृश्यावली आपको आसानी से कहीं नहीं मिलेगी। लोग साफ दिल वाले हैं। आप चाहे पूरी दुनिया घूम लें लेकिन रांची एवं झारखंड को भूल नहीं सकते। आफसोस यह कि झारखंड बनने के बाद इन 12 वर्षों में प्राकृतिक संसाधनों से सम्पन्न इस प्रदेश में संसाधनों का ठीक से उपयोग नहीं हुआ, नतीजा यह है कि आज यह राज्य और यहां के लोग पिछड़ रहे हैं। यह चिन्ताजनक है। अब बात 'रांची एक्सप्रेस' की। इस समाचारपत्र का नाम ही ऐसा है कि आप इसे भूल नहीं सकते।

झारखंड बनने के कुछ वर्ष बाद झारखंड में 34वें राष्ट्रीय खेलों के आयोजन का फैसला किया गया। तब राजधानी रांची के होटवार में मेगा स्पोर्ट्स काम्पलेक्स के तहत इंफ्रास्ट्रक्चर डेवलपमेंट और अनेक स्टेडियम बनाने का फैसला किया गया। इसकी कंसलटेंसी का काम मेनहर्ट, सिंगापुर को सौंपा गया, जबकि कंस्ट्रक्शन के लिए लैंगरूक, सिम्पलेक्स, नागार्जुन कंस्ट्रक्शन जैसी कंपनियां चयनित हुई। तब मैं मैनहर्ट सिंगापुर में जनरल मैनेजर (आपरेशन) था और तकरीबन हर महीने या दो महीने में रांची आता-जाता था। इस दौरान रांची व झारखंड को नजदीक से समझने का मौका मिला। मीडिया के प्रति झुकाव के कारण रांची के अखबारों एवं मीडिया के लोगों को भी देखने-समझने का मौका मिला। रांची में मीडिया, संवेदनशील, जागरूक और समर्पित है। इसमें कोई शक नहीं। पर 'रांची एक्सप्रेस' के मामले में कुछ विशेष कहना चाहूंगा।

नव परिवर्तन जरूरी

पत्रकारिता ही समाज व लोक समुदाय की समस्याओं को सामने लाने के साथ सच्चाई की जानकारी देने का अकेला माध्यम है। आर्थिक विकास के साथ ही समाज के स्वरूप में बदलाव के बाद आज लोगों को अखबार व टीवी चैनलों की कही ज्यादा जरूरत है। किसी समस्या के सर्वांगीण प्रभाव को समझते हुए उसके समाधान की क्षमता केवल पत्रकारिता में ही है। यही आज की सबसे बड़ी सच्चाई है।

मेरे विचार से पत्रकारिता को हर हाल में निष्पक्ष होना चाहिए। तभी देश, समाज, व्यापार, उद्योग अर्थात सभी का उत्थान होगा। लेकिन हाल के दिनों में कुछ घटनाओं को देखकर तकलीफ होती है। कुछ लोगों के स्वार्थपूर्ण ढंग से काम करने का अंदाज ही ऐसा है कि इससे पत्रकारिता की गरिमा पर आंच आती है। कुछ दिनों पहले अन्ना हजारे के मामले में आपने देखा। एक अच्छे आंदोलन को मीडिया के ही एक वर्ग ने किस प्रकार नुक्सान पहुंचाया। हर आंदोलन को उसके महत्व, प्रभाव तथा अन्य कारकों के आधार पर मीडिया में जगह मिलनी चाहिए।

बहरहाल, 'रांची एक्सप्रेस' को बहुत-बहुत शुभकामनाएं। सिद्धान्तों के रास्ते पर आगे बढ़ते हुए यह समाचारपत्र स्वस्थ नवपरिवर्तन के लिए हमेशा तैयार रहे और प्रगति करता रहे। यही कामना है।

नया अध्याय आरंभ करने की जरूरत

✍**बिष्णु लोहिया,** *(सचिव, नागरमल मोदी सेवा सदन, रांची/पूर्व प्रेसिडेंट लायन्स डिस्ट्रिक्ट)*

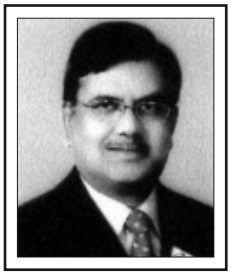

आज से लगभग आधी शताब्दी पहले प्रकृति के इस सुरम्य प्रदेश के केन्द्र में बसे रांची में कुछ चुनिंदा लोगों ने अखबार प्रकाशन के लिए हौसला जुटाया। इनके दिलों में जोश भरा था और जुनून भी। तब संसाधनों का तो घोर अभाव था ही, साथ ही इस कार्य के लिए जमीन भी उपजाऊ नहीं थी। कहने का तात्पर्य यह कि रांची में कोई अखबार या पत्रिका नियमित रूप से नहीं छपती थी। 'आर्यावर्त' और 'विश्वामित्र' जैसे समाचार पत्र पटना और कोलकाता से दिन शुरू होने के कुछ समय बाद या शाम को पहुंचते थे। ऐसे घनघोर अंधेरे में साप्ताहिक 'रांची एक्सप्रेस' का प्रकाशन नियमित तौर पर आरंभ हुआ और इसके बाद लोगों को समाचार पत्र पढ़ने की आदत लगी। फिर यह दैनिक बना और लंबे अर्से तक 'रांची एक्सप्रेस' का वर्चस्व बना रहा।

पत्रकारिता के स्वरूप में बदलाव

चाहे प्रिंट मीडिया की बात हो या इलेक्ट्रानिक मीडिया की लेकिन एक बात सभी जगह समान है। नकारात्मक खबरों का बोलबाला है, जिसके भार से सकारात्मक व सर्जनात्मक समाचार दब जाते हैं। चाहे कोई समाजसेवा का कितना भी उल्लेखनीय कार्य करे लेकिन अपराध, भ्रष्टाचार और राजनीति के सामने वैसे समाचारों की एक नहीं चलती। इस परिदृश्य में बदलाव होना चाहिए।

ऐसे वातावरण में पिछले 50 वर्षों से 'रांची एक्सप्रेस' का उन्हीं पुराने लेकिन सदाबहार मूल्यों, वैचारिक चेतना, निष्पक्षता एवं विश्वसनीयता के साथ लगातार प्रकाशित होते रहना बेहद प्रशंसनीय है। इस अखबार ने झारखंड को अखबारी संस्कृति दी और आज भी यदि ऐसे हजारों लोग हैं जिन्हें रांची एक्सप्रेस पढ़े बिना खाना हजम नहीं होता तो इसकी हकीकत को समझने की जरूरत है। भईया... यही तो इस अखबार की पूंजी है।

मर्यादा का निर्वाह

लेकिन इस सच्चाई से भी मुंह नहीं छुपाना चाहिए कि 'रांची एक्सप्रेस' के पुराने पाठकों व प्रशंसकों के मन में आज इस अखबार की स्थिति को देखकर असंतोष है। संसाधन, तकनीक तथा वर्चस्व के मामले में समय के अनुरूप बदलाव न होने के कारण 'रांची एक्सप्रेस' कुछ मायने में अन्य अखबारों के मुकाबले में नहीं है। लेकिन पिछड़ा नहीं है और वह फिर कभी भी मार्केट लीडर बन सकता है। जिन लोगों को असंभव शब्द पर भरोसा नहीं है उनके लिए यह राहत की बात है। इसके लिए 'रांची एक्सप्रेस' के कलेवर को दुरुस्त करने, प्रिंटिंग टेक्नालॉजी के अपग्रेडेशन और उपयोग में आनेवाले पेपर की क्वालिटी में सुधार करने की जरूरत है। लोग बेहतर प्रोजेक्शन के साथ-साथ अधिकाधिक समाचारों का कवरेज भी चाहते हैं। 'रांची एक्सप्रेस' इस जरूरत को भी पूरा करे तभी बात बनेगी। मैं चाहूंगा कि 'रांची एक्सप्रेस' जन मनोभावनाओं को समझकर इन सारी आकांक्षाओं पर खरा उतरते हुए नये जोश से आगे बढ़े।

'रांची एक्सप्रेस' के साथ सबसे उल्लेखनीय विशेषता यह है कि यह अपनी मर्यादा से कभी डिगा नहीं और न ही डरा। आज तक इस अखबार के मामले में समाचारों में किसी प्रकार के लेन-देन या प्रलोभन की बात मैंने नहीं सुनी। इस मामले में सारा श्रेय बलबीर दत्त जी को जाता है। उन्हें समाचारपत्र संपादन कार्य में महारत हासिल है। उनके तजुर्बे और

ओजस्विता का कोई जवाब नहीं और ओजस्विता भी लाजवाब है। लीक से अलग हटकर वह कसौटी पर खरे उतरे हैं। पत्रकारिता के क्षेत्र में उन्होंने कई दूरदर्शी और साहसिक कदम उठाये हैं। मेरा परिवार 200 साल पहले राजस्थान से 'रांची आनेवाला पहला मारवाड़ी परिवार था। 'रांची एक्सप्रेस' ने इस पर एक रोचक फीचर प्रकाशित किया। लायंस क्लब के डिस्ट्रिक्ट प्रेसिडेंट के रूप में मेरे नेतृत्व में सर्द रातों में दूरवर्ती क्षेत्रों में ठिठुरते गरीबों के बीच नि:शुल्क कंबल बंटे और 'रांची एक्सप्रेस' में बिना किसी प्रकार का अनुरोध किये इसकी सराहना में संपादकीय टिप्पणी छपी। बहरहाल कहने का मतलब यह है कि 'रांची एक्सप्रेस' में चाहे जितनी कमियां हों पर यह वैसे गिने-चुने अखबारों में एक है जो आम जन के साथ हमेशा खड़ा है।

प्रामाणिकता और साख रांची एक्सप्रेस की पूंजी

✍डा. समर सिंह, *(प्रदेश अध्यक्ष, भाजपा शिक्षा प्रकोष्ठ एवं चिकित्सक)*

झारखंड में पत्रकारिता की आधारभूत संरचना रचने में रांची एक्सप्रेस ने एक युग का निवेश किया है। अब यह प्रकाशन के पचासवें वर्ष में प्रवेश कर चुका है। आज भले ही ऊपरी तौर पर यह नजर आ रहा हो कि औद्योगिक घरानों, कारपोरेट हाउस और प्रबंधकों ने तकनीक एवं भारी भरकम पूंजी के बल पर पत्रकारिता को अपने वश में कर लिया है लेकिन सच्चाई यही है कि प्रामाणिकता, साख, विश्वसनीयता व पारदर्शिता पत्रकारिता की सबसे बड़ी पूंजी है। रांची एवं झारखंड के परिप्रेक्ष्य में आज रांची एक्सप्रेस की प्रामाणिकता और साख अन्य अखबारों से बहुत आगे है। आज भारी भरकम, रंगीन और समाचारों को प्रोडक्ट की तरह परोसने वाले अखबार भले ही आम जनमानस को आकर्षित करते हों, लेकिन हकीकत यही है कि आज भी पाठकों में किसी घटना विशेष के संदर्भ में प्रामाणिक खबरों और विचारपूर्ण लेखों की जब भूख जगती है और वे सच के नजदीक पहुंचना चाहते हैं तो केवल साख के कारण रांची एक्सप्रेस पढ़ना पसंद करते हैं।

रांची एक्सप्रेस का संपादकीय पृष्ठ, विविध ज्वलंत समसामयिक विषयों पर फीचर, आलेख के साथ संजीवनी पृष्ठ भी लाजवाब है। अखबार के स्तर को आरंभ से ही बरकरार रखने का श्रेय पूरी तरह विद्वान एवं अनुभवी संपादक बलबीर दत्त को ही जाता है। श्री दत्त ने कड़े मापदंड तय किये और उसका अनुपालन आज भी हर स्तर पर हो रहा है। इसका परिणाम यह हुआ है कि रांची एक्सप्रेस की पत्रकारिता दुर्गुणों का शिकार नहीं हुई। अनेक बार रांची एक्सप्रेस पर दक्षिणपंथी होने अथवा भावनाओं में बहने के भी आरोप लगे पर प्रखर राष्ट्रवादी सोच से ओत-प्रोत जो खबरें और आलेख इस अखबार में छपते हैं वे अत्यत्र दुर्लभ है। रांची एक्सप्रेस से मेरा भावनात्मक लगाव है और पाठकों को चिकित्सा परामर्श देने के दौरान मेरा यह सौभाग्य रहा कि मैं इस समाचारपत्र का अंग रहा।

किसी भी विषय पर संपादक व संपादकीय विभाग के सदस्यों के साथ ही विद्वान लेखकों के सोच की गहराई एवं उसे अभिव्यक्त करने का तरीका राष्ट्रवाद, देशभक्ति, सर्वधर्मसमभाव, ये सारी बातें रांची एक्सप्रेस की धरोहर हैं। इस अखबार ने न केवल झारखंड की पत्रकारिता बल्कि हिन्दी व भाषाई पत्रकारिता को एक नयी राह दिखाई है। लेकिन बदलते दौर में पत्रकारिता एवं तकनीक के आधुनिकीकरण के कारण पाठकों की बढ़ती अपेक्षाओं तथा तीव्र प्रतिस्पर्धा को भी ध्यान में रखने की जरूरत है। अपने आपको कसौटी पर कसना समय की मांग है।

रांची एक्सप्रेस ने हर चुनौती स्वीकार की है और बदलते दौर में हम आशा करते हैं यह अखबार इसमें कामयाब

होगा। पाठकों के साथ ही झारखंड के आम लोगों की भी चाहत यही है कि यह झारखंड का अग्रणी अखबार बना रहे।

आजकल जब-तब दृश्य श्रब्य मीडिया, सोशल मीडिया आदि के कारण हिन्दी पत्रकारिता व अखबारों पर ग्रहण लगने की बात जोर-जोर से उछाली जाती है। यह निरर्थक बात है। प्रिंट मीडिया का कोई विकल्प हो ही नहीं सकता।

जहां से मैंने कलम पकड़ना सीखा

✍ **ज्ञानवर्द्धन मिश्र,**
(पूर्व प्रभारी संपादक 'आज' पटना-रांची, 'पाटलिपुत्र टाइम्स' पटना, 'हिन्दुस्तान' धनबाद, पूर्व संपादक 'सन्मार्ग', रांची)

समझ में नहीं आता कहां से शुरू करूं। उस 'रांची एक्सप्रेस' से जो साप्ताहिक था या उस 'रांची एक्सप्रेस' से जिसे छोटानागपुर का प्रथम हिन्दी दैनिक होने का गौरव प्राप्त हुआ या उस 'रांची एक्सप्रेस' से जिसने आफसेट मशीन पर छपकर अपनी एक अलग पहचान बनायी। स्मृतियों की त्रिवेणिका में कई ऐसी सुनहरी यादें हैं जो जेहन में धमाचौकड़ी मचा रही हैं। तब के छोटानागपुर की आवाज 'रांची एक्सप्रेस' के 50 वर्ष के सफरनामे में कई उतार-चढ़ाव आये, लेकिन पत्र अपनी नीति से नहीं डिगा। यह कहने में कोई अतिशयोक्ति नहीं कि इस सफरनामे का सारा श्रेय इसके कुशल 'चालक' और तब के छोटानागपुर और आज के झारखंड में पत्रकारिता के पर्याय बलबीर दत्त को ही जाता है। इन 50 वर्षों की 'रांची एक्सप्रेस' की सेवा-यात्रा में अनेक यात्री शामिल हुए जो आज देश के प्रमुख पत्रों में उच्च पद पर आसीन हैं। मिशन की पत्रकारिता का जो ध्येय रहा, सही मायने में 'रांची एक्सप्रेस' इसका ज्वलन्त प्रमाण है। इसने न तो उद्योग का रूप लिया और न ही पत्र के संचालकों ने इसे 'प्राडक्ट' बनाया।

बाढ़ के कवरेज की चर्चा

याद आती है सन् 1975 में पटना में आयी प्रलयंकारी बाढ़ की वह दिन। उफनाये सोन नद ने पूरी राजधानी को अपनी चपेट में ले लिया था। उस वक्त के दैनिक पत्रों 'आर्यावर्त', 'इंडियन नेशन', 'सर्चलाइट' और 'प्रदीप' का परिसर कमर भर पानी में डूबा था। आकाशवाणी से प्रसारण बन्द और रेलगाड़ियों का परिचालन ठप। तब मोबाइल का जमाना नहीं था। दूसरे जिलों के लोग पटना का हाल-समाचार जानने को बेताब। लेकिन कोई चारा नहीं। कलकता और दिल्ली से ही रेडियो के जरिये कुछ खबरें प्रसारित हो रही थीं। पानी घटा लेकिन पटना से पत्रों का प्रकाशन कुछ दिनों तक अवरुद्ध ही रहा। हां, दक्षिण पटना में बाढ़ का प्रकोप नहीं था और उस इलाके में इक्का-दुक्का वाहन गया के लिए चल रहे थे। मैंने एक रिपोर्ट तैयार की और उसी क्षेत्र के एक डाकघर से लिफाफा 'रांची एक्सप्रेस' के लिए गिराया। छोटानागपुर वासियों के बीच यह पहली रिपोर्ट थी जो 'रांची एक्सप्रेस' में तीन-चार पेज में सचित्र छपी। पटना डेटलाइन से बाढ़ की विस्तृत रिपोर्ट पढ़ने का मौका 'रांची एक्सप्रेस' ने ही पहले-पहल दिया। जो इन पंक्तियों के लेखक द्वारा प्रेषित था। बात आयी गयी खत्म हुई, लेकिन कुछ ही दिनों के बाद मुझे एक मनीआर्डर प्राप्त हुआ तो मैं चौंका। प्रकाशित रिपोर्ट की यह पुरस्कार राशि थी जो 'रांची एक्सप्रेस' से मुझे पहली बार मिली। इसके बाद 'रांची एक्सप्रेस' से मेरा जुड़ाव और गहराया। पूज्य पितृश्री रामजी मिश्र 'मनोहर' के संबंध पत्र के संचालक आदरणीय सीताराम मारू और संपादक बलबीर दत्त जी से पहले से ही थे।

'रांची एक्सप्रेस' जब दैनिक हुआ तो पटना की पूरी जिम्मेवारी मुझ पर सौंप दी गयी। आज के युग में किसी अखबार में कोई बड़ा कार्यक्रम हो तो क्या नवसिखुये रिपोर्टर को तबज्जो दी जा सकती है। सीधा उत्तर होगा नहीं। लेकिन मुझे

गौरव है कि तबके विदेश मंत्री माननीय अटल बिहार वाजपेयी द्वारा रोटरी मशीन के उद्घाटन के बाद चंद प्रमुख लोगों के साथ हुई ग्रुप फोटाग्राफी में सीताराम मारू जी ने मुझे भी अटलजी के बगल में बिठाया और परिचय कराया कि ज्ञानवर्द्धक जी मेरे युवा रिपोर्टर हैं और इनकी कई पीढ़ियों पत्रकारिता में हैं। अटलजी ने तपाक से कहा-'तब तो इनके रक्त में ही पत्रकारिता है।'

'आज' को आपात सहायता

सुनहरी यादों की श्रृंखला में एक महत्वपूर्ण याद आज के अखबारों के बीच एक-दूसरे को गिराने की प्रवृत्ति को चुनौती देती है। बात सन् 1984 की है। 'आज' का प्रकाशन रांची से प्रारम्भ होना था। एक माह पहले ही दो वरीय साथियों को छोटानागपुर की खास रिपोर्ट के संकलन के लिए भेज दिया गया। पहली बार 34 पृष्ठों का रंगीन परिशिष्ट छोटानागपुर पर छपा। मेन रोड स्थित पंजाब स्वीट्स के पीछे एक जगह किराये पर ली गयी। मशीन आई और तामझाम के साथ काम शुरू हुआ। लेकिन यह क्या। रात में प्रिन्टिंग चालू होते ही मशीन का रॉलर टूट गया। अब क्या हो, सब चिंतित। पत्र के संचालक और संपादक शार्दूल विक्रम गुप्त, तब के जनरल मैनेजर अमिताभ चक्रवर्ती और विज्ञापन प्रबंधक बेनी माधव चटर्जी सब किंकर्तव्यविमूढ़। अचनाक मैंने 'रांची एक्सप्रेस' से मदद लेने की बात कही। किसी को रत्ती भर भी यकीन नहीं था कि 'रांची एक्सप्रेस' से कुछ मदद मिलेगी। आधी रात को 'रांची एक्सप्रेस' के संचालकों में एक पवन मारू को टेलीफोन की घंटा बजायी। जवाब मिला तुरन्त आ जाओ और वहां से सहर्ष एक रॉलर मिला, तब कहीं जाकर काम चला। क्या आज की तारीख में ऐसा संभव है?

यूं तो पत्रकारिता मुझे विरासत में मिली, लेकिन सच पूछिये तो मैंने कलम पकड़ना सीखा 'रांची एक्सप्रेस' से ही। मेरे तीन पत्रकार गुरुओं में एक पितृश्री रामजी मिश्र 'मनोहर' स्वयं तो थे ही, दूसरे थे बलबीर दत्ता और तीसरे बाबू पारसनाथ सिंह।

सिख फौजियों के विद्रोह की फोटोग्राफी

✍ **अब्दुल अजीज खान,** *(पूर्व सदर अंजुमन कमेटी जामा मस्जिद, कुजू)*

'रांची एक्सप्रेस' संवाददाता के रूप में पहली बार मुझे कुजू से कार्य करने का मौका मिला। मुझे कुजू क्षेत्र से 'रांची एक्सप्रेस' का प्रथम संवाददाता 1982 में बनने का गौरव प्राप्त हुआ। रांची के एक परिचित मित्र दीपक स्टुडियो के संचालक कुलदीप सिंह के मार्ग दर्शन में 'रांची एक्सप्रेस' में काम करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

'रांची एक्सप्रेस' के प्रधान संपादक बलबीर दत्त व कार्यालय की टीम के सुझाव व मार्ग दर्शन में मैंने संवाददाता के रूप में काम सीखा। संवाददाता के रूप में कार्य के दौरान मैंने समाचारों के माध्यम से प्रशासन की नजरें खोलीं, इसके अन्तर्गत प्रशासन द्वारा 1986 में कुजू नया बाजार टांड़ में वर्षों से बेकार पड़े यात्री शेड पिलर पर शेड लगाया गया। कई नालियों की खुदाई व भराई भी की गई। सड़कों की मरम्मत हुई। कई अवैध धंधेबाजों की पोल खुली।

मुझे याद है कि 1984 में तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी की हत्या के बाद कुजू में हुई लूटपाट व आगजनी के दौरान मैंने काफी निर्भीकता से पत्रकारिता करते हुए कई तस्वीरें खींचकर छपने के लिए 'रांची एक्सप्रेस' कार्यालय भेजीं। ये तस्वीर प्रमुखता से प्रकाशित की गईं। आपरेशन ब्लू स्टार को लेकर रामगढ़ कैंट के ब्रिगेडियर पुरी को कथित सैनिक विद्रोह में गोली मार दी गयी थी। इसी दौरान कैंट के सिख सैनिक विद्रोह में उपद्रव मचाते हुए कुजू पहुंचे। जहां वर्तमान

में कुजू ओपी है, उसके निकट स्थित छोटानागपुर पेट्रोल पंप पहुंचकर फौजियों का हुजूम देखकर पंप के लोग व आसपास के दुकानदार भाग खड़े हुए। फौजियों के इस दल ने बिना पैसे दिये होटल में खाना पीना किया और लूटपाट की। साथ ही लूटपाट करते हुए पेट्रोल पंप से सभी फौजी अपने-अपने वाहनों में स्वयं तेल भरने लगे। वहीं खड़े ट्रकों को वे लोग जबरन अपने साथ ले जाने की कोशिश करने लगे। इस दौरान एक ट्रक चालक ने इस पर विरोध व्यक्त करते हुए अपने ट्रक को दुर्घटनाग्रस्त कर दिया जिससे गुस्साये सैनिकों ने एक चालक को गोली मार दी। मैंने हिम्मत जुटा कर काफी मुश्किल से सारे घटनाक्रम की तस्वीर खींची , जिसे 'रांची एक्सप्रेस' द्वारा प्रमुखता से छापा गया।

इस क्षेत्र में उस समय के एक मात्र अखबार 'रांची एक्सप्रेस' का आज भी होना गौरव की बात है, जो पत्रकारिता के सही माप दंडों में निखार ला रहा है और संवाददाताओं की इज्जत धूमिल होने से बचा रहा है। 10 वर्षों तक मैंने 'रांची एक्सप्रेस' में कार्य किया। 1992 में अखबार की दुनिया को छोड़कर समाज सेवा में जुड़ा हूं। समाज सेवा से जुड़ने के बाद आजाद बस्ती में मदरसा की स्थापना की जहां सैयद मोहम्मद गौश ने 15 डिसमिल जमीन दी, जिसके लिए लोगों की सहमति के बाद मुझे सदर चुना गया लेकिन मदरसा में राशि गबन होने के कारण मैंने सदर पद को त्याग दिया। मेरी ईमानदारी के कारण रांची में होने के बावजूद कुजू चौक स्थित जामा मस्जिद के सदर के पद पर मेरा मनोनयन किया गया। सदर बनने के बाद मदरसा बना जिसमें अलजमा उल रिजिविया गरीब समाज की स्थापना हुई। जिसके तहत लगभग 30 बच्चों को शिक्षा दी गई। आज उस मस्जिद में मदरसा का अस्तित्व खत्म हो गया है। सन् 2003 से 2008 तक मस्जिद की देखरेख की।

मेरी ख्याति में 'रांची एक्सप्रेस' का काफी महत्वपूर्ण योगदान रहा है। जो मुझे नहीं जानते थे वे भी आज 'रांची एक्सप्रेस' के पत्रकार के रूप में जानते हैं।

गांवों में भी जगायी जनचेतना

✍ **रोशनलाल भाटिया,** *(व्यवसायी एवं बिल्डर, रांची)*

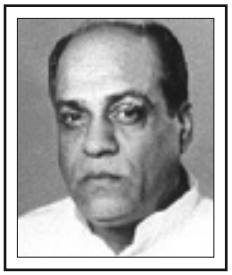

'रांची एक्सप्रेस' का अबाध गति से लगातार पचास वर्षों तक प्रकाशन होना एक बड़ी उपलब्धि है। इस अखबार ने अपने उद्देश्यों को जहां सुस्पष्ट तौर पर रखा वहीं इसका स्वरूप भी स्तरीय रहा जिसकी बदौलत इसने स्वर्णजयंती का मुकाम हासिल किया।

उस समय भी जब यह रांची ही नहीं बल्कि झारखंड का इकलौता अखबार था, इसने लगातार जन समस्याओं को उजागर किया और सामाजिक चेतना जागृत करने का कम किया। साप्ताहिक अखबार के रूप में जब यह प्रकाशित होता था उस समय भी लोग इस अखबार का बेसब्री से इंतजार करते थे। इसने कभी भी पीत पत्रकारिता को प्रश्रय नहीं दिया और जनता को जागरूक करने के उद्देश्य के साथ आगे बढ़ता रहा। अखबार ने पूरे समर्पण और वचनबद्धता के साथ सच्चाई का साथ दिया। 'रांची एक्सप्रेस' ने पत्रकारिता में एक बड़े अभाव की पूर्ति की। इसके लिए समाचारपत्र के सम्पादक बलबीर दत्त और उनकी टीम एवं प्रबंधन को सारा श्रेय दिया जाना चाहिए।

मुझे याद है 1963 में जब साप्ताहिक 'रांची एक्सप्रेस' का प्रकाशन आरंभ हुआ मैं रांची जिला यूथ कांग्रेस का अध्यक्ष था। एक राष्ट्रीय संगठन का अध्यक्ष होने के नाते मैने पूरे झारखंड में गांव-देहातों का दौरा किया। उस दौरान सभा स्थलों पर भी 'रांची एक्सप्रेस' में छपी खबरों की चर्चा होती थी।

मैं ग्रामीणों को प्रोत्साहित करता था कि वे स्थानीय पत्र 'रांची एक्सप्रेस' के माध्यम से अपनी समस्याएं रखें, अपनी

आवाज को बुलंद करें। उस दौर में कई ग्राहक बनाये, लोगों को जागरूक किया। 'रांची एक्सप्रेस' की हर क्षेत्र में अपनी पहचान थी। उस समय अखबार के प्रति जो जुड़ाव था। वह आज भी बरकरार है। आज भी मैं अपने घर और प्रतिष्ठान दोनों स्थानों पर 'रांची एक्सप्रेस' मंगाता हूं। 'रांची एक्सप्रेस' की पत्रकारिता और पत्रकार दोनों ही उच्चकोटि के हैं।

'रांची एक्सप्रेस' के प्रकाशन के इन पचास वर्षों के दौर में कई ऐसे अवसर भी आये जब कुछ अवांछनीय तत्वों ने रांची शहर का माहौल बिगाड़ने का प्रयास किया, लेकिन इस अखबार ने सूझ-बूझ के साथ माहौल को शांत करने की भूमिका निभायी और यह काम 'रांची एक्सप्रेस' आज भी बखूबी निभा रहा है। बारीकी से देखा जाय तो प्रतिस्पर्द्धा की इस दौड़ में कुछ लोग आज भी आग लगाने का काम करते हैं, लेकिन इस मामले में 'रांची एक्सप्रेस' की भूमिका सराहनीय रही है।

उर्दू के एक मशहूर शायर का कथन है- 'खींचो न कमानो को न तलवार निकालो', जब तोप मुकाबिल हो तो अखबार निकालो'। आज इस परिभाषा को बदल दिया गया है। आज स्वार्थपूर्ति के लिए पूंजीपति और कारपोरेट सेक्टर वाले भी अखबार निकाल रहे हैं। लेकिन 'रांची एक्सप्रेस' ने कभी भी न्यूज में व्यूज घुसाने का काम नहीं किया। पचास वर्षों की उम्र के बाद जहां आदमी वृद्धावस्था की ओर अग्रसर हो जाता है, वहीं लम्बे समय तक प्रकाशन से अखबार का तेज बढ़ता है। वह संतुलित होकर सभी मुद्दों को समेटने का काम करता है। 'रांची एक्सप्रेस' को भी अपने तेज में और चमक लाने की जरूरत है ताकि ओल्ड इज गोल्ड की कहावत को सही साबित कर सके।

'एक्सप्रेस' के लेख मेरे लिये दस्तावेज

✍ **फीरोज अशरफ,** *(वरिष्ठ पत्रकार/लेखक, मुंबई)*

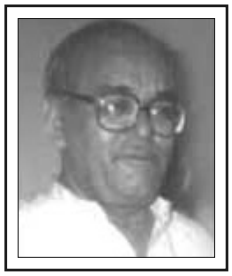

'रांची एक्सप्रेस' को मैं छात्र के रूप में कालेज के दिनों (1963-64) से जानता हूं। जहां तक याद है रांची कालेज के एक मित्र और हमारे स्टूडेंट्स फेडरेशन के सहभागी सुधाकर के हाथों में मैंने यह अखबार पहली बार देखा था। उनसे लेकर उल्टा-पलटा तो रांची के अतिरिक्त खूंटी, पलामू, जमशेदपुर इत्यादि की अलग-अलग खबरें दिखाई दीं। आमतौर पर पटना के 'इंडियन नेशन', 'आर्यावर्त', 'सर्चलाइट' आदि में झारखंड क्षेत्र की खबरें पढ़ने को नहीं मिलती थीं। इसलिये इस छोटे से अखबार में माटी की सुगंध नजर आयी। इसके कुछ दिनों बाद कचहरी रोड पर एक बुकस्टाल में पत्र फिर नजर आया। अच्छा लगा। माटी की महक वैसी ही थी जैसी कि उससे पहले वाले अंक में महसूस हुई थी।

1965 में मुंबई आने पर 'रांची एक्सप्रेस' से, कुछ वर्षों तक नाता टूट गया। अलबत्ता उसी साइज के हजारीबाग से 'छोटानागपुर एक्सप्रेस' और रांची से 'रांची टाइम्स' (संपादक दिलीप दाराद) और बाद में सुधा सिन्हा द्वारा संपादित 'न्यू मेसेज' भी प्रकाशित होने लगे थे। यह तीनों पत्र मेरे मुंबई के पते पर आते थे। उनसे छोटानागपुर या झारखंड की जानकारी मिल जाया करती थी। मैंने भी उन तीनों पत्रों में बहुत कुछ लिखा। लेकिन जैसाकि जानने वाले जानते हैं, अखबार निकालना वाकई तोप चलाने के बराबर है। हर कोई अखबारी-तोप नहीं चला सकता। इसलिये उन तीनों अखबारों का भी वही हश्र हुआ, जो कई अखबारों का होता रहा है। लेकिन गए गुजरे हालात और समस्याओं का शिकार होने पर भी 'रांची एक्सप्रेस' निकलता रहा, बल्कि 1976 में यह दैनिक अखबार हो गया। जहां तक मैं जानता हूं मारू परिवार झारखंड के उन मारवाड़ी परिवारों में नहीं जो केवल व्यापार और मुनाफा कमाने में ही जुटे हैं। जहां तक याद है, स्व. सीताराम मारू एक गंभीर, प्रतिबद्ध, संवेदनशील और जागरूक व्यक्ति थे। उनका रुझान पत्रकारिता की ओर भी था।

सीताराम मारू और भाई बलबीर दत्तजी की जोड़ी ने ही झारखंडी पत्रकारिता की बुनियादों को सशक्त किया। यहां के गरीबों, आदिवासियों और शोषित कामगारों की समस्याओं को उजागर करने लगे। इसमें शक नहीं कि मारूजी का संबंध भारतीय जनता पार्टी से था लेकिन पार्टी अखबार पर हावी नहीं थी।

'रांची एक्सप्रेस' ने अपने पचास वर्षीय जीवन में एक स्वतंत्र, निष्पक्ष, निडर, बेबाक और सत्यवादी की भूमिका निभाई। इस सच्चाई को समझने के लिये पत्र के मालिक और संपादक से ऊपर उठकर इसकी हर पंक्ति को, खबर को, संपादकीय को, विशेष लेखों को, सूचनाओं को यानी हर पन्ने को ध्यान से पढ़ना होगा। इसे कुछ और समझा जाए, मैं प्रतिदिन मुंबई, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, सूरत, पुणे के कई हिन्दी अखबार भी देखता हूं, पढ़ता हूं। उनमें छपी कई महत्वपूर्ण टिप्पणियों इत्यादि की कटिंग रखता हूं।

'रांची एक्सप्रेस' के कई लेख मेरे लिये दस्तावेज होते हैं। उनमें से कई लेखों को विशेषकर मीडिया संबंधित, मैं अपने प्रेस लॉ (जी हां मैं मुंबई विश्वविद्यालय के पत्रकारिता के छात्र-छात्राओं को प्रेस लॉ पढ़ाता हूं) छात्र-छात्राओं को 'रांची एक्सप्रेस' में छपे कई आलेखों की जेराक्स कापियां देता हूं। कुल मिलाकर एक बनिये की दुकान की तरह, 'रांची एक्सप्रेस' में क्या नहीं होता है। शर्त यह है कि आप उसे ध्यान से पढ़ें।

संपादक बलबीर दत्तजी (जिन्हें मैं सम्मान से भाई कहता हूं), ने आज की हौड़ का डटकर मुकाबला किया है। उनमें आज भी आदर्श झलकता है। दफ्तर में जाएं, फोन करें तो वह मुहब्बत के सारे पट खोल देते हैं। मैंने एक से बढ़कर एक संपादकों का अनुभव किया है। यकीनन भाई साहब सबसे अलग एक और ही हस्ती हैं। मारू परिवार से जोड़ी खूब जमी। बीच में रूठा-रूठी हुई मगर एक परिवार की परंपरा की तरह फिर जुड़े भी और आज तक निभा रहे हैं। मालिक-संपादक का ऐसा बेजोड़ रिश्ता कहां देखने को मिलता है?

जहां तक मेरे लेखन का सवाल है, तो मेरे कालम 'पाकिस्ताननामा' को पिछले कई वर्षों से भाई साहब प्रकाशित कर रहे हैं। दुर्भाग्यवश मैंने कोई दूसरा कुछ लिखा ही नहीं। वैसे आपने कुछ और लिखने को भी कहा, लेकिन मुंबई के व्यस्त जीवन में कुछ और लिखना संभव नहीं रहा है। वैसे इन दिनों मुंबई में सैकड़ों झारखंडी युवकों को देखकर उनकी कठिनाइयों और संघर्ष के बारे में लिखने की तैयारी में हूं मैं।

कुल मिलाकर 'रांची एक्सप्रेस' मेरे लिये केवल एक अखबार ही नहीं, उससे बढ़कर और भी बहुत कुछ है। यह 'बहुत कुछ' बताना कठिन है। और हां, इसे हम अकेले नहीं, मेरे घर आने वाले झारखंड के कई नेता पढ़ते हैं। कुछ लोग यहां से जाने के बाद रांची में भाई साहब से मिले भी हैं। एक रिश्ते का भाईचारे का तार-मुंबई से रांची तक-- यह है कमाल 'रांची एक्सप्रेस' का।

'एक्सप्रेस' की एक अलग पहचान

✍ **चन्द्र मोहन प्रसाद,** *(झारखंड राज्य के प्रथम शिक्षा मंत्री, गिरिडीह)*

किसी भी संस्थान के लिये स्वर्ण जयंती वर्ष मनाना वाकई गर्व की बात है। इस स्वर्णिम पल को पाया है संयुक्त बिहार में कई वर्षों तक झारखंड के एकमात्र दैनिक अखबार 'रांची एक्सप्रेस' ने। संयुक्त बिहार एवं झारखंड निर्माण से अब तक पूरे क्षेत्र का सटीक प्रतिनिधित्व 'रांची एक्सप्रेस' करता आया है।

'रांची एक्सप्रेस' अपना स्वर्ण जयंती वर्ष मना रहा है और इसके लिये मैं 'रांची एक्सप्रेस' से जुड़े तमाम लोगों को बधाई देता हूं। मैं 'रांची एक्सप्रेस' से उस समय से जुड़ा हूं जब जिले में केवल एक दो दैनिक ही आते थे। राजनीति में आने के पूर्व से मैं 'रांची एक्सप्रेस' का नियमित पाठक रहा हूं। राजनीतिज्ञ होने के कारण मुझे कई जगहों का दौरा करना पड़ता था, परन्तु प्रत्येक जगह 'रांची एक्सप्रेस' को पाकर मुझे एक आत्म संतुष्टि का अनुभव होता रहा। 'रांची एक्सप्रेस' के संस्थापक स्व.सीताराम मारूजी से नजदीकी के कारण मुझे उनसे कई महत्वपूर्ण विषयों पर संवाद करने का मौका मिला। उनके व्यक्तित्व में उच्च श्रेणी का चारित्रिक और बौद्धिक बल विद्यमान था। मंत्री बनने के पश्चात हालांकि मेरे पास समय का अभाव था फिर भी समय निकाल कर मैं 'रांची एक्सप्रेस' को नियमित रूप से पढ़ता रहा। झारखंड संस्करण से इस अखबार में मुझे पूरे राज्य के समाचारों की जानकारी हो जाती है, जबकि अन्य क्षेत्रीय अखबार अलग-अलग संस्करणों के कारण कुछ दूरी पर ही सिमट कर रह गये हैं। समय की मांग को देखते हुए इस अखबार में कुछ सुधार आवश्यक हैं। इस अखबार में पृष्ठों की संख्या में वृद्धि करने से राज्य के ग्रामीण क्षेत्रों के समाचारों की संख्या में बढ़ोतरी होगी।

एक समय था जब समाचार का जरिया मात्र रेडियो या 'रांची एक्सप्रेस' ही हुआ करता था, परन्तु आज यहां कई अखबारों के बाजार में तेजी से फैलने के कारण 'रांची एक्सप्रेस' कुछ मंद-सा हुआ है। फिर भी लक्की कूपन या अन्य लुभावनी स्कीमों से दूर रहने वाला 'रांची एक्सप्रेस' सादगी के लिये अपनी अलग पहचान रखता है। अखबार के संपादकीय कालम में पाठकों के लिये काफी कुछ उपयोगी होता है। अखबार के संपादक श्री बलबीर दत्त की जूझारू प्रवृत्ति के कारण 'रांची एक्सप्रेस' नयी ऊचाइयों को छूने में कामयाब रहा है। 'रांची एक्सप्रेस' राजनीतिक, ऐतिहासिक, आध्यात्मिक, सामाजिक, घटनाक्रमों को लेकर काफी संजीदगी के साथ अपनी प्रस्तुति देता है। आज राजनीति, प्रशासन, उद्योग, शिक्षा, चिकित्सा सहित सभी क्षेत्रों में मीडिया की आवश्यकता महसूस की जाती है। 'रांची एक्सप्रेस' के पत्रकारों ने पत्रकारिता धर्म की संतुलित प्रस्तुति का कार्य किया है। आज झारखंड के इस अखबार को व्यापक रूप देने की आवश्यकता है।

●●●

सभी धर्मों का सम्मान करता है रांची एक्सप्रेस

✍ **रत्नेश कुमार जैन,** *(वरिष्ठ पत्रकार एवं समाजसेवी, रांची)*

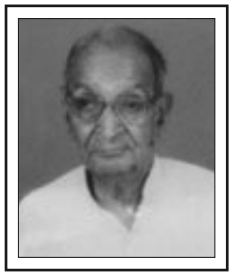

1963 का स्वाधीनता दिवस रांची शहर के लिए अतिमहत्वपूर्ण दिन बना, जब अपने शहर से अपने अखबार 'रांची एक्सप्रेस' का प्रकाशन शुरू हुआ। राज्यपाल अनंत शयनम आयंगर ने इस साप्ताहिक समाचारपत्र का उद्घाटन किया। उस दौर के नामचीन साहित्यकारों, पत्रकारों एवं प्रमुख व्यक्तियों का इसे सहयोग रहा जिस कारण 'रांची एक्सप्रेस' का सफर आज 50 वर्षों के पड़ाव पर पहुंच गया। इस अखबार की कई विशेषताएं तब भी थीं और आज भी है कि यह निरंतर छप रहा है।

अपने शहर की खबरें

पांच दशक की अवधि कम नहीं होती, यह आधी शताब्दी के बराबर है। उस वक्त यहां पटना, दिल्ली के अखबारों का ही वर्चस्व था। दोपहर बाद खबरें पढ़ने को मिलती थीं। एक खालीपन रहता था, इसलिए कि इन अखबारों में हमारे शहर की खबरें लगभग नगण्य रहती थी। ऐसे में 'रांची एक्सप्रेस' ने पत्रकारिता जगत में प्रवेश कर इस अपनत्व के खालीपन को पाट दिया। इससे पहले 'राष्ट्रीय भाषा' नाम से लालपुर चौक से एक दैनिक पत्र का प्रकाशन हुआ था लेकिन कुछ माह बाद बंद हो गया। प्रकाशन की निरंतरता के साथ-साथ 'रांची एक्सप्रेस' की दूसरी सबसे बड़ी विशेषता इसका निष्पक्ष एवं निर्भीक होना है। लगभग 13 वर्षों तक साप्ताहिक के रूप में प्रकाशन के बाद रांची में दैनिक अखबार की कमी की पूर्ति के लिए 'रांची एक्सप्रेस' को दैनिक किया गया। दैनिक का कोई आधारभूत ढांचा न होते हुए भी अखबार के संस्थापक सम्पादक बलबीर दत्त की नेतृत्व क्षमता हर कदम पर साबित हुई। स्व. सीताराम मारू एवं सम्पादक बलबीर दत्त दृढ़ संकल्प व्यक्तित्व के रूप में स्थापित हुए। इनके अथक प्रयास से यह समाचारपत्र काफी आगे बढ़ा।

'रांची एक्सप्रेस' से मेरा सम्बन्ध अगस्त 1963 से ही रहा। लगभग 40 वर्षों का लम्बा समय मैंने इस अखबार के साथ निभाया। सम्पादक बलबीर दत्त एवं प्रकाशक स्व. सीताराम मारू का आत्मीय व्यवहार मिला। मैंने सन् 1972 में 'अहिंसा संदेश' नाम से पत्रिका शुरू की। इस पत्रिका के सभी साहित्यिक समारोहों की अध्यक्षता बलबीर दत्त ने की एवं मुख्य अतिथि के रूप में स्व. सीताराम मारू उपस्थित रहे। मेरा अमृत महोत्सव छह वर्ष पूर्व मनाया गया, जिसकी अध्यक्षता भी बलबीर दत्त ने की। स्व. मारू ने अहिंसा सन्देश के प्रकाशन में लगातार सहयोग किया। स्व. मारू ऐसे सहयोगी व्यक्ति थे, जो मेरे लिए हमेशा पूज्य रहे। सम्पादक बलबीर दत्त का सहयोग अभी तक मिल रहा है। पुराने दौर के पत्रकारों में एनएन सेनगुप्ता, शारदा रंजन पाण्डेय, बीएन झा, आर एन झा, राजदेव तिवारी प्रमुख थे। वर्तमान में सबसे पुराने पत्रकार के रूप में मैं स्वयं तथा डा.भुवनेश्वर अनुज हैं। अनुज जी का भी अखबार से हमेशा अच्छा सम्बन्ध रहा है।

अखबार ने साहित्यकार स्व. राधाकृष्ण के नाम से साहित्यिक पुरस्कार शुरू किया गया, जिसमें देशभर के प्रमुख साहित्यकार आमंत्रित किए जाते रहे हैं। यह गौरवपूर्ण आयोजन अभी तक चल रहा है। आपातकाल में दैनिक स्वरूप में आए 'रांची एक्सप्रेस' ने आपातकाल के पूर्व जे.पी. आन्दोलन में अभूतपूर्व भूमिका निभाई।

इस पत्र को शासन की तरफ से कई बार धमकियां मिलीं, लेकिन यह निर्भीक रहा। मोरारजी देसाई जब प्रधानमंत्री थे, तब इस अखबार की महत्वपूर्ण भूमिका रही। राष्ट्रीय नेता जब रांची आते, 'रांची एक्सप्रेस' परिसर में अवश्य आते।

प्रथम पारिश्रमिक मिलने का रोमांच

✍ **अमरेन्द्र विष्णुपुरी,** *(केन्द्रीय संयुक्त संगठन मंत्री, एकल संस्थान, रांची)*

दैनिक 'रांची एक्सप्रेस' से मेरा संबंध 1978 से है। बात मैं आज से 35 वर्ष पूर्व की कर रहा हूं, जो मुझे 35 वर्षों बाद भी याद है। उस समय मैं मीडिया के नाम पर अखबार एवं रेडियो का ही नाम जानना था। रेडियो सुनना था और अखबार पढ़ता था। इन दोनों में बहुत ज्यादा चुनने का अवसर नहीं था। रेडियो फिलिप्स का था तो अखबार दैनिक 'रांची एक्सप्रेस'। मेरे पिता महालेखाकार कार्यालय, डोरंडा में कार्यरत थे। हीनू स्थित महालेखाकार कार्यालय की सरकारी आवासीय कालोनी (हीनू चौक) में रहता था। इसे बुद्धिजीवी कालोनी माना जाता था।

लोकवाणी से शुरूआत

प्राय: लोग अखबार हॉकर से खरीदते थे। लेकिन कुछ बंधु ऐसे भी थे जो अखबार तो नहीं खरीदते थे किन्तु बड़ी दिलचस्पी से अखबार पढ़ते थे। मेरे आवास के आस-पास ऐसे पड़ोसी थे जो अखबार मांग कर पढ़ते थे और नियमित पढ़ते थे। 'रांची एक्सप्रेस' पढ़ने का एक ऐसा नशा था मानो इसे नहीं पढ़ने पर पागलपन-सा सवार हो जाए।

उन दिनों 'रांची एक्सप्रेस' में सम्पादकीय पृष्ठ पर सबसे नीचे लोकवाणी स्तम्भ प्रकाशित होता था जो काफी लोकप्रिय था। मैने भी 'रांची एक्सप्रेस' में प्रकाशनार्थ कुछ लिखकर भेजा। कुछ दिनों के बाद वह सामग्री 'लोकवाणी' स्तम्भ में मेरे नाम व पते के साथ प्रकाशित हो गयी। सुबह-सुबह जब अखबार पढ़ रहा था तो लोकवाणी में छपे अपने नाम पर अचानक नजर पड़ी। एक बार नहीं बल्कि उसे कई बार पढ़ा बड़ी खुशी हुई, घर में सबको पढ़ाया, सब लोग काफी खुश हुए।

फिर क्या था, लोकवाणी में बराबर लिखने की आदत सी हो गयी। इसी लोकवाणी के माध्यम से 'रांची एक्सप्रेस' के सम्पादक बलबीर दत्त जी से सम्पर्क हुआ। कुछ और लिखने के लिए उन्होंने प्रोत्साहित किया। सम्पादक महोदय का मार्गदर्शन मिला, समसामयिक विषयों पर मैंने लिखना प्रारंभ किया। विशेष लोगों से साक्षात्कार, महापुरुषों की जयंती व पुण्यतिथि, किसी पर्व-त्योहार के अवसर विशेष पर कई आलेख लिखे और सब प्रकाशित भी हुए।

उन दिनों 'रांची एक्सप्रेस' में छपना खास प्रसिद्धि का एक माध्यम था। 'रांची एक्सप्रेस' में मेरे आलेख छपे थे। एक दिन सम्पादक जी से अनौपचारिक रूप से मिलने गया था। शाम 7 बजे का समय था, सम्पादक जी ने अपने ड्राअर से एक बाउचर निकाला उसमें पांच सौ रुपये प्राप्ति का हस्ताक्षर कराते हुए उन्होंने मुझे पांच सौ रुपये दिये। मैं चौंक गया। मैंने कहा कि यह किसलिए है, सम्पादक जी ने बताया कि यह लेखक का पारिश्रमिक है। आपके आलेख 'रांची एक्सप्रेस' में छपे थे उसी का पारिश्रमिक है। आगे भी लिखते रहिए और जब छप जाए तो आप अपना पारिश्रमिक ले लिया करें। मेरे लिए यह सातवां आश्चर्य था। लिखें, वह 'रांची एक्सप्रेस' में छपे भी, उसके बदले पैसे भी मिलें। मुझे लिखने के लिए प्रेरणा मिली 'रांची एक्सप्रेस' से। इतना ही नहीं नगर की जनसमस्याओं को भी लिखकर दिया एवं सचित्र घटनाक्रम छपने लगे। इससे नगर व आस-पास के मुहल्लों में कई महानुभावों से अच्छा आत्मीय संबध भी बन गया।

त्रि-स्तरीय पहचान

विद्यालयीन पढ़ाई तो पूर्ण हो चुकी थी। महाविद्यालय की पढ़ाई मारवाड़ी कालेज से आई.एस.सी. पढ़ाई कर रहा था, इसी बीच अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् का कार्यकर्ता बन गया। इसके माध्यम से भी 'रांची एक्सप्रेस' से अधिक

प्रगाढ़ता बढ़ती गयी। छात्र संगठन से जुड़ने के बाद विद्यार्थी परिषद् की कई महत्वपूर्ण जिम्मेवारियां भी संभाली। इस नाते परिषद् द्वारा प्रति माह कुछ न कुछ छात्रहित में कार्यक्रम किए जाते थे। इस नाते अखबारों में छपना आम बात हो गयी थी। छात्र नेता के रूप में 'रांची एक्सप्रेस' ने मेरी पहचान बनाई थी।

यूं कहा जाए कि एक साथ तीन स्तर पर पहचान विकसित करने का काम 'रांची एक्सप्रेस' ने मेरे साथ किया। वह है लेखक, पत्रकार एवं कार्यकर्ता-नेता। पत्रकारिता जगत में लिखना पढ़ना किसी ने सिखाया तो वह है 'रांची एक्सप्रेस' एवं सम्पादक हैं बलबीर दत्तजी।

कुछ कमियों के बावजूद सराहनीय

✍ **एल.एन. भगत,** *(कुलपति, रांची विश्वविद्यालय, रांची)*

पत्रकारिता को लोकतंत्र के चौथे खंभे की संज्ञा दी गयी है अर्थात् कार्यपालिका, न्यायपालिका और विधानपालिका के साथ ऐसा चौथा अघोषित खंभा जो न केवल देश को मजबूत बनाता है बल्कि लोकतंत्र को पोषित भी करता है। लेकिन वास्तव में पत्रकारिता की भूमिका बहुत अधिक महत्वपूर्ण है। बहुत बार तो ऐसा लगता है कि यदि अखबार न हो तो पूरी दुनिया खाली-खाली लगेगी-जानकारियों से वंचित। देश-दुनिया में जो कुछ भी घटित होता है उसे अखबार ही हमारे सामने लाते हैं।

गुणवत्ता एवं ईमानदारी

जहां तक 'रांची एक्सप्रेस' की बात है, सही मायने में यह अखबार एक समाचारपत्र के साथ-साथ झारखंड में पत्रकारिता का संस्थापक और मार्गदर्शक भी रहा है। इसी के कारण आज पूरे प्रदेश में वैसा वातावरण तैयार हुआ जब अनेक प्रोफेशनल राष्ट्रीय अखबारों के यहां से प्रकाशन का मार्ग प्रशस्त हुआ। 'रांची एक्सप्रेस' ने पिछले 50 वर्षों में गुणवत्ता एवं ईमानदारी से परिपूर्ण पत्रकारिता की पूरे देश में छाप छोड़ी है। किसी समाचार को संकलित करने, उसके संपादन और फिर समाचारों और विचारों के प्रकाशन का 'रांची एक्सप्रेस' का अपना एक तरीका है और कुछेक कमियों के बावजूद वह बेहद प्रशंसनीय है। इसका श्रेय इसके अनुभवी एवं यशस्वी संपादक बलबीर दत्त को जाता है। बलबीर जी का अनुभव उतना ही पुराना है जितनी 'रांची एक्सप्रेस' की उम्र है। उनके नेतृत्व और मार्गदर्शन में 'रांची एक्सप्रेस' अपने मिशन से कभी भी पीछे नहीं हटा।

आज राजधानी रांची के साथ ही झारखंड के अन्य नगरों धनबाद व जमशेदपुर से अनेक वैसे अखबार प्रकाशित हो रहे हैं जो औद्योगिक-व्यावसायिक घरानों के हैं। साथ ही प्रकाशन व्यवसाय एवं मुद्रण टेक्नालॉजी में भी जिनकी विशेषज्ञता है। उनके पास पूंजी तो भरपूर है ही साथ ही अनेक शहरों से प्रकाशन के कारण उनकी लागत काफी कम हो जाती है और वे इससे भरपूर फायदा उठाने में सक्षम हो जाते हैं। दूसरी महत्वपूर्ण बात यह है कि आज अखबार का प्रकाशन मुनाफे के लिए किया जाता है। हालांकि समाज सेवा व देश सेवा भी होती ही है, लेकिन घाटे का सौदा कर सेवा करना अव्यावहारिक ही है। यही आज के अखबारों का दृष्टिकोण भी है। किसी अखबार के अधिक स्थानों से संस्करण होने से कई लाभ अनायास मिल जाते हैं। विज्ञापनों के मामले में भी यह बात लागू होती है। यही कारण है कि दिल्ली, मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश आदि से अपना प्रकाशन शुरू करने वाले कई अखबार तकनीकी आधुनिकीकरण, प्रबंधकीय कुशलता-विशेषज्ञता और भारी-भरकम पूंजी के साथ झारखंड को अपना गंतव्य बना चुके हैं और निरन्तर आगे बढ़ रहे हैं।

प्रभावकारी योजना की जरूरत

दूसरी तरफ 'रांची एक्सप्रेस' जैसा अखबार भी हमारे सामने हैं जिसकी निष्पक्षता, पारदर्शिता और सिद्धांतों के प्रति समर्पणभाव पर आज तक किसी ने संदेह नहीं किया। लेकिन केवल परम्परागत दृष्टिकोण, परम्परागत प्रबंधन और परम्परागत तकनीक के कारण ही यह अखबार कुछ मामलों में शायद उतना आगे नहीं जो इसका अधिकार था। इस स्थिति का आकलन करते हुए आत्म विश्लेषण करने और आगे बढ़ने के लिए सटीक व प्रभावकारी योजना बनाने की जरूरत है। 50 वर्षों बाद आज भी 'रांची एक्सप्रेस' का केवल एक ही स्थान से प्रकाशन हो रहा है। जबकि 50-60 साल पहले अपना प्रकाशन शुरू करने वाले देश के अन्य कई अखबारों के ढेर सारे संस्करण निकल रहे हैं। यह हकीकत अनेक सवाल खड़े करती है।

विश्वसनीयता का नाम है 'रांची एक्सप्रेस'

✍ **चंदन मिश्र,** *(ब्यूरो प्रमुख, दैनिक 'हिन्दुस्तान' रांची)*

हिन्दी पत्रकारिता में एक विश्वसनीय नाम है 'रांची एक्सप्रेस'। लगातार पांच दशकों से दक्षिण बिहार (अब झारखंड) में हिन्दी पत्रकारिता के क्षेत्र में सफलता का झंडा उठाए रखने वाला यह हिन्दी दैनिक न सिर्फ एक प्रतिष्ठित अखबार है, बल्कि पत्रकारों का प्रशिक्षण संस्थान भी रहा है। आज भले ही प्रसार संख्या में 'रांची एक्सप्रेस' कम हो, लेकिन विश्वसनीयता के मामले में आज भी इसका कोई सानी नहीं है। यही इस अखबार की थाती है।

'रांची एक्सप्रेस' से कैरियर की शुरुआत

'रांची एक्सप्रेस' से अपने कैरियर की शुरुआत करने वाले कई अखबारनवीस आज देश के अलग-अलग मीडिया संस्थानों में काम कर रहे हैं। मुझे गर्व है कि मैं भी इसी पत्रकारिता संस्थान का एक विद्यार्थी रहा हूं। मैंने अपने पत्रकारिता कैरियर के 12 वर्ष यहां गुजारे। पत्रकारिता का 'कखग' जाना और आज उसी शिक्षण-प्रशिक्षण की बदौलत काम कर रहा हूं। 'रांची एक्सप्रेस' में काम करने का विशेष अनुभव रहा, क्योंकि यहां श्री बलबीर दत्त जैसे अनुभवी सम्पादक के देख-रेख और संरक्षण में काम किया। अच्छी खबरों पर तारीफ और लापरवाही पर डांट, यह दोनों आज मेरे पत्रकारिता के जीवन में काम आ रहे हैं। हर दिन कुछ न कुछ नया सीखने का अवसर यहां मिलता था। अखबार का माहौल भी पारिवारिक रहा।

मेरी पत्रकारिता की शुरुआत या यूं कहें कि अखबार में नाम छपने की आदत सम्पादक के नाम पत्र (लोकवाणी) लिखने से हुई। मुझे याद है कि उन दिनों मैं कॉलेज का छात्र था। रांची विश्वविद्यालय की दुर्दशा पर विश्वविद्यालय और कॉलेज परिसरों में नित चर्चा होती रहती थी। मैंने आम छात्रों के मन की पीड़ा को सम्पादक के नाम पत्र के लिए लिखा और 'रांची एक्सप्रेस' को भेज दिया। मेरा पत्र इस शीर्षक के साथ छपा ... रांची विश्वविद्यालय की दुर्दशा यानी हरि अनंत हरि कथा अनंता...। रिश्तेदारों और यार दोस्तों के बीच इस पत्र की खूब चर्चा हुई। फिर तो सम्पादक के नाम पत्र लिखने की आदत लग गयी। हर सप्ताह दो एक पत्र छप ही जाते थे। इससे मेरा हौसला बढ़ता गया।

फिर मुझे टाटीसिलवे से खबरें लिखने को कहा गया। मैं खबरें लिखकर भेज दिया करता था। मैं 'रांची एक्सप्रेस' कार्यालय नहीं के बराबर जाता था। एक दिन मैं टाटीसिलवे में लगने वाले नवमी डोल मिले पर एक फीचर तैयार कर उसे अखबार के दफ्तार में खुद लेकर गया। मैंने उसे सम्पादक जी के टेबुल तक पहुंचा दिया। यह फीचर सम्पादक जी को पसन्द आया और सम्पादकीय पेज पर यह बड़ा सा फीचर मेरे नाम के साथ छपा। फिर तो मुझे क्षेत्र में लोग जानने लगे।

उसके बाद अखबारनवीसी का कीड़ा शरीर में ऐसे प्रवेश किया कि पूरे पोर-पोर रच-बस गया। धीरे-धीरे खबरें और न्यूज फीचर लिखकर भेजता था। एक दिन सूचना मिली कि सम्पादक जी (श्री बलबीर दत्त) ने कार्यालय में बुलाया है, आकर मिल लें। मैं उनसे मिला और थोड़ी देर तक बातचीत की। उसी दिन श्रमजीवी पत्रकारिता के जीवन में औपचारिक प्रवेश मिल गया।

सम्पादकीय बैठकों का महत्व

'रांची एक्सप्रेस' में सब वरिष्ठ सदस्य अपने कनीय सहयोगियों को पूरा सहयोग देते थे। उस समय सप्ताह में एक दिन सम्पादक जी के साथ बैठक होती थी। सभी संवाददाता और उपसम्पादक बाकायदा एक नोटबुक या डायरी लेकर बैठक में हाजिर होते थे। वर्तनी को लेकर चर्चा होती थी। खबरों के स्वरूप और भाषा की विशेष समीक्षा की जाती थी। शब्द विशेष को लिखकर बताया या समझाया जाता था। किस संवाददाता और उपसम्पादक ने बीते सप्ताह अपना कार्यप्रदर्शन खराब किया या अच्छा, इसकी भी समीक्षा होती थी। इस साप्ताहिक बैठक का बड़ा महत्व था। 'रांची एक्सप्रेस' में छपी खबरों का उन दिनों असर भी दिखता था। उस समय जितने अखबार रांची से छपते थे, उन अखबारों की खबरें पढ़ने के बाद किसी खास खबर की सत्यता जांचने के लिए पाठक 'रांची एक्सप्रेस' जरूर पढ़ते थे। ऐसी थी अखबार की विश्वसनीयता।

झारखंड आन्दोलन के साथ यह अखबार कदम ताल मिलाकर चला। सत्ता में बैठे राजनीतिक शख्स हों या सत्ता से बाहर, कई नामचीन चेहरों को 'रांची एक्सप्रेस' ने विशिष्ट पहचान दिलायी। झारखंड आंदोलन का झंडा उठाकर लगातार चलता रहा। झारखंड आंदोलन को वैचारिक रूप से समृद्ध किया। जनचेतना जगाई और आम झारखंडियों की आवाज रांची से पटना और दिल्ली तक पहुंचाई। झारखंड आंदोलन में 'रांची एक्सप्रेस' की भूमिका को बिसराया नहीं जा सकता है।

राष्ट्रीय खेल के दौरान अतुलनीय भूमिका

✍ **एस.एम. हाशमी,**
(महासचिव, झारखंड ओलंपिक एसोसिएशन, रांची/
आयोजन सचिव, 37वें राष्ट्रीय खेल आयोजन समिति/
रांची कार्यकारिणी परिषद सदस्य, भारतीय ओलंपिक संघ, नई दिल्ली)

जनप्रिय समचारपत्र 'रांची एक्सप्रेस' ने अपनी स्थापना से लेकर अबतक हमेशा ही आदर्श व स्वच्छ पत्रकारिता की गरिमा-मर्यादा को सर्वोच्च प्राथमिकता देते हुए अपनी परिभाषा स्वयं गढ़ी है। यह केवल अखबार नहीं बल्कि झारखंड का ऐतिहासिक दस्तावेज है। इस लोकप्रिय अखबार ने न केवल जनहित बल्कि प्रदेश-देश की प्रतिष्ठा को भी हमेशा सबसे ऊंचा स्थान दिया है।

हर खास व आम

न केवल झारखंड बल्कि राष्ट्रीय पत्रकारिता में 'रांची एक्सप्रेस' की भूमिका का आकलन बहुत ही मुश्किल है।

1963 में जब इस अखबार का प्रवेशांक प्रकाशित हुआ था तो उन दिनों कुछेक गिने-चुने समाचारपत्र पत्रिकाएं ही प्रकाशित होती थी और वे भी अनियमित रूप से। यहां कोई भी वैसा प्रभावी समाचारपत्र या मीडिया संस्थान नहीं था जो

जनता की आवाज उठाता हो। बल्कि अखबार पढ़ने की कोई संस्कृति ही नहीं थी। वैसे शौकीन या जानकार लोग चुनिन्दा ही थे जो पटना-कलकत्ता के अखबार पढ़ते थे। लेकिन माहौल ऐसा नहीं था कि वो अखबार वैसी बेचैनी, वैसी कसक अपने प्रति पैदा कर सकें जो अमूमन जरूरत होती है। वैसे दौर में 'रांची एक्सप्रेस' सामने आया। इसने न केवल हर आम और खास लोगों के दिलों में अखबार पढ़ने की ललक पैदा की बल्कि हर किसी के मतलब की बात उठाकर अपने लिए समाज में विशिष्ट जगह बनायी जो अबतक बरकरार है।

आज के तकनीकी दौर में भी जहां बाकी अखबार पूर्णत: रंगीन और 24-26 पृष्ठ के निकल रहे हैं, वहां 'रांची एक्सप्रेस' तुलनात्मक रूप से तो कमजोर है परन्तु अब भी इसमें अनेक वैसी विशेषताएं हैं जो बाकी अखबारों में दूर-दूर तक नहीं है। सबसे पहले तो 'रांची एक्सप्रेस' की विश्वसनीयता, निष्पक्षता और पारदर्शिता अन्य समाचारपत्रों के मुकाबले तुलनात्मक रूप से बहुत ज्यादा है। दूसरी विशेषता यह है कि इस अखबार में पूरे सूबे को भावनाओं के बंधन में बांधे रखने की ताकत है। चाहे आप रांची में 'रांची एक्सप्रेस' पढ़ें या धनबाद, मधुपुर, देवघर, जमशेदपुर या किसी अन्य स्थान में लेकिन एक जैसा 'रांची एक्सप्रेस' मिलेगा। एक जैसे समाचार और एक जैसा रूप-रंग। जबकि बाकी समाचारपत्रों के संस्करण तो जिलावार बदल जाते हैं।

राष्ट्रीय खेलों में सहयोग

इस मामले में 'रांची एक्सप्रेस' से मुझे कोई शिकायत नहीं है। इस अखबार ने न केवल अधिकाधिक बल्कि उत्कृष्ट कवरेज दिया है। खेल डेस्क से जुड़े वरिष्ठ संवाददाता फोन कर और अधिक विस्तृत जानकारी लेते तथा उसे प्रकाशित करते हैं। 'रांची एक्सप्रेस' के संबंध में मेरा बहुत ही अच्छा अनुभव 34वें राष्ट्रीय खेलों के आयोजन के दौरान रहा जिसकी मेजबानी हमारे प्रदेश को मिली थी। आप जानते हैं कि विविध कारणों से कुछेक बार निर्धारित आयोजन तिथि को स्थगित कर आगे बढ़ाया जा चुका था। बार-बार मेजबानी छिनने की तलवार सिर पर लटक रही थी। भारतीय ओलंपिक संघ ने यह बता दिया था कि यदि अब आयोजन तिथि में बदलाव की बात की गयी तो 34वें राष्ट्रीय खेलों की मेजबानी किसी अन्य प्रदेश को सौंपी जा सकती है। दो-तीन प्रदेश इसके लिए अपनी इच्छा भी जता रहे थे। इधर रांची के अखबारों में जहां अन्य सभी अखबार 'मेजबानी छिनेगी', 'छिन सकती है मेजबानी' जैसे शीर्षकों से निराशा भरे नकारात्मक समाचार छाप रहे थे वहीं केवल 'रांची एक्सप्रेस' ही ऐसा अखबार था जिसने 'अब नहीं बढ़ेगी आयोजन तिथि', 'हर हाल में आयोजित होंगे राष्ट्रीय खेल', 'एनजीओसी सफलतापूर्वक आयोजित करेगा राष्ट्रीय खेल' जैसे अनेक समाचार छापकर हमारा उत्साह बढ़ाया। मुसीबत और दुख के उस दौर में केवल 'रांची एक्सप्रेस' ने ही हमलोगों का मनोबल बढ़ाया। इसी अखबार ने पहली बार कहा था कि अब सारी संरचनाएं तैयार हैं और व्यवस्था भी पूरी है। अब 12 से 26 फरवरी, 2011 तक 34वें राष्ट्रीय खेलों का आयोजन सुनिश्चित है। मुसीबत के उन दिनों के अपने इस साथी के प्रति मेरे दिल में बहुत श्रद्धा है। बल्कि यह कहना ज्यादा अच्छा होगा कि तब 'रांची एक्सप्रेस' की भूमिका आयोजन समिति के सच्चे सदस्य के रूप में प्रमाणित हुई।

●●●

हर वय के लोगों का प्रिय अखबार

✍ डा. मेजर बलबीर सिंह भसीन,
(पूर्व प्रति कुलपति एवं कार्यकारी कुलपति, मगध विश्वविद्यालय)

वाह भाई। यह भी खूब रही। देखते-देखते 'रांची एक्सप्रेस' 50 वर्ष का हो गया। जिस टीम ने इसे यहां तक पहुंचाया, सर्वप्रथम मैं उन्हें साधुवाद देना चाहूंगा। वे भी क्या दिन थे जब सम्पूर्ण छोटानागपुर में 'रांची एक्सप्रेस' की ही तूती बोलती थी। 'रांची एक्सप्रेस' से जुड़ने के लिए लोग लालायित रहते थे। एक रिपोर्ट या लेख का छप जाने का मतलब पूरे छोटानागपुर में चर्चा में आ जाना माना जाता था। अगर सन 1956 में रांची कालेज में मनोविज्ञान ऑनर्स की पढ़ाई की व्यवस्था रहती तो आज मैं झारखंड का ही रहता।

'रांची एक्सप्रेस' से मेरा पुराना लगाव रहा है। प्राध्यापकी के बाद लिखने-पढ़ने की आदत के कारण दक्षिण बिहार की खबरों के लिए 'रांची एक्सप्रेस' मेरा प्रिय अखबार था। मेरे पूर्वज देश विभाजन के बाद तब के छोटानागपुर के रामगढ़ में ही आकर बसे और मेरी स्कूली शिक्षा रामगढ़ के ही गांधी मेमोरियल स्कूल में हुई। आज मैं जिस मुकाम पर हूं या लिखने की जो प्रवृत्ति बनी उसका श्रेय मैं विद्यालय के शिक्षक स्वर्गीय संत विलास सिंहजी को देता हूँ। 'रांची एक्सप्रेस' में मेरे कई आलेख प्रकाशित हुए। इन लेखों के लिखने की प्रेरणा संत विलासजी ने ही दी। 'रांची एक्सप्रेस' को लोग भले ही रांची का अखबार कहें लेकिन है यह पूरे बिहार-झारखंड का अखबार। 'ना काहू से दोस्ती और ना काहू से बैर' के सिद्धान्त पर चलने वाला यह अखबार अब भी मैदान में डटा है, यह जानकर और भी प्रसन्नता हुई। आज की तारीख में न केवल रांची बल्कि झारखंड के कई शहर अखबार की मंडियों में तब्दील हो गये हैं। कहा भी गया है कि छोटे कुएं के बगल में बड़ा कुंआ खोदे जाने से छोटे कुएं का पानी सोख लेता है। मैं समझता हूं कि बड़े-बड़े घरानों के अखबारों के झारखंड के मैदान में आ जाने से 'रांची एक्सप्रेस' हिल सा गया है। लेकिन इससे विचलित होने की जरूरत नहीं। झारखंड की मिट्टी-पानी से सने इस अखबार को हर कोई एक नजर देखना चाहता है। यह बात अलग है कि कम्पटीशन के इस दौर में अखबार थोड़ा पिछड़ा है लेकिन पाठकों का झुकाव अपने पुराने पत्र के प्रति अवश्य रहता है।

'रांची एक्सप्रेस' के बारे में एक नहीं कई सुनहरी यादें हैं। किसी जमाने में तब के छोटानागपुर के कई जिलों में पटना से प्रकाशित 'आर्यावत' और 'प्रदीप' तथा कलकत्ता से प्रकाशित 'सन्मार्ग' और 'विश्वमित्र' ही आते थे लेकिन अपने बिहार प्रान्त की खबरों को विस्तार से जानने के लिए 'रांची एक्सप्रेस' पढ़ना अनिवार्य था। मुझे 'रांची एक्सप्रेस' के अपर बाजार स्थित कार्यालय में जाने और विद्वान संपादक श्री बलबीर दत्तजी के साथ लंबी बातचीत करने का भी सौभाग्य मिला है। लेख तो लेकर गया था प्रथम गुरू श्री गुरूनानक देवजी महाराज पर। लेकिन जब निकला तो बराबर लिखते रहने का संदेशा लेकर। यह आदेश संपादक श्री दत्तजी का था। इसके बाद मैं 'रांची एक्सप्रेस' का नियमित लेखक बन गया। 'रांची एक्सप्रेस' की सबसे बड़ी खासियत यह है कि इसमें हर वय के लोगों के लिए यथोचित सामग्री रहती है। हंसी के फव्वारे से लेकर रोगों के निदान के उपायों तक। गंभीर विषयों पर बेबाक टिप्पणी का तो जवाब ही नहीं। सन अस्सी के दशक में पटना में कार्यालय खुलने पर मैं गोरिया टोली इसके कार्यालय से अखबार मंगवाया करता था। अब तो पटना में दिखता भी नहीं हैं। रांची में अखबारों की आयी बाढ़ में भी मुझे विश्वास है कि 'रांची एक्सप्रेस' की नाव सदा आगे बढ़ती जायेगी। 50 वर्ष पूरे हाने पर मेरी हार्दिक बधाई और सौ वर्ष पूरे करने की कामना। वाहे गुरूजी का खालसा वाहे गुरूजी की फतह।

झारखण्ड में पत्रकारिता के नींव मजबूत की

✍ आनन्दस्वरूप गुप्ता,
(पूर्व अध्यक्ष वाणिज्यकर अधिवक्ता संघ रांची/सदस्य भारतीय वाणिज्यकर फेडरेशन)

देखते-देखते 50 वर्ष बीत गये। 'रांची एक्सप्रेस' का प्रकाशन साप्ताहिक पत्र के रूप में 1963 में शुरू हुआ था। उसके बाद 1976 में इसे दैनिक पत्र का रूप दिया गया। रांची या यों कहे कि छोटानागपुर में बाहर के समाचारपत्र आते तो थे, लेकिन इतने विलम्ब से आते थे कि तब तक अधिकांश लोग अपने-अपने काम पर निकल जाते थे। लोगों में समाचारपत्रों को पढ़ने की आदत भी नहीं थी। दूसरी बात यह भी कि इस क्षेत्र के समाचारों को स्थान कम ही दिया जाता था।

साप्ताहिक 'रांची एक्सप्रेस' के प्रकाशन के बाद यहां के लोगों में भी समाचारपत्र पढ़ने की रुचि जाग्रत हुई! दैनिक समाचारपत्र के रूप में जब 'रांची एक्सप्रेस' का प्रकाशन शुरू हुआ तो मैंने यह स्थिति भी देखी जब लोग बेताबी से इस समाचारपत्र का इंतजार किया करते थे! सरकारी कार्यालयों में भी मैंने देखा कि इस पत्र में छपे समाचारों की तीखी प्रतिक्रिया होती थी, कार्रवाई होती थी और दो-चार दिन के बाद ही उस समाचार पर हुई प्रतिक्रिया और कार्रवाई की खबर भी अखबारों में पढ़ने का मिल जाती थी। एक वह दौर भी था जब देर रात में भी अगर कोई घटना हो गयी तो लोग दौड़कर घटनास्थल पर जाने की चेष्टा नहीं करते थे, क्योंकि आश्वस्त थे कि सुबह 'रांची एक्सप्रेस' के माध्यम से उसकी विस्तृत जानकारी मिल ही जायेगी। रांची के लोगों के लिए यह एक नया अनुभव था।

छठे दशक में सुना करता था कि समाचारपत्रों का प्रकाशन घर फूंक तमाशा देखने वाली बात होता है, यही कारण है कि कई बड़े-बड़े समाचारपत्रों और पत्रिकाओं का प्रकाशन बंद हो चुका है। श्री सीताराम मारू और 'रांची एक्सप्रेस' के प्रकाशन से जुड़े लोगों का उद्देश्य अपना रुआब बढ़ाना या धन कमाना नहीं रहा।

'रांची एक्सप्रेस' के प्रधान सम्पादक श्री बलबीर दत्त का परिवार और हमारा परिवार अखबार के आरम्भिक वर्षों में मेन रोड पर आसपास ही रहते थे। आयकर और बिक्रीकर पर मेरे कितने ही लेख 'रांची एक्सप्रेस' में प्रकाशित हुये। इन लेखों से लोगों को आवश्यक जानकारी मिलती थी। लोग इनका इंतजार करते थे।

मेरे आलेखों का शीर्षक अक्सर बलबीर जी बदल दिया करते थे। उनकी धारणा थी कि रचना का शीर्षक मात्र एक लेबल की तरह नहीं होना चाहिए। उसे तो किसी सुन्दरी के अर्द्धखुले घूंघट की तरह होना चाहिए कि चेहरा पूरे छिपे भी नहीं और मुखड़ा साफ दिखे भी नहीं यानी जो दिख रहा है उसे देखकर जो नहीं दिख रहा है उसे देखने की रुचि जाग्रत हो। बलबीर जी मेधावी होने के साथ-साथ जीवट वाले व्यक्ति हैं। मैंने उनको देर रात तक अपने घर में समाचारपत्र का कार्य करते देखा है। लेखन का कार्य मैं विद्यार्थी जीवन से ही करता आ रहा था किन्तु उसमें तीव्र रुचि जाग्रत करने का श्रेय बलबीर जी को है।

'रांची एक्सप्रेस' के 50 वर्षों का मैं साक्षी रहा हूं। इस समाचारपत्र ने इस क्षेत्र की बड़ी सेवा की है और झारखंड में पत्रकारिता की नींव सुदृढ़ की है। इसके स्वर्णजयन्ती वर्ष पर मेरी ढेर सारी शुभकामनाएं।

धर्मनिरपेक्ष अखबार है 'रांची एक्सप्रेस'

✍ **सरदार दलजीत सिंह,** *(सुपरिटेंडेंट तख्त श्रीहरिमंदिरजी, पटना साहिब)*

सेक्युलरिज्म की परिभाषा तो अब तक स्पष्ट नहीं हो सकी है, लेकिन मुझे यह कहने में कोई संकोच नहीं कि झारखंड का लोकप्रिय अखबार 'रांची एक्सप्रेस' पूरी तरह धर्म निरपेक्ष है। सभी धर्मों व सम्प्रदायों के बीच इसकी पैठ बताती है कि यह सबका अपना हरदिलअजीज अखबार है। पत्र के 50 वर्ष पूरे होने पर मुझे बेहद खुशी है। वाहे गुरु अखबार को आगे बढ़ाने में सहायता करे।

रांची से मेरा आज का नहीं वर्षों पुराना नाता है। वह भी छोटानागपुर के जमाने से। झारखंड प्रांत के गठन के बाद तो अब रांची शहर का स्वरूप ही बदल गया है। बिहार से बिछुड़ने के बाद बन गयी अलग राज्य की सरकार, खड़ी हो गयीं हैं नयी-नयी इमारतें, बिछ गया है सड़कों का जाल, चर्चा में आ गये बड़े-बड़े घपले और घोटाले और बन गयी है अखबारों की बड़ी मंडी। इन तमाम परिस्थितियों के बीच 'रांची एक्सप्रेस' अपना झंडा लेकर आज भी जहां था वहां खड़ा है। मैं महसूस करता हूं कि छोटानागपुर की मिट्टी-पानी में सने 'रांची एक्सप्रेस' का कोई सानी नहीं। हर दल और हर धर्म का पूरा कवरेज। क्रिसमस हो, रामनवमी या दशहरा हो तो बेजोड़ कवरेज। गुरु पर्व के मौके पर तो कवरेज से 'रांची एक्सप्रेस' ने अपनी विशिष्ट पहचान बनायी है। झारखंड के तमाम गुरुद्वारों चाहे वे छोटे हों या बड़े, के पदाधिकारी 'रांची एक्सप्रेस' के मुरीद हैं। हों भी क्यों नहीं चाहे गुरु नानक देवजी महाराज की जयन्ती हो या दशम पातशाह साहेब श्री गुरुगोविन्द सिंह जी महाराज का प्रकाश उत्सव। शहीदी दिवस हो या बैसाखी सबमें बढ़-चढ़कर कवरेज। विशेष आलेख तो पढ़ने को मिलते ही हैं, कार्यक्रमों को भरपूर कवरेज भी मिलता है।

रांची शहर से मेरा भावनात्मक संबंध रहा है। मेन रोड पर करतार फर्नीचर के स्वामी सरदार करतार सिंह भोगल मेरे समधी हैं और चुटिया मुहल्ले में रहते हैं। मेरा आना-जाना एक दशक के भीतर कुछ बढ़ा है। लिखने-पढ़ने में गहरी दिलचस्पी रखने वाली बिटिया नयनसीप्रीत कौर का विवाह उनके पुत्र सरदार सुरजीत सिंह से हुआ है जिनकी लालपुर चौक पर अपनी दशमेश फर्नीचर नामक दुकान है। कहने का तात्पर्य यह कि एक छोर पर मेन रोड वाली दुकान तो दूसरे छोर पर लालपुर चौक वाली दुकान। मैं दोनों दुकानों पर बैठकर 'रांची एक्सप्रेस' के बारे में ग्राहकों से बात किया करता था। तब रांची में बड़े घरानों के अखबारों का पदार्पण हुआ था। उस वक्त की बात बताता हूं प्रायः अधिसंख्य ग्राहकों ने 'रांची एक्सप्रेस' को घर-घर का अखबार बताया था। इस्पात नगरी जमशेदपुर हो या कोयलांचल का धनबाद। मुझे बराबर इन क्षेत्रों में जाने का मौका मिला है। चूंकि मेरी दिलचस्पी सर्वप्रथम सुबह में अखबार पढ़ने की रही है इसलिए पत्र-पत्रिकाओं के हालात अखबारों के हॉकर या स्टॉल वालों से पूछ लेता हूं। सही हालात मिल जाते हैं। इधर मुझे जानकारी मिली कि 'रांची एक्सप्रेस' कुछ पीछे हो रहा है। इस स्थिति को बदलना होगा। तब के छोटानागपुर की बुलन्द आवाज अगले सौ वर्ष तक गरजे, बरसे वाहे गुरु से मेरी यही कामना है।

●●●

राष्ट्रीय चेतना का संवाहक 'रांची एक्सप्रेस'

✍ **मंगल पांडेय,** *(एमएलसी, अध्यक्ष, भारतीय जनता पार्टी, बिहार प्रदेश)*

'रांची एक्सप्रेस' एक ऐसा अखबार है जिसने कभी किसी मुद्दे पर किसी से कोई समझौता नहीं किया। न किसी दल के प्रति राजनीतिक प्रतिबद्धता और ना ही आर्थिक लाभ के लिए किसी के प्रति झुकाव ही। आज की अखबारी दुनिया में ऐसे पत्र कम ही देखने-सुनने को मिलते हैं। पत्र की नीति यह सब तय करती है। मुझे प्रसन्नता है कि 'रांची एक्सप्रेस' अपनी नीति पर पूर्णतः खरा उतरा है।

झारखंड की राजधानी रांची से 15 अगस्त 1963 से प्रकाशित 'रांची एक्सप्रेस' ने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा। साप्ताहिक पत्र होने के बावजूद यह तब के छोटानागपुर-संतालपरगना का कंठहार बन गया। 1976 में यह दैनिक हुआ और यह जन-जन की आवाज बन गया। बिहार का यही पहला दैनिक पत्र था जो फोटो कम्पोजिंग के आधार पर आफसेट मशीन पर छपने लगा। उस वक्त बिहार के अधीन ही था सम्पूर्ण झारखंड का क्षेत्र। 'रांची एक्सप्रेस' का प्रकाशन जब शुरू हुआ था तब रांची में दर्जन भर पत्रकार थे। आज इनकी संख्या बढ़कर 600 हो गयी है। उस वक्त और कोई अखबार नहीं था आज इनकी संख्या 18 हो गयी है।

आज इसे निर्विवाद रूप से स्वीकार किया जा चुका है कि लोकतंत्र की सफलता लिखने और बोलने की स्वतंत्रता पर ही निर्भर है। कहा गया है कि लोकतंत्र में शासन का मुख्य आधार वाद-विवाद है। यदि भाषण और लेखन की आजादी न हो तो जनतंत्रात्मक शासन कदापि स्वस्थ एवं सुचारू रूप से नहीं चल सकती। इसलिए आज के इस लोकतंत्रात्मक युग में 'प्रेस' और 'प्लेटफार्म' को सर्वोपरि महत्व दिया जाता है। यही नहीं आज के युग में कलम की करामात को इतना अधिक महत्व दिया जाने लगा है कि लोग समाचारपत्रों को 'चतुर्थ लोक' (फोर्थ इस्टेट) के नाम से अभिहित करते हैं। यहां तक कि नेपोलियन जैसा वीर सेनानी जितना एक हजार बन्दूकों से नहीं डरता था उससे अधिक एक अखबार से डरता था। इसीलिए तो अकबर इलाहाबादी ने कहा था-

खींचो न कमानो को न तलवार निकालो
जब तोप मुकाबिल हो तो अखबार निकालो

मुझे यह कहने में कोई हिचक नहीं कि सांस्कृतिक नवोत्थान और राष्ट्रीय चेतना के विकास में 'रांची एक्सप्रेस' ने जो भूमिका निभायी उसे भुलाया नहीं जा सकता। पत्र-संचालन और पत्रकारिता का पेशा बाहर से देखने में जितना सरल, सरस, आनंदपूर्ण और आरामदेह मालूम पड़ता है, वास्तव में वैसा नहीं है। यह बड़ा ही कठिन, कठोर और श्रमसाध्य पेशा है। पत्रकारिता की वृति को 'गुलाबों की सेज' समझने वालों को व्यावहारिक अनुभव के बाद इसे 'कांटों की सेज' पाने पर बहुधा निराशा का भी अनुभव करना पड़ा है।

'रांची एक्सप्रेस' के बारे में अक्सरहां यह भ्रान्ति फैलायी जाती रही कि यह एक खास दल और संगठन का अखबार है। लेकिन संस्थापक संपादक बलबीर दत्त की संपादकीय टीम ने कभी भी किसी विचारधारा को हावी नहीं होने दिया और सबके साथ न्याय किया। हां यह बात सही है कि पत्र के संस्थापक संचालक स्वर्गीय सीताराम मारू के राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से गहरे ताल्लुकात थे और संघ या जनसंघ अथवा भाजपा के वरिष्ठ नेताओं का आना-जाना मारूजी के घर में लगा रहता था। वर्त्तमान में पत्र के संचालकों में एक अजय मारू भाजपा के सांसद रहे हैं, रांची के लोकप्रिय नेता हैं। बावजूद इसके 'रांची एक्सप्रेस' अपनी सेवा-यात्रा पर चलता रहा है, आगे बढ़ता जा रहा है। वह भी तब जब झारखंड मुख्यालय रांची अखबारों का एक बहुत बड़ा बाजार बन गया है। बड़े-बड़े औद्योगिक घरानों के अखबारों के आने के बावजूद 'रांची एक्सप्रेस' बाजार में डटा है। यह जानकर प्रसन्नता हुई पत्र के पचास वर्ष पूर्ण होने वाले हैं। मेरी हार्दिक बधाई।

स्कूली जीवन में ही पाठक रहा

✍ **श्याम रजक,** *(मंत्री, खाद्य एवं उपभोक्ता संरक्षण, बिहार)*

'रांची एक्सप्रेस' झारखंड की पहचान है। मैं स्कूली जीवन से ही रांची में 'रांची एक्सप्रेस' पढ़ता था और आज बिहार में रहते हुए भी इस अखबार को पढ़ने की जिज्ञासा बनी रहती है। स्कूली जीवन के बाद राजनीतिक जीवन में प्रवेश करने के बाद 'रांची एक्सप्रेस' नियमित रूप से पढ़ने लगा।

मेरा तो मानना है कि झारखंड के विकास में 'रांची एक्सप्रेस' की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। इस अखबार ने निरन्तर झारंखड की स्थिति एवं झारखंड आंदोलन की सही तस्वीर पेश की। 'रांची एक्सप्रेस' पढ़ना तो मेरी आदत में शुमार था। मुझे याद है जब मेरी खबरें 'रांची एक्सप्रेस' में छपती थी तब मैं रोमांचित हो जाता था। मैं तो मानता हूं कि 'रांची एक्सप्रेस' वर्षों से झारखंड की आवाज रहा है। मुझे जयप्रकाश आंदोलन की याद है। देश में प्रेस सेंसरशिप लागू करने की भी याद है, लेकिन 'रांची एक्सप्रेस' के तेवर बरकरार रहे। इस अखबार ने निर्भीकता से प्रेस सेंसरशिप का विरोध किया।

वस्तुतः 'रांची एक्सप्रेस' ने झारखंड के लोगों को अखबार पढ़ने की सीख दी, क्योंकि इस अखबार का प्रकाशन तब आरम्भ हुआ जब यहां कोई भी अखबार नहीं था। यह झारखंड की जनता की आवाज बना और सीमित संसाधनों के बावजूद अखबार समाचारों की गुणवत्ता बनाये रखने में कामयाब रहा है। मुझे याद है जिस दिन 'रांची एक्सप्रेस' देर से आता था उस दिन मैं बेचैन हो उठता था। 'रांची एक्सप्रेस' पढ़कर देश-दुनिया की गतिविधियों से अवगत होता था। शुरुआती दौर में तो चार पन्ने के अखबार से ही संतुष्टि मिल जाती थी। यह बड़ी खुशी की बात है कि 'रांची एक्सप्रेस' अपनी पचासवीं वर्षगांठ मना रहा है। इतनी लम्बी अवधि तक किसी समाचारपत्र का अनवरत प्रकाशन एक बड़ी उपलब्धि है। आशा है 'रांची एक्सप्रेस' आगे आने वाले वर्षों में भी प्रकाशित होता रहेगा और पत्रकारिता की दुनिया में मील का पत्थर साबित होगा।

जीवंत अखबार है 'रांची एक्सप्रेस'

✍ **नंदकिशोर यादव,** *(मंत्री, पथ निर्माण विभाग, बिहार सरकार/संयोजक एनडीए, बिहार)*

अतीत के पन्नों को उलटने का मतलब एक लंबे इतिहास का लेखन है। 'रांची एक्सप्रेस' से जुड़े कई संस्मरण हैं जिन्हें सिलसिलेवार तरीके से लिखना शुरू करूं तो एक लघु पुस्तिका अवश्य तैयार हो जायेगी। कड़ी प्रतियोगिता और प्रतिद्वंदिता के दौर में आज 'रांची एक्सप्रेस' पीछे हो चला है लेकिन हमें यह नहीं भूलना चाहिये कि कभी यह तब के दक्षिण बिहार का सिरमौर और एकलौता बहुप्रसारित अखबार था।

पत्रकारों की क्लास

पटना से छपने वाले समाचार पत्र रांची समेत दक्षिण बिहार के अन्य जिलों में अमूमन शाम के समय पहुंचते थे। लेकिन सुबह में चाय की चुस्कियों के साथ 'रांची एक्सप्रेस' ही हांथों में रहता था। मेरा सौभाग्य

रहा है कि पत्र के संचालक स्वर्गीय सीताराम मारू और इनके पुत्रों पवन मारू तथा अजय मारू से मेरी निकटता रही। पार्टी का सांसद होने के नाते अजय मारू से मेरी और भी घनिष्ठता रही और आज भी है। मुझे स्मरण है सन 70 के दशक के अंत और 80 के दशक के प्रारंभ में पवन मारू अक्सर पटना की सड़कों पर मिल जाया करते थे। बातें सिर्फ और सिर्फ 'रांची एक्सप्रेस' की ही होती थी। तब मैं अखिल भारतीस विद्यार्थी परिषद से जुड़ा था। उस वक्त न्यूज एजेंसियों से ही 'रांची एक्सप्रेस' को तुरंत और ताजी खबरें मिल जाती थीं। छोटानागपुर का लोकप्रिय पत्र होने के बावजूद उस वक्त इसमें पटना की पर्याप्त खबरें रहती थीं। विद्यार्थी परिषद की खबरों को विशेष तरजीह दी जाती थी। परिषद कार्यकर्ताओं को तत्काल मैसेज देने का सूचना-साक्षी था 'रांची एक्सप्रेस'।

बाद में भारतीय जनता युवा मोर्चा का महामंत्री, उपाध्यक्ष और अध्यक्ष होने के नाते संताल परगना और छोटानागपुर के सघन भ्रमण के अनेक मौके मिले। मेरे कार्यक्रमों का कवरेज 'रांची एक्सप्रेस' ने भरपूर किया। इसका सारा श्रेय इसके संपादक आदरणीय बलबीर दत्तजी को देता हूं। इनकी पैनी निगाह युवा शक्ति को आगे बढ़ाने की रही है। मुझे यह कहने में कोई अतिशयोक्ति नहीं कि तब के छोटानागपुर और आज के झारखंड की पत्रकारिता के पुरोधा हैं बलबीर दत्त। इनकी बेबाक टिप्पणियों और प्रखर लेखनी का कायल हूं मैं। आरएसएस या भाजपा के विचारों से सहानुभूति रखने के बावजूद इनकी कलम आवश्यक महसूस होने पर किसी की भी आलोचना करने से पीछे नहीं हटती। यही है निष्पक्ष पत्रकारिता। मुझे याद है अपर बाजार का वह कार्यालय जहां योग्य पत्रकारों की क्लास लिया करते थे संपादक बलबीर दत्त। आज वे सारे पत्रकार देश के बड़े-बड़े अखबारों में कार्यरत हैं लेकिन 'रांची एक्सप्रेस' को भूले नहीं हैं।

झारखंड पर बहस का कवरेज

पृथक झारखंड प्रान्त के गठन को लेकर बिहार विधानसभा में चली लंबी बहस का मैं भी गवाह हूं। उस आन्दोलन का अखबारी जगत में सही मायने में किसी ने नेतृत्व किया तो वह 'रांची एक्सप्रेस' ही था। उस दौरान मैं भारतीय जनता पार्टी का बिहार प्रदेश का अध्यक्ष था और आज का पूरा झारखंड तब बिहार का ही अंग था। राजनीतिक जीवन में उतार-चढ़ाव आते रहते हैं। लेकिन प्रतियोगिता के इस दौर में 'रांची एक्सप्रेस' का पिछड़ना अखरता है। झारखंड बनने के पहले और बाद में भी 'रांची एक्सप्रेस' मुझे उतना ही भाता है जितना पटना के अन्य अखबार। बशर्ते 'रांची एक्सप्रेस' पटना में कहीं दिख जाये-मिल जाये। अब तो बिहार और झारखंड अखबारों की बड़ी मंडी बन गये हैं। दांत काटी रोटी की दोस्ती नहीं बल्कि गला काट कम्पीटीशन है। सबके अपने-अपने सुर-ताल हैं बावजूद इसके 'रांची एक्सप्रेस' पिछले 50 वर्षों से अपनी नीति और सिद्धांतों पर अडिग है। इसकी मुख्य वजह एक अखबार सम्पूर्ण समाचार की पेशकश और इसकी जीवंतता है। क्योंकि बड़े अखबारों के इतने अधिक संस्करण हो गये हैं कि एक-दूसरे शहर की खबरें सामान्यतः पढ़ने को मिलती ही नहीं। धीमी चाल से ही सही, 'रांची एक्सप्रेस' पत्रकारिता के मानदंडों को अपनाते हुए बढ़े यही कामना है।

'शोले' सा हिट हुआ था 'एक्सप्रेस'

✍ **ज्ञानचन्द्र प्रसाद मेहता,** *(शिवपुरी, हजारीबाग)*

साप्ताहिक समचारपत्र पढ़ने की मेरी अभिरुचि मेरे स्कूली जीवन से ही मुझमें रही है। किसी नये शहर जाता तो वहां दो चीजें अवश्य ढूंढता। उस शहर में कोई साप्ताहिक समचारपत्र निकलता है क्या, दूसरा वहां सिनेमा हॉल अच्छा कौन-सा है।

1970 में पहली बार रांची गया था। सुजाता में 'हमजोली' फिल्म देखी थी। दूसरी सुबह वहां 'रांची एक्सप्रेस' देखा। एक खरीद लिया था। साप्ताहिक क्या था, साहित्य था, अनूठा! कागज भी अच्छा, प्रिंट भी बढ़िया। और, सामग्री ऐसी कि एक बार पढ़ने बैठा तो पूरा समाप्त कर ही उठा। रांची के नगरीय समाचार, देश-विदेश के भी रोचक एवं ज्ञानवर्द्धक समाचार महिला, खेल, सिनेमा एवं किन्हीं किशोर भैया का स्तंभ बच्चों के लिये था। वह साप्ताहिक एक सम्पूर्ण पत्र था। पढ़ाई पूरी कर 1972-73 में मैं अपने गृह-नगर नवादा वापस आ गया। नौकरी की तलाश के साथ लिखना-पढ़ना भी नियमित था। 'रांची एक्सप्रेस' भूला नहीं।

आपातकाल में

तभी देश में आपातकाल घोषित कर दिया गया। अखबार वाले फूंक-फूंककर लिखने लगे थे। कई छोटे समाचारपत्र बन्द हो गये थे। सेंसरशिप जारी था। कम औकात वाले बड़े अखबारों की भी बोलती बन्द थी। इंदिरा गांधी की लादी हुई इमरजेंसी में जो झुके नहीं, वे टूट गये। जिन्हें थोड़ा झुकने को कहा गया था, वे घुटनों के बल पर रेंग-रेंग कर अपनी करामात दिखला रहे थे। संकट की उन्हीं घड़ियों में, 1976 में 'रांची एक्सप्रेस' दैनिक हो गया। दक्षिणी बिहार का एक मात्र नामी हिन्दी दैनिक! ऐन इमरजेंसी पीरियड में, क्या लिखें क्या न लिखें। सम्पादन की बौद्धिक परीक्षा की घड़ी थी।

1976 में ही फिल्म 'शोले' रिलीज हुई थी। खूब चल रही थी, साथ की रिलीज हुई फिल्म 'जय संतोषी मां' की रफ्तार भी बहुत तेज थी। इस उदाहरण में ही सारा सिद्धांत है जो मैं 'रांची एक्सप्रेस' के विषय में कहना चाहता हूं। 1979 में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद्, बिहार प्रदेश द्वारा आयोजित युवा रचनाकार सम्मेलन में मैं सम्मिलित हुआ था। वहां न केवल 'रांची एक्सप्रेस' की उपस्थिति थी वरन् देश में प्रकाशित उस समय की सुप्रसिद्ध पत्र-पत्रिकाओं के कुल 100 नामों की सूची में यह पत्र भी सूचीबद्ध था।

पाठकों का सुदृढ़ मंच

मुझे सरकारी नौकरी मिली। मैं डालटनगंज आया। यहां इस दैनिक की पताका गगन चूम रही थी। 'लोकवाणी' स्तंभ ऐसा कि पत्र हाथ में आये और लोकवाणी न पढ़े संभव ही नहीं होता था। 'शोले' सा हिट था। समाचारपत्रों में पाठकों के विचारों की अभिव्यक्ति का ऐसा सुदृढ़ मंच पहले कभी नहीं देखा गया था। इस स्तंभ के नियमित तथा सुपरिचित हस्ताक्षरों के नाम आज भी नहीं भूले जा सकते हैं। यथा, मिश्रीलाल जायसवाल, कनकमल जैन तथा अन्य पत्र लेखक प्रो. कामेश्वर सिंह, विनय कुमार सिन्हा, मनोहर ठाकुर, अवनीश रंजन मिश्र, एस.सी. धर, श्रीकृष्ण सिंह सोंढ, खगेन्द्र आचार्य, दीपचन्द जैन, भूपू सिंह आदि कुछ नाम उदाहरण के गिनाये जा सकते हैं। पाठक की हैसियत से मैं फादर कॉमिल बुल्के, राधाकृष्ण, श्रवण गोस्वामी, अशोक प्रियदर्शी आदि को इसी अखबार के माध्यम से अधिकाधिक पढ़ सका था। समझ सका था।

1988 में डालटनगंज से स्थानान्तरित होकर हजारीबाग आया। 'रांची एक्सप्रेस' का जलवा यहां भी नुमाया था। तब समझ में आया कि डालटनगंज के सुरेन्द्र सिंह रूबी का 'रांची एक्सप्रेस' के प्रति समर्पण किसी एक व्यक्ति का समर्पण

नहीं वरन् यह इस पूरे छोटानागपुर में इस पत्र से जुड़े लोगों का सामूहिक आन्दोलन है। पत्रकार ब्रजमोहनजी तथा सांवरमलजी को यहां दो ऐसे स्तंभ की भांति 'एक्सप्रेस' के लिए खड़े देखा मानो अंगद ने पांव जमा रखे हो।

'रांची एक्सप्रेस' आज भी अद्वितीय है। इसका आज का ढीलापन इसके चरित्र तथा प्रबंधन के स्वभाव से मेल नहीं खाता है। यही कुंठा मुझे परेशान करती है। बलबीर दत्त जी पुनः सम्पादक हैं। प्रबंधन की ओर से थोड़ी रुचि ली जाये, थोड़ी कोशिश की जाय तो झारखंड का अपना अखबार अपनी अस्मिता तथा अपना खोया गौरव पुनः प्राप्त कर ले।

झारखंड की माटी का अपना अखबार

✍ **जयनन्दन,** *(वरिष्ठ साहित्यकार, जमशेदपुर)*

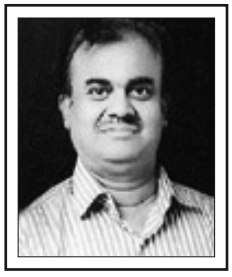

'रांची एक्सप्रेस' ने अपने प्रकाशन के 50 वर्ष पूरे कर लिये। किसी अखबार के लिए 50 साल की अवधि एक बड़ी अवधि मानी जा सकती है। इस अखबार ने 50 साल में कई वर्षों तक इस क्षेत्र का नम्बर एक अखबार होने का गौरव प्राप्त किया, न सिर्फ प्रसार के मामले में बल्कि गुणवत्ता के मामले में भी। झारखंड की राजधानी रांची की अपनी मिट्टी, पानी और हवा से निर्मित कोई अपना अखबार है तो उसका एक और सिर्फ एक नाम है- 'रांची एक्सप्रेस'। इस अखबार का यह कमाल किसी को भी ताज्जुब में डालता है, खासकर तब जब आपको यह पता हो कि अखबार की दुनिया के कई बड़े और मंजे खिलाड़ी अखाड़े में लंगोट कसकर ताल ठोक रहे हैं।

भावनाओं का प्रतिनिधि

रांची से एक क्षेत्रीय अखबार के रूप में शुरू होने वाले इस अखबार की आज अगर राष्ट्रीय स्तर पर एक पहचान बन चुकी है तो इसके पीछे जो कारक तत्व मुझे दिखते हैं उनमें इसका ठोस, सक्षम और पेशे की बारीकी की समझ रखने वाली मजबूत इच्छा शक्ति का महत्वाकांक्षी नेतृत्व मुख्य है। दूसरी बात जो मुझे दिखाई पड़ती है, वह है इस अखबार का ज्यादा से ज्यादा लोकलाइज होकर नेशनलाइज होना। आप जब तक स्थानीयता से पूरी तरह जुड़कर जन-जन के दुःख-सुख को आत्मसात नहीं करेंगे, आप जब तक क्षेत्र की चुनौतियों को, उनकी समस्याओं को, उनकी त्रासदियों-संक्रमणों को, उनके हर्ष-उल्लास, उनकी संस्कृति और उनके राग-द्वेष पर अपनी पैनी और विवेकपूर्ण नजर नहीं रखेंगे, आप उनकी भावनाओं को प्रतिबिम्बित करने वाला उनकी पसन्द का माध्यम नहीं बन सकते और आपको वे अपने हितचिंतक प्रवक्ता के तौर पर स्वीकार नहीं कर सकते। 'रांची एक्सप्रेस' ने इस गुर को समझने और साधने में अपनी पूरी ताकत लगायी है।

इसके यशस्वी सम्पादक बलबीर दत्त ने जब इसे संभाला तो निश्चित रूप से वह एक नयी ऊर्जा और तमाम युवा नैतिकताओं और आदर्शों से लैस अखबारी व्याकरण के हर पाठ से परिचित थे। उन्होंने जिस कौशल का सबसे ज्यादा उपयोग किया वह है इस क्षेत्र की एक-एक नब्ज पर पूरी पकड़ रखकर चलना और व्यावसायिक होकर भी निष्पक्षता, निर्भीकता और बेबाकपन जैसे पत्रकारिता के मूल्यों से समझौता न करना। प्रतिभावान टीम, अद्यतन प्रौद्योगिकी और पूरी आजादी के साथ काम करने की स्वच्छ और उच्च स्तरीय सुविधायें इस अखबार की अन्य उल्लेखनीय विशेषताएं हैं, जो किसी भी अखबार के लिए अनुकरणीय हैं।

साहित्य पुरस्कार

आज अखबारों में आपसी प्रतिद्वंद्विता बहुत निचले स्तर तक पहुंच गयी है। पाठकों की छीना-झपटी के लिए वह एक से बढ़कर एक घटिया हरकतें करते सरेआम दिख रहे हैं। थोक मात्रा में इनामी कूपन जारी करना, लॉटरी निकालना तथा

हर किसी के फोटो छापना अखबार की गरिमा को आहत करता है। लेकिन 'रांची एक्सप्रेस' ने कभी इन बाजारू हथकंडों का इस्तेमाल नहीं किया।

आजकल अखबार प्रबंधनों द्वारा स्कूप खबरों को परोसने और बढ़ा-चढ़ाकर निष्कर्ष आरोपित करने की एक होड़ सी मची रहती है। खासकर नकारात्मक और हिंसा, मारधाड़ और बलात्कार की खबरों में आज पत्रकारिता ज्यादा दिलचस्पी लेने लगी है। सनसनीखेज और स्कूप न्यूज देने के नाम पर पत्रकार यह भूल जाते हैं कि इससे समाज पर बुरा असर पड़ सकता है। खबरों को एक प्रोडक्ट न बनाकर उसे घटना के तौर पर ही पेश किया जाना सच्ची पत्रकारिता है।

'रांची एक्सप्रेस' में स्थानीय कला, संस्कृति, साहित्य और रचनात्मक कार्यों के लिए नियमित कॉलम अथवा पर्याप्त जगह की कमी कभी-कभी दिखती है। इन गतिविधियों को अधिक स्थान दने की आवश्यकता है। ऐसी सामग्रियों में सनसनी और उत्तेजना नहीं है, लेकिन मनुष्यता को बचाये रखने की एक बेचैनी जरूर सम्मिलित है। इस अखबार के बैनर तले पिछले तीस-बत्तीस वर्षों से प्रदेश का शीर्ष साहित्य सम्मान राधाकृष्ण पुरस्कार प्रत्येक वर्ष इस क्षेत्र के किसी श्रेष्ठ साहित्यकार को दिया जा रहा है। साहित्य के उन्नयन के प्रति 'रांची एक्सप्रेस' प्रबंधन का यह एक बहुमूल्य योगदान है। इस पुरस्कार योजना की शुरुआत करने वाले स्व. सीताराम मारू की इस दूरदर्शिता का साहित्य जगत कायल है कि उन्होंने बहुविध क्षेत्रों में प्रोत्साहन के लिए साहित्य का चुनाव किया।

'रांची एक्सप्रेस' झारखण्ड का 'पितृ पत्र'

✍ **रतन वर्मा,** *(प्रख्यात कथाकार, हजारीबाग)*

पिछले 50 वर्षों से 'रांची एक्सप्रेस' बिना रुके, बिना थके निरन्तर अपनी गति से चलता चला जा रहा है। झारखंड जैसे छोटे व पिछड़े राज्य से अखबार निकालना तलवार की धार पर चलने के समान है। जहां तक मेरी दृष्टि जाती है, झारखण्ड में 'रांची एक्सप्रेस' एक मात्र ऐसा अखबार है, जिसने नियमित प्रकाशन के क्षेत्र में पचास वर्ष पूरे किये हैं। इन पचास वर्षों में मेरी जानकारी में अनेक साप्ताहिक एवं दैनिक अखबार निकले किन्तु ज्यादा समय तक चल नहीं सके।

'रांची एक्सप्रेस' पिछले पचास वर्षों से इसलिए डटा हुआ है क्योंकि इसकी शुरूआत किसी खास उद्देश्य को लेकर स्व. सीताराम मारू एवं वरिष्ठ पत्रकार बलवीर दत्त ने की थी। दोनों के त्याग का प्रतिफल है 'रांची एक्सप्रेस' की सधी हुई लम्बी यात्रा। दोनों के बारे में कहा जा सकता है कि उन्होंने 'रांची एक्सप्रेस' को पत्रकारिता के मिशन के तौर पर लिया था न कि व्यवसाय के तौर पर। इन दोनों की मेहनत ने जब रंग लाया तो 'रांची एक्सप्रेस' दक्षिण बिहार का एक मात्र लोकप्रिय अखबार बन गया। उत्तर बिहार से प्रकाशित कुछ अखबारों में इन क्षेत्रों की बहुत कम खबरे छपा करती थी। 'रांची एक्सप्रेस' ने पूरे क्षेत्र की खबरें विस्तार से छापने का काम शुरू किया। इस क्षेत्र के छोटे से छोटे गांवों तक अखबार भेजने का काम किया। अखबार ने लोगों के बीच सामाजिक व राजनीतिक क्षेत्र में जागरण का जबरदस्त काम किया।

'रांची एक्सप्रेस' के प्रकाशन के पश्चात स्थानीय राजनीतिक कार्यकर्ताओं को अपनी बात रखने में काफी सहूलियत होने लगी। धीरे-धीरे 'रांची एक्सप्रेस' सम्पूर्ण दक्षिण बिहार के जन-जन की आवाज बन गया। उत्तर बिहार में भी 'रांची एक्सप्रेस' के हजारों पाठक बने। झारखण्ड की समस्याओं पर 'रांची एक्सप्रेस' की पैनी निगाह रहती थी, जो आज तक बरकरार है। 'रांची एक्सप्रेस' ने कई घोटालों पर से पर्दा उठाया। पत्रकारिता की साख को 'रांची एक्सप्रेस' मजबूती के साथ स्थापित किया।

मेरी कथा साहित्य साधना पर जब 'रांची एक्सप्रेस' की नजर पड़ी तो 'रांची एक्सप्रेस' प्रकाशन संस्थान ने 'राधाकृष्ण पुरस्कार' प्रदान कर मुझे सम्मानित किया। कथा लेखन के क्षेत्र में मुझे कई सम्मान मिले किन्तु 'रांची एक्सप्रेस' द्वारा मिले सम्मान का सुख आज भी याद कर रोमांचित हो उठता हूं। 'रांची एक्सप्रेस' ने झारखण्ड के प्रख्यात साहित्यकार राधाकृष्ण की स्मृति में 'राधाकृष्ण पुरस्कार' प्रारंभ कर एक बड़ा ऊंचा काम किया है। राधाकृष्ण ने हिन्दी कथा साहित्य के क्षेत्र में जो काम किया है, वह इस क्षेत्र से लिख रहे रचनाकारों से बहुत अधिक था। कई पत्रिकाओं ने राधाकृष्ण विशेषांक प्रकाशित किये। डा. भारत यायावर एवं राधाकृष्ण के पुत्र सुधीर लाल राधाकृष्ण की प्रकाशित रचनाओं को ढूंढ़ कर रचनावली के रूप में प्रकाशित करने के कार्य में जुटे हैं।

मुझे 'राधाकृष्ण पुरस्कार' प्रदान किये जाने की घोषणा के बाद 'रांची एक्सप्रेस' के वरिष्ठ पत्रकार विजय केसरी ने मेरा एक इंटरव्यू लिया था जिसमें मैंने कहा था कि झारखण्ड के लिए 'रांची एक्सप्रेस' इसलिए महत्त्वपूर्ण है क्योंकि विस्तृत पैमाने पर पत्रकारिता जगत से सर्वप्रथम इसी ने पाठकों को परिचित कराया था। मैं लगातार राष्ट्रीय स्तर की पत्रिकाओं में छपते रहने के बावजूद 'रांची एक्सप्रेस' में भी निरंतर अपनी कहानियां प्रकाशित करवाता रहा हूं।

मैं अपनी ओर से कहना चाहता हूं कि 'रांची एक्सप्रेस' का सरकुलेशन पहले जैसा नहीं रहा, बल्कि दिन-ब-दिन घटता जा रहा है। यह निश्चित चिन्ता की बात है। आखिर 'रांची एक्सप्रेस' में क्या कमी आ गई है, नए सिरे से विचार करने की आवश्यकता है। मेरा प्रबंधन को सुझाव है कि 'रांची एक्सप्रेस' कम से कम चार पन्ने बढ़ाए, कागज की क्वालिटी को अच्छा करे, सम्पूर्ण अखबार को रंगीन करे, एक नया गेटअप प्रदान करे और इसी 15 अगस्त को नये रूप में लांच करें। मेरा विश्वास है कि 'रांची एक्सप्रेस' अपने पुराने गौरव को प्राप्त कर लेगा। यही मेरी शुभकामना है।

मैंने देखा था पहले अंक का सारा प्रूफ

✍ **दिलीप दाराद,** *(सम्पादक 'झारखंड कांग्रेस सम्वाद', रांची)*

सबसे पहले मैं उस महान शख्सियत को सलाम करता हूं, जिसके दिल में रांची को पत्रकारिता जगत में स्थान दिलाने का जुनून हिलोरें ले रहा था। उस महान दूरद्दष्टा स्व. सीताराम मारू ने साप्ताहिक की यात्रा कराते हुए रांची को अपना हिन्दी दैनिक अखबार देकर समाचारपत्रों की दुनिया में अपना नाम स्वर्ण अक्षरों में अंकित करा लिया।

बात सन् 1963 माह अगस्त की है, जब उन्होंने अपने मन में उपज रही भावना को सरकार रूप देने की ओर कदम बढ़ा लिया था। उन दिनों रांची के बागला प्रेस से 'हमारा मन' मासिक हिन्दी पत्रिका का प्रकशन हो रहा था और मैं उस पत्रिका के लिए काम करता था। अचानक पता चला कि इसी महीने स्वतंत्रता दिवस की पूर्व संध्या पर 'रांची एक्सप्रेस' हिन्दी साप्ताहिक का प्रकाशन होगा।

बिहार के तत्कालीन राज्यपाल अनन्तशयनम् आयंगर रांची के गोविन्द भवन में उसका विधिवत् उद्घाटन करेंगे। साप्ताहिक 'रांची एक्सप्रेस' की छपाई की जिम्मेवारी बागला प्रेस को दी गयी। सौभाग्य कहिए मेरा। 'रांची एक्सप्रेस' साप्ताहिक के प्रथम अंक, जो महामहिम राज्यपाल के कर-कमलों से उद्घाटित होने जा रहा था, का सारा प्रूफ मैंने देखा था। उस समय से 'रांची एक्सप्रेस' प्रकाशन अबाध रूप से जारी रहा और फिर साप्ताहिक से 'रांची एक्सप्रेस' दैनिक में बदल गया। रांची ही नहीं इस पठारी क्षेत्र को अपना दैनिक 'रांची एक्सप्रेस' के रूप में देने वाले स्व. सीताराम जी मारू को सदा याद किया जायेगा। 'रांची एक्सप्रेस' से प्रथम लगाव के कारण मैं एक प्रकार से इसका मुरीद हो गया। 'रांची एक्सप्रेस' तब से लेकर आज तक रोज पढ़ता रहा हूं। निरंतर 'रांची एक्सप्रेस' में निखार आता गया है। समाचारों का

संकलन बेजोड़ है। 'रांची एक्सप्रेस' के उस प्रयास की मैं सराहना करता हूं जिसके तहत सुदूर ग्रामीण इलाकों के समाचारों को पूरी निष्ठा से अपने आप में समेटने का प्रयास किया जाता रहा है। 'रांची एक्सप्रेस' में सम्पादीय के साथ-साथ उच्चकोटि के लेख पठनीय होते हैं। 'रांची एक्सप्रेस' जिस दिन मेरे हाथ में नहीं आ पाता उस दिन अजीब-सा सूनापन लगता है। इस दैनिक के सम्पादक श्री बलबीर दत्त ने अखबार को रोचक बनाने में कठिन परिश्रम किया है और कर रहे हैं। यही कारण है कि रांची से इन दिनों बहुत से दैनिक अखबारों का प्रकाशन होने के बाद भी ग्रामीण इलाकों में आज भी 'रांची एक्सप्रेस' का क्रेज कायम है।

इमरजेंसी : सादा मुखपृष्ठ मुखर विरोध

✍ **गौतम सागर राणा,** *(पूर्व विधायक/उपाध्यक्ष, झारखण्ड विकास मोर्चा)*

'रांची एक्सप्रेस' सचमुच आमजन की आवाज के रूप में जाना जाता है। इसका इतिहास ऐसा है, जिसपर गर्व किया जा सकता है। यह मात्र अखबार की भूमिका तक ही सीमित नहीं रहा बल्कि अपने पचास वर्ष के सफर के दौरान इसने लोगों को समस्याओं के प्रति आगाह व सावधान किया, एकजुट किया और आंदोलन करने के लिए प्रेरित किया। जब 'रांची एक्सप्रेस' साप्ताहिक के रूप में पाठकों तक पहुंचा था पाठकों को अंदाजा हो गया था कि निश्चित तौर पर यह अखबार कुछ करेगा। अखबार ने सचमुच ऐसा ही कुछ कमाल किया।

मुझे याद है, जब इंदिरा गांधी ने देश में इमरजेंसी की घोषणा की थी तब 'रांची एक्सप्रेस' ने मुखपृष्ठ सादा रखकर अद्‌भुत विरोध किया था। इमरजेंसी से पहले और बाद में भी जबकि अखबार पर सेंसरशिप लागू हो गया था अखबार ने विरोध के तेवर कम नहीं किये थे। देश के बड़े नेताओं को जेल में बंद कर दिया गया था। मैं भी लोकनायक जयप्रकाश नारायण का छोटा सिपाही था। हजारीबाग में गिरफ्तार हो गया था। उस वक्त तक हम जैसे सैकड़ों क्रांतिकारियों की कोई पहचान बन नहीं पाई थी। हम लोगों की गिरफ्तारी पर उत्तर बिहार से प्रकाशित अखबारों ने मौन धारण कर लिया था किन्तु 'रांची एक्सप्रेस' ने मोटे अक्षरों में इस गिरफ्तारी की खबर छाप दी थी। जिसकी चर्चा आज भी जे.पी. आंदोलनकारियों के बीच में होती रहती है।

देसाई सरकार पर सम्पादकीय

इमरजेंसी के बाद मोरारजी देसाई के नेतृत्व में सरकार का गठन होने पर 'रांची एक्सप्रेस' ने जो संपादकीय लिखा था उसका एक-एक वाक्य के मस्तिष्क में जीवित है। उक्त संपादकीय में उल्लास-प्रदर्शन कम और विचार एवं दृष्टि ज्यादा थी। मिली-जुली पार्टियों के एक पार्टी में विलय होने से बनी नई सरकार की बुनियादी चुनौतियों को रेखांकित कर 'रांची एक्सप्रेस' ने सावधान किया था। विपक्ष को कोई भी एक अवसर न देने को कहा गया था। शायद उस वक्त के नेताओं ने 'रांची एक्सप्रेस' के संपादकीय पर ध्यान दिया होता तो समय से पहले मोरारजी देसाई की सरकार न जाती और न ही जनता पार्टी इतने टुकड़ों में बटकर अपना अस्तित्व खोती।

'रांची एक्सप्रेस' अपने स्थापनाकाल से ही इस क्षेत्र के शोषण पर फोकस करता रहा। मैंने बतौर विधायक विधानसभा में कई बार झारखण्ड अलग प्रांत गठन की माँग को उठाया था। 'रांची एक्सप्रेस' ने इसे प्रमुखता से छापा था। दक्षिण बिहार के प्रति बिहार सरकार की दोहरी नीति पर विधानसभा में कई बार 'रांची एक्सप्रेस' की प्रतियां लहराई गई थी। धीरे-धीरे दक्षिण बिहार के नेताओं का 'रांची एक्सप्रेस' मुख्य पत्र बन गया था। उस वक्त कई बड़े अखबार पटना से प्रकाशित हुआ करते थे, वे झारखण्ड अलग प्रांत की मांग पर खबरे छापते तो थे किन्तु खबरों को जो स्थान व शब्द मिलना चाहिए था, नहीं मिलता था। 'रांची एक्सप्रेस' ने इस दिशा में बड़ा प्रयास किया।

'रांची एक्सप्रेस' के संपादक बलबीर दत्त ने कई बार झारखण्ड अलग प्रांत के औचित्य पर बेबाक ढंग से अपनी बातों को रखा। अलग प्रांत के लिए लड़ी जा रही लड़ाई को उन्होंने जायज व सही ठहराया। इस तरह की बात 'रांची एक्सप्रेस' के अलावा उत्तर बिहार से प्रकाशित किसी ने भी नहीं कही। झारखण्ड अलग प्रांत की मांग धीरे-धीरे बड़ा मुद्दा बन चुका था। 'रांची एक्सप्रेस' ने पटना में भी अच्छी जगह बना ली थी। सरकार व इस क्षेत्र के विकास की जवाबदेही जिनके कंधों पर थी, वे 'रांची एक्सप्रेस' में छपी खबरों पर ध्यान देने लगे। विकास योजनाओं की बड़ी राशि तब तक उत्तर बिहार में खर्च हो जाती रही थी। 'रांची एक्सप्रेस' की तल्ख टिप्पणियों ने कुछ राशि दक्षिण बिहार पर भी खर्च करने को विवश कर दिया था।

अलग प्रान्त क्यों?

मेरा पक्का मानना है कि झारखण्ड अलग प्रांत के मुद्दे पर दक्षिण बिहार के कई नेता जमीनी तौर पर संघर्षरत थे, ठीक उसी प्रकार 'रांची एक्सप्रेस' अखबार के माध्यम से यह लड़ाई लड़ी जा रही थी। मुझे याद है 'रांची एक्सप्रेस' के संपादक बलवीर दत्त ने मुखपृष्ठ पर अलग प्रांत क्यों? विषय पर एक पुरजोर लेख लिखा था। इसने आंदोलनकारियों के लिए संबल का काम किया था। बाद के दिनों में 'रांची एक्सप्रेस' ने दक्षिण बिहार के राजनीतिक एवं सामाजिक संगठनों के प्रतिनिधियों से 'अलग प्रांत क्यों' मुद्दे पर बहस के रूप में लेखमाला प्रकाशित की थी। इस लेखमाला ने झारखण्ड आंदोलन को जनजन तक पहुंचाने का कार्य किया था। संभवतः इन्ही सब छोटे-छोटे प्रयासो का प्रतिफल हुआ कि बहरी सरकार जागी और अंततः झारखण्ड प्रांत अस्तित्व में आया।

मेरी दृष्टि में 'रांची एक्सप्रेस' एक वैचारिक अखबार है। यह आम जन का अखबार है। इसकी पहचान जनजन की आवाज के रूप में भी की जाती है। यह एक निष्पक्ष और निर्भीक अखबार है।

एक दौर वह भी था दोस्तो

✍ **कुशेश्वर ठाकुर,** *(वरिष्ठ पत्रकार, रांची)*

'रांची एक्सप्रेस' का एक दौर वह भी था , जब वह कई मोर्चों पर एक साथ संघर्ष कर रहा था। सबसे बड़ा अवरोध आर्थिक दबाव था। 'रांची एक्सप्रेस' कुछ व्यक्तियों के जोश, जज्बा और जुनून की उपज था। साधन अत्यंत सीमित थे। 15 अगस्त, 1963 को एक साप्ताहिक के रूप में शुरू हुआ 'रांची एक्सप्रेस' भीषण झंझावातों से जूझता रहा। पर उक्त भीषण झंझावातों में भी यह दीया टिमाटिमाता रहा, पर पूरी शिद्दत से जलता रहा। इसके ऊर्जा स्रोत थे सीताराम जी मारू। संस्थापक संपादक बलबीर दत्त जी के लिए पत्रकारिता आराधना थी और शब्द साधना। मेरा ख्याल है कि जिस बात को अध्ययन और अनुभव से नहीं जाना जा सकता, उसे आराधना और साधना से जाना जा सकता है। बलबीर जी की लेखनी आराधना थी और चिंतन-मनन साधना।

आज के सुविधाभोगी पत्रकार सोच भी नहीं सकते कि आज से पचास वर्ष पूर्व पत्रकारिता और पत्रकार समस्याओं और अभावों के किस दौर से गुजर रहे थे। कबीर ने कहा था-'जो घर जारै आपना चले हमारे साथ।' और महान साहित्यकार और पत्रकार स.ही. वात्स्यायन 'अज्ञेय' ने, जब वह 'दिनमान' से पूर्व 'प्रतीक' निकाल रहे थे, कहा था, 'जो पत्रकार सत्तू पीकर रह सके वह हमारे साथ आए।' अज्ञेय के इस कथन की तीनों शब्द-शक्तियों अभिधा, लक्षणा और व्यंजना पर ध्यान दीजिए।

चूंकि अज्ञैय का यह कथन मेरे जेहन में व्याप्त था, मैं 'रांची एक्सप्रेस' से जुड़ गया। इससे पूर्व रांची में ही मैं एक अंग्रेजी द्विसाप्ताहिक (बाई वीकली) 'दि न्यू रिपब्लिक' से जुड़ा था।

'रांची एक्सप्रेस' से जुड़ने के बाद ही व्यावहारिक रूप में मैं अनुभव कर पाया कि जीवन अविकल कर्म है, हलचल है, परिवर्तन है, उसमें सुख और शांति कहां? 'रांची एक्सप्रेस' इस बात का सबूत है कि मानव के महान कार्य छोटे-छोटे संघर्षों पर विजय प्राप्त करके ही सम्पन्न होते हैं। अभावों और कष्टों को कदम-कदम पर सहने वाले मौन साधक अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए निरन्तर दुःख, पीड़ा, कष्ट झेलते रहते हैं और अंत में सफल हो ही जाते हैं।

'रांची एक्सप्रेस' से जब मैं जुड़ा उस वक्त इसका प्रेस लालपुर में चौक के पास था। शनिवार को प्रातः 9 बजे से लेकर देर रात तक जब तक पेपर छप नहीं जाता था, भोजन-काल के डेढ़-दो घंटे को छोड़कर मैं लगातार घंटों ड्यूटी पर रहता। सोमवार से शुक्रवार तक हर रोज मैं बलबीर जी से कार्यालय में सामयिक विचार-विमर्श और हर अंक के लिए सामग्री-चयन और कार्यावंटन समझता। बलबीर जी जितने गंभीर हैं उतने ही विनोदी भी हैं। कुछ समय पश्चात् जब प्रेस लालपुर से अपर बाजार, बड़ा लाल स्ट्रीट स्थित सीताराम जी के आवास में स्थानान्तरित हो गया, उस वक्त 'रांची एक्सप्रेस' की वर्तमान बिल्डिंग के एक हिस्से में खपरैल मकान में कुछ अलग-अलग कमरे थे। मेरी आंखों में अब भी वे खपरैल कमरे सजीव हैं।

साप्ताहिक 'रांची एक्सप्रेस' में संपादकीय विभाग में हम सिर्फ दो व्यक्ति थे- श्री बलबीर दत्त और मैं-क्रमशः संपादक और सहायक संपादक। कार्य-पीर, बावरची, भिश्ती, खर। समाचार संकलन, उप-संपादन या पुनर्लेखन, प्रूफ-संशोधन, अनुवाद और कुछ प्रेस-कांफ्रेंस और कवरेज मेरे जिम्मे थे। सम-सामयिक विषयों के प्रति बलबीर जी जितने संजीदा थे शीर्षक लगाने में भी उतने ही निपुण। उनके कुछ शीर्षक, खासकर कवर-स्टोरी के, काफी चर्चित हुए थे। कांग्रेस के यंग तुर्क ग्रुप की नेता इंदिरा गांधी के विरोधी गुट में तारकेश्वरी सिन्हा अग्रणी थी। इंदिरा जी को तुर्केश्वरी की संज्ञा देते हुए संबद्ध समाचार का शीर्षक बनाया गया तारकेश्वरी बनाम तुर्केश्वरी। यह बहुत चर्चित हुआ। 'रांची एक्सप्रेस' में छपी खोजपूर्ण सामग्रियों के आधार पर तत्कालीन बिहार विधानसभा और संसद के दोनों सदनों में कई बार सत्तापक्ष को कठघरे में खड़ा किया गया और जोरदार बहसें हुई। कई बार 'रांची एक्सप्रेस' को कानूनी लड़ाइयां भी लड़नी पड़ीं।

आज से पचास साल पहले पत्रकार मूल्यों की पत्रकारिता कर रहे थे। वे खुद अभावग्रस्त थे, पर पत्रकारिता समृद्ध थी। आज स्थिति इसके उलट है। आज जबकि कई साधन-सम्पन्न घरानों की पत्रिकाएं 'दिनमान', 'धर्मयुग', 'सारिका', 'साप्ताहिक हिन्दुस्तान' बन्द हो गयी हैं, पिछले पचास वर्षों से 'रांची एक्सप्रेस' का लगातार निकलते रहना अपने आप में एक उपलब्धि है। पत्र की दीर्घजीविता की कामना।

●●●

वह था अखबार का स्वर्णिम काल

✍ **डॉ. ज्ञान पाठक,** *(पत्रकार एवं लेखक, नयी दिल्ली)*

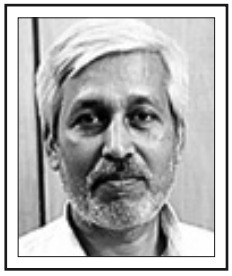

'रांची एक्सप्रेस' से नौकरी छोड़े लगभग 22 वर्ष हो गये, परन्तु वहां से पत्रकारिता के जो मूल्य लेकर बाहर आया था वे मूल्य अब तक बने हुए हैं। पत्रकारिता के वे मूल्य ही वास्तव में जीवन मूल्य हैं। एक पेशे के रूप में पत्रकारिता के तथा पत्रकार के रूप में जीवन के जो मूल्य मैंने समझे और जिसका आनन्द उठाना मैंने प्रारम्भ किया था, वही आनंद एक लेखक तथा पत्रकार के रूप में मुझे आज भी प्राप्त होता है।

पत्र का स्वर्णकाल

जिन दिनों मैंने 'रांची एक्सप्रेस' में नौकरी प्रारंभ की थी उन दिनों का माहौल ऐसा ही था। संभवत: वह 'रांची एक्सप्रेस' का स्वर्णिम काल था। ऐसी शक्ति संभवत: इसलिए थी क्योंकि 'रांची एक्सप्रेस' की पत्रकारिता का मूल आधार था- दायित्वबोध और कर्तव्य, लेखन एवं चिंतन की शुद्धता तथा पवित्रता एवं निर्भीकता। इन मूल्यों की स्थापना का श्रेय स्वाभाविक रूप से संपादक बलबीर दत्त तथा प्रबंध निदेशक सीताराम मारू को जाता है। मूल्यों के प्रति दोनों की प्रतिबद्धता इतनी कि इन्होंने अपने संबंधों को भी बीच में नहीं आने दिया। समाचारों को मूल्यों के आधार पर लिखा जाता था और छापा जाता था।

'रांची एक्सप्रेस' का माहौल जीवंत था। आम आदमी की पहुंच सीधे संपादक तक होती थी। इसके लिये पूर्व में समय लेने की कोई आवश्यकता नहीं थी। कोई खानापूर्ति नहीं। संपादक सबकी बातें धैर्य से सुनते और हमेशा सबके लिये उपलब्ध होते, केवल संपादकीय लिखने के समय को छोड़कर जब उनके चेम्बर के बाहर लालबत्ती जल रही होती।

जब मैं 18 वर्ष का था तभी मुझे यह सब पता लग गया था, क्योंकि मैं 'रांची एक्सप्रेस' कार्यालय कई बार जा चुका था वह भी उस समय जब लाल बत्ती जल रही होतीं। मेरा विश्वास था कि संसार की विषमताओं और दुखों को दूर करने में लेखन के जरिये मैं भी अपना योगदान कर सकता हूं। मैं सम्पादकजी से मिलने पहुंचा। उन्होंने मुझसे थोड़ी बातचीत की और पूछा कि मैं क्या करता हूं। उस समय मैं इंटर में ही पढ़ता था। सुनकर वह मुस्कराये। फिर कहा- कुछ लिखकर लाये हैं क्या? मैंने एक पृष्ठ में कुछ लिखा था। उन्होंने पढ़ा और कहा- आपकी हैंडराइटिंग ठीक है। आप लिखना प्रारंभ करें। और इस तरह मैं पत्रकार बन गया।

कामकाज का निराला अंदाज

फिर शुरू हुआ मेरे गहन प्रशिक्षण का अनौपचारिक कार्यक्रम। लेखन की शुद्धता और पवित्रता प्रथम पाठ था। संपादक जी ने कहा कि वह प्रत्येक त्रुटि के लिये मुझसे एक पैसा लेंगे। मैंने इसे गंभीरता से लिया और त्रुटियां कम होती चली गयी। प्रत्येक माह दंड की राशि जोड़ी जाती रही और मैं भयभीत रहा कि कहीं दंड में सारा वेतन नहीं चला जाये। एक समय आया जब संपादकजी ने कहा कि आपके दंड की राशि माफ की जाती है, क्योंकि आपने भाषाई त्रुटियों पर संतोषजनक जीत हासिल कर ली है। मेरी खुशी का ठिकाना न रहा। दूसरा पाठ था लेखन की पवित्रता का। बलबीर दत्तजी कहा करते थे कि संवाददाता के रूप में आप ही संपादक की ज्ञानेद्रियां हैं। यदि संवाददाता गलत देखता, सुनता और समझता है तो संपादक भी वैसा ही हो जाता है, क्योंकि संवाददाता ही संपादक के आंख-कान हैं। संपादक की संस्कृति, दृढ़ता और कामकाज का यह निराला अंदाज मुझे फिर कहीं नहीं मिला।

परिणाम यह था कि उस समय एक से बढ़कर एक संवाददाता और संपादकीय सहयोगी उनकी टीम में थे, जो स्वयं भी मानदंड स्थापित करने वालों में थे तथा मेरे जैसे छोटी उम्रवाले छात्र को प्रोत्साहित करने में कोई कसर नहीं छोड़ते

थे। उस समय 'रांची एक्सप्रेस' कोई दफ्तर नहीं बल्कि एक परिवार की तरह था- पूरी तरह जीवंत। मैंने अपनी पढ़ाई यहीं रहकर पूरी की जिसमें सबका सहयोग मिला।

मैं 'रांची एक्सप्रेस' के उस स्वर्णिम युग की वापसी की कामना कहता हूं जो मेरे विचार से संभव है, क्योंकि यहां पत्रकारिता के मूल्य अब भी वही हैं जो पहले थे। अन्य कमियां तो दूर की जा सकती है, बशर्ते प्रबंधन और संपादकीय विभाग की वही पुरानी लयबद्धता स्थापित कर दी जाये जो प्रबंध निदेशक सीताराम मारू और बलबीर दत्त के नेतृत्व में स्थापित की जा सकी थी।

'तमस' सीरियल पर चर्चित प्रतिवाद

✍ **सुदर्शन भगत,** *(सांसद, लोहरदगा)*

'रांची एक्सप्रेस' जनचेतना का वाहक रहा है। देश, राज्य और क्षेत्र की हर धड़कन को सहेजते हुए इसे आम पाठकों तक पहुंचाने में इस अखबार की जो भूमिका रही है, वह पत्रकारिता जगत के इतिहास मे सदा के लिए अंकित हो चुकी है। आज भी यह अखबार पत्रकारिता के उच्च मापदंडों तथा अपने सामाजिक सरोकारों के प्रति पूरी तरह समर्पित है। मैं गुमला जिले के डुमरी प्रखंड अंतर्गत टांगरडीह गांव का रहने वाला हूं। मेरे पिता क्षेत्र में एक कर्मठ और कर्तव्यनिष्ठ शिक्षक के रूप में जाने जाते थे।

नैतिक मूल्यों का बीजारोपण

वह जब भी डुमरी जाते थे तो लौटते वक्त उनके हाथ में 'रांची एक्सप्रेस' की एक प्रति जरूर होती थी। मेरा बचपन भी अखबार को पढ़ते हुए बीता। 'रांची एक्सप्रेस' में प्रकाशित संपादकीय और राष्ट्रभक्ति से परिपूर्ण आलेख और देश की ज्वलन्त समस्याओं पर आधारित लेख पढ़ते हुए मेरे मानस में जिन मनोवृतियों का निर्माण हुआ, वह आज भी बना हुआ है। अध्ययन काल से ही मेरे मन में अपने क्षेत्र और समाज की सेवा का भाव था। उच्च शिक्षा के लिए गुमला आ गया और पढ़ाई के साथ-साथ अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद से जुड़ गया। अभाविप के दायित्वों का निर्वाह करते हुए मेरा प्रवेश राजनीति में हुआ। राजनीति में सफलताएं और असफलताएं दोनों मिलीं। मगर नैतिक मूल्यों का जो बीजारोपण इस अखबार के माध्यम से मेरे अंदर हो चुका था, उसका निर्वहन करने का भरसक प्रयास आज भी कर रहा हूं।

लोकसभा सत्र के दौरान जब मैं दिल्ली में होता हूं, तब 'रांची एक्सप्रेस' अखबार को आदरणीय पीएन सिंह (सांसद धनबाद) से मांग कर पढ़ता हूं या फिर इंटरनेट के माध्यम से अपने क्षेत्र व संपूर्ण झारखंड के समाचारों से वाकिफ होता हूं। 'रांची एक्सप्रेस' में प्रकाशित समाचार काफी विश्वसनीय और निष्पक्ष होते हैं। इस पत्र के प्रधान संपादक बलबीर दत्त की लेखनी का मैं आज भी कायल हूं। जिस तरह झारखंड में एक समय अखबार का मतलब 'रांची एक्सप्रेस' हुआ करता था, उसी प्रकार टीवी का मतलब दूरदर्शन होता था। 1988 में दूरदर्शन पर भारत-पाक विभाजन पर प्रख्यात साहित्यकार भीष्म साहनी की किताब पर आधारित और गोविंद निहलानी द्वारा निर्देशित एक चर्चित सीरियल 'तमस' पूरे देश में चर्चा का विषय बना था। इसमें कई जगहों पर जो भ्रांतिपूर्ण तथ्य दर्शाये गये थे, उसका प्रतिवाद श्री दत्त ने ही अपनी प्रखर लेखनी के माध्यम से किया था। उनके प्रतिवाद का ही प्रभाव था कि सीरियल के दृश्यों में अन्ततः संशोधन करते हुए निर्देशक को खेद व्यक्त करना पड़ा था।

संजीवनी से मार्ग दर्शन

आज समाज के हर क्षेत्र में गिरावट आई है। राजनीति और पत्रकारिता भी इससे अछूते नहीं है। मगर इस अखबार की साख आज भी बरकरार है। इसके पीछे निश्चित रूप से अखबार के नैतिक मापदंडों की भूमिका रही है। और इसका श्रेय प्रधान संपादक बलबीर दत्त, संस्थापक स्व. सीताराम मारूजी के साथ-साथ पूरी संपादकीय टीम को जाता है। अखबार में प्रकाशित संपादकीय पन्ना आज भी काफी प्रभावी है।

एक्सप्रेस से जुड़े कई यादगार क्षण

✍ **अवधेश कुमार पाण्डेय,** *(निदेशक, सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, झारखंड)*

सूचना सेवा में पदस्थापन के कारण समाचारपत्रों की खूबियों, खामियों एवं महत्व को मैं अच्छी तरह जानता हूं। पटना में पदस्थापन के दौरान मैं 'रांची एक्सप्रेस' को नहीं जानता था। 'रांची एक्सप्रेस' से मेरा पहला परिचय 'रांची एक्सप्रेस' के बोकारो संवाददाता कुमार दिनेश सिंह के कारण हुआ।

यह वाकया वर्ष 1986 का है। उस समय मैं धनबाद जिला जनसम्पर्क पदाधिकारी के पद पर पदस्थापित था। अविभाजित बिहार राज्य में उस समय धनबाद जिले के अधीन वर्तमान बोकारो जिला भी था। बोकारो में 20 सूत्री समिति की बैठक पर प्रेस कान्फ्रेंस का आयोजन करना था। जिन संवाददाताओं को प्रेस प्रमाणपत्र निर्गत किये गये थे उनमें कुमार दिनेश सिंह भी सम्मिलित थे। उस समय पटना में 'नवभारत टाइम्स', 'टाइम्स आफ इंडिया', 'हिन्दुस्तान' एवं 'हिन्दुस्तान टाइम्स' का प्रकाशन शुरू हो चुका था। धनबाद में इन चारों समाचारपत्रों का प्रचार-प्रसार अच्छा-खासा था। इन समाचारपत्रों की तुलना में 'रांची एक्सप्रेस' का प्रसार कम था। जबकि बोकारो में ठीक इसके विपरीत था। बोकारो में 'रांची एक्सप्रेस' का प्रचार-प्रसार सर्वाधिक था। धनबाद में पटना के समाचार-पत्रों से मेरा समन्वय अधिक था वनिस्बत 'रांची एक्सप्रेस' के। बोकारो में जब प्रेस कांफ्रेंस का आयोजन किया गया तब तत्कालीन उपायुक्त मदन मोहन झा ने निर्देश दिया कि 'रांची एक्सप्रेस' के संवाददाता को अवश्य बुलाया जाए। उसी दौरान कुमार दिनेश सिंह से संपर्क हुआ।

सबसे अधिक लोकप्रिय

बोकारो आने पर पता चला कि उस समय बोकारो में सबसे अधिक लोकप्रिय समाचार-पत्र 'रांची एक्सप्रेस' है। इससे 'रांची एक्सप्रेस' के प्रति मेरी अवधारणा परिवर्तित हो गयी। पुन: 1989-90 के दौरान धनबाद में पत्रकार उत्पीड़न कांड हुआ और पत्रकारों के आंदोलन में 'रांची एक्सप्रेस' के संपादक बलवीर दत्त के नेतृत्व में धरना-प्रदर्शन हुआ। जिसमें प्रशासन की ओर से मुझे यह दायित्व सौंपा गया कि मैं 'रांची एक्सप्रेस' के संपादक बलबीर दत्त से मिलकर उन्हें सच्चाई बताऊं। चूंकि मेरा कोई सीधा संबंध श्री बलबीर दत्त के साथ नहीं था इसलिए मैंने 'हिन्दुस्तान' धनबाद के तत्कालीन संवाददाता के साथ मिलकर श्री दत्त के सामने सरकार का पक्ष रखा। उन्होंने सभी बातें धैर्यपूर्वक सुनी। इसी दौरान धनबाद में उपविकास आयुक्त जे.बी. तुबिद बराबर सलाह देते रहे कि मैं श्री दत्त के संपर्क में रहूं तथा सरकार के पक्ष को भी प्रकाशित करने हेतु उनसे अनुरोध करूं। क्योंकि 'रांची एक्सप्रेस' दक्षिण बिहार का एकमात्र ऐसा समाचारपत्र है जो निष्पक्ष समाचारों को प्रकाशित करता है। इससे 'रांची एक्सप्रेस' के प्रति मेरा विश्वास और अधिक गहरा हो गया।

मीडिया से दूरी

झारखंड गठन के बाद सन् 2000 में मेरा पदस्थापन रांची में हुआ। पदस्थापन के दूसरे दिन एहसास हुआ कि मीडिया एवं जनसम्पर्क विभाग के बीच दूरी काफी है तथा आपस में जो तालमेल होना चाहिए उसका अभाव है। पत्रकारों द्वारा तत्कालीन मुख्यमंत्री के सम्मान में दिये गये सम्मान समारोह में जनसंपर्क विभाग को नहीं बुलाया गया था और ना ही इसकी कोई सूचना दी गयी थी। बल्कि इस समारोह में पत्रकारों ने यह भी कह दिया कि यहां पीआरडी एक मरा हुआ विभाग है। इससे अच्छा हो कि विभाग को बंद कर दिया जाये। चूंकि मेरे पदस्थापन का दूसरा ही दिन था इसलिए मैं रांची में अवस्थित जनसम्पर्क विभाग के कार्यों का विश्लेषण करने लगा। विभाग में यहां पदस्थापित वरीय एवं कनीय पदाधिकारियों में पत्रकारों के संबंध में उनकी सोच एवं पहुंच पूर्णत: अधूरी लगी। तत्पश्चात मैंने श्री बलबीर दत्त से मिलकर संपर्क स्थापित करने का प्रयास किया। इसी दौरान मेरी दूसरी मुलाकात श्री बलवीर दत्त से हुई और मैंने उनसे विभाग के साथ बेहतर संबंध स्थापित करने के लिए काफी देर तक विचार-विमर्श किया। श्री दत्त की यह बात मुझे आज भी याद है कि आप पीआरडी के पहले पदाधिकारी हैं जिसने मेरे सामने आकर पीआरडी एवं प्रेस के संबंधों को लेकर संपर्क किया।

नहीं भूलती हौसले की वह उड़ान

✍ **गौरीशंकर मोदी,** *(व्यवसायी, समाजसेवी/पूर्व उपाध्यक्ष रांची महानगर जनसंघ)*

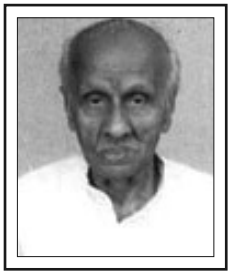

मुझे आज भी याद है। 1960 के दशक के शुरुआती दौर में छोटा सा रांची शहर और इसके आसपास के नगरों, कस्बों सहित पूरे छोटानागपुर के लोगों की सीमित जरूरतों की पूर्ति के लिये यहां लगभग सब कुछ था पर अपना कहा जा सकने वाले एक अदद अखबार नहीं था। यहां से एक-दो समाचार पत्र-पत्रिकाएँ अनियमित रूप से प्रकाशित तो होती थी पर वे यहां की जरूरतों की पूर्ति करने में अक्षम थी। यहां का जनमानस आपसी संपर्क सूत्र को मजबूत करने के लिये एक विश्वसनीय अखबार के लिये कुलबुलाता रहता था। इन जरूरतों से सभी लोग दो चार हो रहे थे। मैं भी उनमें से एक था।

उन्हीं दिनों अपने अभिन्न मित्र देवेंद्र कुमार दत्त (प्रधान संपादक बलबीर दत्त के बड़े भाई) से होने वाली परस्पर बातचीत में अक्सर हमलोग यह विचार किया करते थे कि आखिर समाचारपत्र प्रकाशन जैसे भागीरथ कार्य को कैसे किया जाये, क्योंकि हम दोनों के पास हौसला तो भरपूर था पर अखबार छापने के लिये टीम, अनुभव और पूंजी की भी तो जरूरत थी। आखिर वही हुआ जो होता है। यदि विचार अच्छा हो तो रास्ता खुद-ब-खुद मिल जाता है। हमारी भावनाओं को पुख्ता आधार मिलने लगा। सीताराम मारू तथा आत्माराम शाह जैसे लोगों के आ मिलने से हम दोनों की योजनाएं परवान चढ़ने लगी। उधर बलबीर दत्त का साथ मिला। वह संपादक का दायित्व संभालने को तैयार हो गये और साप्ताहिक 'रांची एक्सप्रेस' का पहला अंक लोगों के हाथों में आ गया।

नित नयी मंजिल

मुझे इस बात का बहुत गर्व है कि शुरुआती दौर में मुझे 'रांची एक्सप्रेस' जैसे अखबार का निदेशक बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ जिसने न केवल क्षेत्रीय पत्रकारिता में क्षेत्र का मजबूत प्रतिनिधित्व किया बल्कि राष्ट्रीय भावनाओं और जनाकांक्षाओं को भी उजागर किया। 'रांची एक्सप्रेस' समय के साथ बल्कि समय से भी दो कदम आगे कदमताल करते हुए हमेशा बढ़ता रहा। तकनीकी दृष्टिकोण से यह लंबे समय तक सबसे आगे रहा जबकि प्रसार के मामले में तो जितना

कहा जाये उतना ही कम है। लेकिन प्रसार की बातें जरा विस्तार से। मुझे आज भी याद है कि शुरुआती दौर में मैं स्वयं एचईसी क्षेत्र में जाकर 10 पैसे में 'रांची एक्सप्रेस' बेचा करता था। तब अपर बाजार में ऐसा करने में झेंप लगती थी। उस समय अखबार बेचने से कहीं अधिक यह भावना थी कि लोग इसे पढ़ें और इससे जुड़ें। इसके साथ ही यदि संभव हो तो जिन विचारों से प्रभावित होकर 'रांची एक्तप्रेस' छापा जा रहा है उसे वे अपना भरपूर साथ दें। इसीलिये यदा-कदा अखबार की प्रतियां नि:शुल्क भी बांट दी जाती थी। यही दृष्टिकोण हमारे अन्य सहयोगियों सीतारामजी, आत्मारामजी, देवेंद्रजी आदि का भी था।

आज कभी-कभी सोचता हूं तो लगता है कि अखबार को आगे बढ़ाने के साथ ही जनाकांक्षाओं को मजबूत शक्ल देने के लिये हम सभी हमउम्र साथियों ने जो रास्ता चुना वह बेहद सही था। इसी का प्रभाव था कि दिल्ली, पटना, कलकत्ता के अखबारों की यहां पहुंच के बावजूद छोटानागपुर में लंबे समय तक अखबार का मतलब आम बोलचाल की भाषा में 'रांची एक्सप्रेस' ही था। अधिकारी, व्यापारी, उद्यमी, गृहणियां, छात्र-शिक्षक और यहां तक कि रिक्शे-ठेले वाले भी 'रांची एक्सप्रेस' बड़े चाव से पढ़ते थे। इसका श्रेय विशेष रूप से संपादकीय विभाग को जाता है क्योंकि अखबार के पन्नों पर सभी का दुख-दर्द होता था, सभी के सपने होते थे और सभी के अरमान होते थे। यह कोई आसान काम नहीं था। पर हम सभी का हौसला भी सामान्य नहीं था। उत्साह से भरे हम सभी साथी निरंतर अखबार को नित नयी मंजिल पर पहुंचा रहे थे।

पुराने मूल्यों का महत्व

मेरी हार्दिक इच्छा बस इतनी है कि 'रांची एक्सप्रेस' अपने पुराने मूल्यों व विचारों का साथ कभी न छोड़े। एक बात और बताना चाहूंगा। जब हमने यात्रा शुरू की थी तब हम बस एक अच्छा और अपने क्षेत्र की आवश्यकताओं के अनुकूल अखबार निकालना चाहते थे। बस इतना ही और कुछ नहीं। हमने कभी यह नहीं सोचा कि सौ-पचास साल चलने वाले अखबार की शुरुआत हमने की है। लेकिन हां... इतना जरूर है कि बढ़िया तरीके से अगला अंक निकालने, नियमित रूप से निकालने और विश्वसनीयता-निष्पक्षता को निरंतर बहाल रखने की नीति में ही सभी कुछ समाहित था।

जो कभी रुका नहीं, झुका नहीं

✍ **राम प्रसाद जालान ,** *(व्यवसायी एवं भाजपा के वरिष्ठ नेता)*

पचास वर्षों का कालखंड किसी भी संस्थान के लिए एक अर्थ रखता है। कई उतार-चढ़ावों के बाद 'रांची एक्सप्रेस' ने प्रकाशन के पचास वर्ष पूरे कर लिये। इस दौरान अखबार का प्रकाशन एक दिन के लिए भी नहीं रुका, वास्तव में यह एक बड़ी उपलब्धि है। 'रांची एक्सप्रेस' के प्रबंधक, सम्पादक और कर्मचारी इसके लिए बधाई के पात्र हैं।

वस्तुतः 'रांची एक्सप्रेस' सिर्फ अखबार ही नहीं, बहुत कुछ है, जो प्रभावित करता है। आज भी अगर 'रांची एक्सप्रेस' नहीं पढ़ता हूं तो कुछ अधूरा-अधूरा सा लगता है। लगता है कुछ छूट रहा है। वैसे इंटरनेट की सुविधा के कारण अब तो कहीं भी 'रांची एक्सप्रेस' पढ़ा जा सकता है।

मारू परिवार से पारिवारिक स्तर के संबंधों के कारण साप्ताहिक 'रांची एक्सप्रेस' के प्रकाशन की योजना से लेकर इसके दैनिक अखबार में बदलने तक की सारी घटनाएं आज भी आंखों के सामने घूम जाती है। 'रांची एक्सप्रेस' का प्रकाशन जब आरम्भ हुआ है तब रांची बड़ा शहर नहीं था। शहर की ज्यादातर गतिविधियां मेन रोड और अपर बाजार तक सिमटी थी। अपर बाजार व्यावसायिक केन्द्र का।

अखबार को सामाजिक बदलाव का वाहक कहा जाता है, लेकिन यह लक्ष्य अखबार में सिर्फ समाचार में वृतांत देने से ही नहीं पूरा होता। अखबार को अपना सामाजिक दायित्व भी निबाहना चाहिए। 'रांची एक्सप्रेस' की सबसे बड़ी खूबी इसका सम्पादकीय पक्ष रहा है। सम्पादक बलबीर दत्त की किसी भी मुद्दे पर बेवाक टिप्पणियां प्रभावित करती हैं। 'रांची एक्सप्रेस' अपनी टिप्पणियों, लेखों और समाचारों से झारखंड की राजनीतिक, सामाजिक व्यवस्था को प्रभावित करने की स्थिति में रहा। इस अखबार का सम्पादकीय पक्ष हमेशा मजबूत रहा है। यह भी विचारणीय तथ्य है कि किसी अखबार का सम्पादक, संस्थापक सदस्य 50 वर्षों तक रहे। बीच की कुछ अवधि को यदि छोड़ दें तो लगता है 'रांची एक्सप्रेस' और बलबीर दत्त दोनों एक-दूसरे के पूरक बन गये हैं। विचारोत्तेजक लेख लिखने वाले विद्वानों, साहित्यकारों, लेखकों के कारण 'रांची एक्सप्रेस' ने पत्रकारिता के क्षेत्र में अपनी एक अलग पहचान और परम्परा बनायी, वह परम्परा आज भी कायम है।

सामाजिक, सामूहिक, राजनीतिक दबावों के आगे 'रांची एक्सप्रेस' कभी नहीं झुका। इसके अनेक उदाहरण हैं। आपातकाल के दौरान 'रांची एक्सप्रेस' देश के उन गिने-चुने अखबारों में था जिसने देश में आपातकाल लागू होने के खिलाफ अपना सम्पादकीय कॉलम खाली छोड़ दिया था।

इस अखबार के प्रति लोगों का जुड़ाव 1977 में उस समय देखने को मिला जब लोकसभा के चुनाव के ताजा नतीजों की जानकारी के लिए अल्बर्ट एक्का चौक पर 'रांची एक्सप्रेस' ने स्कोर बोर्ड लगाया। बिना किसी के कहे कुछ जोशीले युवक अल्बर्ट एक्का चौक से भागते हुए 'रांची एक्सप्रेस' कार्यालय पहुंचते थे और वहां से चुनाव नतीजे लेकर वापस अल्बर्ट एक्का चौक आते थे। उस समय मोबाइल फोन तो था ही नहीं, पी एंड टी की टेलीफोन व्यवस्था भी पुराने-घुराने स्टाइल में थी। ये उत्साही युवक पूरे दिन और रात भर दौड़-धूप करते रहे। याद रहे उस चुनाव में इंदिरा गांधी हार गयी थी और पहली बार केन्द्र में एक गैर कांग्रेस पार्टी नवगठित जनता पार्टी सत्ता में आ गयी थी।

मैं भी बन गया लेखक

स्कूल-कालेज में पढ़ाई के दौरान मैं विख्यात लेखक गुरुदत्त का साहित्य पढ़ा करता था। इस दौरान 'रांची एक्सप्रेस' में छपे समाचारों, सम्पादकीय टिप्पणियों तथा लेखों को लेकर अपनी अनुकूल-प्रतिकूल प्रतिक्रियाएं सम्पादक के नाम पत्र लिखकर जाहिर करता था। 'रांची एक्सप्रेस' कार्यालय में एक दिन सम्पादक बलबीर दत्त से मुलाकात हुई और उन्होंने मुझे प्रोत्साहित करते हुए कहा कि आप अच्छा लिखते हैं, 'रांची एक्सप्रेस' के लिए कुछ लेख आदि लिखिये। इसके बाद मेरी कई टिप्पणियां 'रांची एक्सप्रेस' में छपीं। यह सिलसिला काफी दिनों तक चला, लेकिन बाद में कुछ कारणों से लिखना कम हो गया। इसके बाद मैंने फिल्म समीक्षा लिखनी शुरू की जो प्रत्येक सोमवार को छपा करती थी। व्यावसायिक गतिविधियों में व्यस्तता के कारण यह सिलसिला बन्द हो गया।

बहारहाल स्थिति चाहे जो हो, आज भी 'रांची एक्सप्रेस' पढ़ता हूं। कई अखबार लेता हूं, लेकिन 'रांची एक्सप्रेस' पढ़े बिना संतोष नहीं होता। मैंने अपने हॉकर का टेलीफोन नम्बर तक लेकर रख लिया है। किसी दिन 'रांची एक्सप्रेस' नहीं मिलता है तो उसे फोन करके अखबार मंगाता हूं।

84 के दंगों के दौरान दायित्वपूर्ण भूमिका

✍ **विनय सरावगी,** *(अध्यक्ष, झारखंड प्रांतीय मारवाड़ी सम्मेलन)*

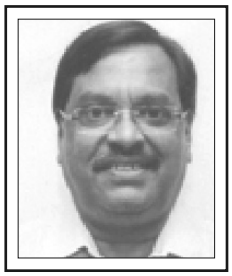

साप्ताहिक के दिनों की तो याद नहीं, पर 'रांची एक्सप्रेस' जब 1976 में दैनिक हुआ, तब से इसे नियमित रूप से पढ़ता आ रहा हूं। मेरे पिताजी स्व. हनुमान जी सरावगी की पठन-पाठन एवं लेखन में गहरी रुचि थी और इस कारण तत्कालीन अविभाजित बिहार की राजधानी पटना तथा देश की राजधानी नयी दिल्ली से प्रकाशित अधिकांश समाचारपत्र हमारे यहां आते थे। रांची से उन दिनों कोई दैनिक पत्र नहीं था। बिहार में अंग्रेजी में 'इंडियन नेशन' और हिन्दी में 'आर्यावर्त्त' का बोलबाला था। अंग्रेजी दैनिक 'सर्चलाइट' और हिन्दी दैनिक 'प्रदीप' इनके पीछे-पीछे थे। बिहार में पत्रकारिता इन चार समाचारपत्रों के इर्द-गिर्द घूमती थी। ऐसे समय में रांची से दैनिक समाचारपत्र का प्रकाशन सचमुच एक साहसिक कदम था।

विश्वसनीयता का कायल

'रांची एक्सप्रेस' से जुड़ाव का एक और कारण भी था। 'रांची एक्सप्रेस' के संस्थापक स्व. सीतारामजी मारू के साथ मेरे पिताजी की घनिष्ठता थी। सामाजिक स्तर पर भी दोनों में मिलना-जुलना था। इसलिए, दैनिक होने के बाद पहले दिन से ही 'रांची एक्सप्रेस' हमारे यहां नियमित आने लगा। जब 1980 में मैं लियो क्लब का अध्यक्ष बना तो स्व. सीताराम जी मारू के अनुज शिव भगवान जी मारू के कनिष्ठ पुत्र संजय मारू मेरे साथ सचिव बने। लियो क्लब से संबंधित समाचार 'रांची एक्सप्रेस' में बराबर छपते थे। इसलिए 'रांची एक्सप्रेस' पढ़ना मेरी आदत में शुमार हो गया, जो बदस्तूर अभी भी जारी है। बाद में तो तत्कालीन छोटानागपुर-संतालपरगना (अब झारखंड) में 'रांची एक्सप्रेस' की तूती बोलने लगी। इसके सम्पादक श्री बलबीर दत्त से भी पिताजी की घनिष्ठता थी और श्री दत्त अक्सर हमारे यहां आया करते थे। दोनों में विविध विषयों पर विचारों का आदान-प्रदान होता था, जो पिताजी के निधन तक जारी रहा। चूंकि पिताजी अंग्रेजी-हिन्दी के सभी प्रमुख समाचारपत्र पढ़ते थे और उनमें सामाजिक-राजनीतिक विषयों की गहरी समझ थी, अतः वह एक जागरूक पाठक के नजरिये से अपनी राय बताने में संकोच नहीं करते थे। बलबीरजी भी उनकी आलोचना को एक शुभचिंतक की भावना के रूप में ग्रहण करते थे। बलबीरजी के आग्रह पर पिताजी विविध विषयों पर अपने आलेख 'रांची एक्सप्रेस' को प्रेषित कर दिया करते थे, जो प्रमुखता से प्रकाशित होते रहे।

जहां तक मेरा प्रश्न है, मैं हमेशा 'रांची एक्सप्रेस' की विश्वसनीयता का कायल रहा हूं। यह तो सर्वविधित है कि 'रांची एक्सप्रेस' एक विशेष विचारधारा का प्रबल समर्थक रहा है। स्व. सीतारामजी मारू राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से सक्रिय रूप से जुड़े थे, जबकि मेरे पिताजी डा. राम मनोहर लोहिया से निकटता के कारण उनकी विचारधारा से प्रभावित थे। 1977 के लोकसभा चुनाव में संयोग से दोनों जनता पार्टी के समर्थन में साथ थे। उस चुनाव में जनता पार्टी ने केरल निवासी श्री रवीन्द्र वर्मा को रांची लोकसभा सीट से उम्मीदवार बनाया। श्री वर्मा मेरे पिताजी से पूर्व परिचित थे और जब उन्हें चुनाव प्रचार में कठिनाई होने लगी तो वह हमारे आवास में रहकर चुनाव संचालन करने लगे। एक तरह से हमारा आवास ही उनका चुनाव कार्यालय बन गया। 'रांची एक्सप्रेस' खुलकर जनता पार्टी के उम्मीदवार श्री वर्मा के समर्थन में था। 'रांची एक्सप्रेस' के संवाददाता समाचार संकलन करने हमारे आवास पर आया करते थे।

इंदिराजी की हत्या और अफवाहों का मुकाबला

'रांची एक्सप्रेस' के संबंध में एक और बात कही जा सकती है कि इसने संवेदनशील मौकों पर अपने सामाजिक दायित्व का जिम्मेदारी के साथ निर्वहन किया है। मेरे पिताजी किसी प्रसंग में एक बार बातचीत के दौरान बताया था कि

1984 में तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी की हत्या के बाद देश के अधिकांश हिस्सों में फैले सिख-विरोधी दंगों की दस्तक रांची में भी सुनायी दी थी और रामगढ़ में सेना के सिख जवानों को लेकर कई तरह की अफवाहें हवा में तैर रही थीं। उस समय दक्षिण छोटानागपुर के आयुक्त श्री प्रभाकरन थे, जो पिताजी के मित्रों में से थे, पिताजी से सम्पर्क कर कहा कि चूंकि उनके (पिताजी के) 'रांची एक्सप्रेस' के मालिक स्व. सीतामराम जी मारू और सम्पादक श्री बलबीर दत्त दोनों से अच्छे संबंध हैं, इसलिए वे दोनों से बात कर अनुरोध करें कि वे अफवाहों का मुकाबला करने में पूरा सहयोग करें। पिताजी ने जवाब दिया कि श्री मारू और श्री दत्त अपना दायित्व भलीभांति समझते हैं, फिर भी श्री प्रभाकरन का अनुरोध उन्होंने दोनों तक पहुंचा दिया। उस नाजुक समय में स्थिति को सामान्य बनाने में 'रांची एक्सप्रेस' की भूमिका बहुत सराहनीय रही। अन्य अवसरों पर भी 'रांची एक्सप्रेस' की भूमिका कुल मिलाकर सकारात्मक रही है।

फोटोग्राफी व लेखन की प्रेरणा मिली

✍ **कुलदीप सिंह दीपक,** *(प्रेस छायाकार/स्टुडियो संचालक)*

'रांची एक्सप्रेस' के 50 वर्षों की यात्रा में इस पत्र द्वारा प्रशिक्षित सैकड़ों पत्रकार, संवाददाता, छायाकार एवं पत्रकारिता की विभिन्न विधाओं से जुड़े लोग रांची और प्रदेश एवं देश के अन्य भागों में अपनी योग्यता की छाप छोड़ रहे हैं। 'रांची एक्सप्रेस' समाचारपत्र न होकर एक शिक्षण संस्थान के रूप में उभरा है। असंख्य लोग इस पत्र से प्रेरणा और मार्गदर्शन पाकर सम्मानपूर्वक आजीविका चला रहे हैं। इन अनगिनत लोगों के साथ-साथ मैं भी एक छायाकार के रूप में इस पत्र की प्रेरणा से प्रेस छायाकारिता जगत में कुछ सृजन करने की कोशिश कर रहा हूं।

बन गया प्रेस छायाकार

सन् 64 की बात है, जब मैं स्कूल में पढ़ा करता था। हमारे शिक्षक श्री शशि सर कहा करते थे, यदि भाषा सुधारनी हो तो समाचारपत्र पढ़ा करो। मुझे समाचारपत्र पढ़ने की प्रेरणा मिली। उस समय रांची से एकमात्र पत्र 'रांची एक्सप्रेस' प्रकाशित होता था, जिसकी कीमत मात्र पंद्रह पैसे थी। मैंने 'रांची एक्सप्रेस' पढ़ना शुरू किया। पढ़ने की इच्छा निरंतर बढ़ती ही गयी। इस पत्र के एक स्तंभ 'लोकवाणी' में पाठकों की राय छपा करती थी। इस स्तंभ में मैंने भी अपनी राय लिखकर भेजी। उसके छपने की उम्मीद मुझे कतई नहीं थी, किन्तु अगले अंक में उसे छपा देखा मुझे बेहद खुशी हुई।

सन् 1971 में जैन मंदिर के निकट मैंने एक छोटा-सा स्टुडियो खोला। स्टुडियो के उद्घाटन के दिन एक संवाददाता आये और उन्होंने कुछ जानकारी हासिल की। अगले दिन 'रांची एक्सप्रेस' में छोटा-सा किन्तु बाक्स में 'दीपक स्टुडियो' के उद्घाटन का समाचार प्रकाशित हुआ, जिसे देखकर मैं बहुत खुश हुआ। मैंने सोचा क्यों न इस तरह की खुशियां अपने छायाचित्रों के माध्यम से लोगों में बांटू। शीघ्र ही इच्छा पूरी हुई। स्टुडियो के निकट बालकृष्ण उच्च विद्यालय के हॉल में एक साहित्यक गोष्ठी का आयोजन हुआ जिसमें प्रसिद्ध साहित्यकार श्री राधाकृष्ण, डा.कामिल बुल्के, डा. द्वारका प्रसाद एवं डा. रामखेलावन पांडेय शिरकत कर रहे थे। मैंने इस आयोजन की फोटो उतार कर 'रांची एक्सप्रेस' के संपादक बलबीर दत्त जी को प्रस्तुत की। अगले दिन फोटो छपी तो मेरा हौसला बुलंद हुआ। इस प्रकार प्रेस छायांकन का मेरा सफर शुरू हुआ, जो लम्बे समय तक चला। इस दौरान मुझे कई नामी-गिरामी साहित्यकारों, नेताओं, कलाकारों एवं खिलाड़ियों की तस्वीरें उतारने का अवसर मिला।

स्वतंत्र लेखन की शुरुआत

कुछ शोधपरक लेख यथा 'रांची में पहले सिख का आगमन', 'रांची में गुरुनानक प्रकाश उत्सव पर पहली शोभायात्रा' 1936 में निकाली गयी,' 'रांची में स्टुडियो के 70 वर्ष' आदि लिखे जिन्हें 'रांची एक्सप्रेस' ने प्रमुखता से प्रकाशित किया। छायांकन के दौरान ही सम्पादक बलबीर दत्तजी ने ही मुझे लेखन कार्य के लिये प्रेरित किया। उनके मार्दर्शन में मैंने एक लघुकथा 'व्यवसायी' लिखी जिसे भारत यायावर जी द्वारा संपादित लघुकथा 'नवतारा' में प्रकाशित किया गया। मैंने और भी बहुत सारी लघुकथाएं लिखीं जिन्हें अधिकतर 'रांची एक्सप्रेस' एवं देश की कई अन्य पत्र-पत्रिकाओं में स्थान मिला। इन लघु कथाओं को पुस्तक का रूप (जानवर और इंसान) देने में मित्र अशोक पागल का सहयोग एवं तत्कालीन श्रद्वेय साहित्यकारों का मार्गदर्शन एवं आशीर्वाद मिला।

'रांची एक्सप्रेस' का है अंदाजे बयां और

✍ **इंदर सिंह नामधारी,** *(लोकसभा सदस्य, चतरा)*

वैसे भारत में शायर बहुत हुए लेकिन गालिब के बारे में कहा जाता है 'हैं और भी दुनिया में सुखनवर (शायर) बहुतेरे, कहते हैं कि गालिब का है अंदाजे बयां और।' इसी तरह छपने को अब बहुत उच्च कोटि के समाचारपत्र झारखंड में छपते हैं, लेकिन मुझे यह कहने में कोई हिचकिचाहट नहीं कि 'रांची एक्सप्रेस का है अंदाजे बयां और।' मैं इस बात का उल्लेख इसलिए कर रहा हूं कि 'रांची एक्सप्रेस' अपने आप में एक मुकम्मल अखबार है।

एक जमाना था जब रांची जैसे उभरते शहर से समाचारपत्र के नाम पर केवल 'रांची एक्सप्रेस' ही उपलब्ध था। मैंने चार पन्ने का 'रांची एक्सप्रेस' भी छपते देखा है। स्वर्गीय सीताराम मारू जी की अदम्य क्षमता ने इस अखबार को बुलंदियों तक पहुंचाया। मुझे इस बात का खेद जरूर है कि आज के स्पर्द्धा के युग में जितना ध्यान इस अखबार की ओर दिया जाना चाहिए था वह नहीं दिया जा रहा है।

मेरे राजनीतिक जीवन की शुरुआत और दैनिक के रूप में 'रांची एक्सप्रेस' का छपना लगभग साथ-साथ ही हुआ। इस अखबार के सम्पादक श्री बलबीर दत्त भी उसी युग के कर्तव्यनिष्ठ सम्पादक हैं। यही कारण है कि इस अखबार के साथ मेरे अनेक खट्टे-मीठे संस्मरण भी जुड़े हुए हैं। मैं 1990 के दिन नहीं भूलता, जब कई कारणों से मेरे भाजपा के साथ मतभेद उत्पन्न हुए। उस समय मेरे दिल की भावनाओं को उजागर करते हुए मेरे वक्तव्यों को रांची एक्सप्रेस ने जस का तस छापा। जब मुझे भाजपा से निष्कासित किया गया तो उस समय मेरे वक्तव्य को मात्र 'रांची एक्सप्रेस' ने छापा कि 'मेरी इस खता पर रहबरी छीनी गयी मुझसे, कि हमसे कारवां मंजिल पे लुटवाया नहीं जाता।' इतना ही नहीं 'रांची एक्सप्रेस' ने यह भी लिखा कि 'गुनाहगारों में शामिल हैं गुनाहों की खबर नहीं, सजा तो जानते हैं पर खुदा जाने खता क्या है।'

विकट परिस्थितियों में यदि कोई अखबार किसी आहत व्यक्ति के विचारों को प्रकाशित करे, वैसे अखबार आज के युग में कम ही देखने को मिलते हैं, क्योंकि समाचारपत्र अपने नफा-नुकसान को पहले देखते हैं। मैं 'रांची एक्सप्रेस' को इसलिए लकीर से हटकर देखता हूं क्योंकि रांची से छपने वाले अखबारों में 'रांची एक्सप्रेस' ही एक ऐसा अखबार है, जिसके झारखंड संस्करण में किसी को पूरे राज्य के समाचार मिल जायेंगे। आज सभी अखबारों ने आंचलिक संस्करण निकालने शुरू कर दिये हैं। 'रांची एक्सप्रेस' की स्वर्ण जयंती के अवसर पर मेरी शुभकामनाएं हैं ही, लेकिन अखबार के प्रकाशक अजय मारू से अपेक्षा है कि इस अखबार को अपना पुराना गौरव लौटाने का भगीरथ प्रयास करेंगे।

अर्द्धशती की मूल्यपरक पत्रकारिता

✍ **राहुल देव,** *(वरिष्ठ पत्रकार एवं मीडिया विशेषज्ञ, नयी दिल्ली)*

मीडिया की परिभाषा, इसका समीकरण और इसकी विशेषताओं, कमियों में निरंतर परिवर्तन के बीच 'रांची एक्सप्रेस' द्वारा अपने प्रकाशन के 50 वर्ष पूर्ण करना गौरव की बात है। मैं अर्धशती की मूल्यपरक, सिद्धांतवादी व प्रगतिशील पत्रकारिता के प्रति समर्पण के लिये 'रांची एक्सप्रेस', इसके प्रबंधन, प्रधान संपादक बलबीर दत्तजी और संपादकीय टीम का हार्दिक अभिनंदन करता हूं।

'रांची एक्सप्रेस' ने महत्वपूर्ण अंदाज में मील के पत्थर का स्पर्श किया है। यह बहुत बड़ी बात है। पत्रकारिता में बढ़ती मूल्यहीनता, बाजारवाद के दौर में बलबीर दत्तजी के नेतृत्व में 'रांची एक्सप्रेस' ने मूल्यों के प्रति अपनी प्रतिबद्धता बारंबार प्रमाणित की है। इसके लिये उन्हें साधुवाद।

'रांची एक्सप्रेस' के मामले में एक बात बढ़िया तरीके से प्रमाणित होती है। बेहतर पत्रकारिता के बावजूद अखबारी प्रतिस्पर्था में आज यह अखबार पिछड़ गया है। सही बात यह है कि आप केवल बेहतर पत्रकारिता करके अपना अस्तित्व नहीं बनाये रख सकते। मार्केटिंग की अपनी जरूरतें हैं। चाहे परंपरागत अखबार हो या आधुनिक लेकिन प्रबंधन की नवीनतम शैली, प्रतिस्पर्द्धा का तैयार माइंडसेट, अखबार की छवि, ढांचा, अखबार के पत्रकारों, प्रबंधन व अन्य कर्मियों का मोटिवेशन और सबसे बढ़कर उसमें होने वाला अच्छा खासा इन्वेस्टमेंट अब बहुत मायने रखते हैं।

कभी अखबारों की तकनीकी क्षमता कम थी। कम पृष्ठ होते थे और वे भी ब्लैक एंड व्हाइट। लेकिन तब अखबारों की विश्वसनीयता जबर्दश्त थी। लोग छपे हुए शब्दों पर यकीन करते थे। आज तकनीकी दृष्टिकोण से अखबार उत्कृष्ट हुए हैं। पृष्ठ संख्या भी बढ़ी है लेकिन यह भी सच है कि समाचार पत्रों, चैनलों, मीडिया संस्थानों व पत्रकारों की विश्वसनीयता कम हुई है। लेकिन सच का दूसरा पहलू यह भी है कि इसी दौर में अखबारों की पहुंच भी बढ़ी है और असर भी बढ़ा है। अखबारों, पत्रिकाओं व चैनलों की संख्या में बाढ़ व विस्फोट के कारण दबाव भी बढ़ा है और प्रतिस्पर्धा भी।

●●●

'रांची एक्सप्रेस' से जुड़ी कुछ सुनहरी यादें

✍ **डॉ. हीरालाल साहा,** *(प्रसिद्ध शल्य चिकित्सक/साहित्यकार, हजारीबाग)*

'रांची एक्सप्रेस' के पचास वर्षों का सफर अपने भीतर अनेक यादों को समेटे हुए हैं। साथ ही साथ झारखण्ड के निर्माण का इतिहास भी 'रांची एक्सप्रेस' के पन्नों में समाहित है। स्व. सीताराम मारू द्वारा स्थापित एवं श्री बलबीर दत्त द्वारा सम्पादित 'रांची एक्सप्रेस' का हर अंक इसकी पुरानी यादों को कुरेदता है। मैंने इसे पढ़ने की शुरूआत टण्डवा प्रखण्ड के चिकित्सा पदाधिकारी के रूप में वर्ष 1963 से की थी। 'रांची एक्सप्रेस' उन दिनों साप्ताहिक पत्र के रूप में झारखण्ड के समाचारों को घर-घर तक पहुंचाने का काम कर रहा था।

कुछ वर्षों में 'रांची एक्सप्रेस' दैनिक समाचारपत्र के रूप में प्रकाशित होने लगा और झारखण्ड के राजनैतिक, सामाजिक एवं आर्थिक जीवन में एक बदलाव नजर आने लगा। झारखण्ड का एक मात्र समाचारपत्र होने के कारण यह बहुत ही लोकप्रिय और सर्वपाठ्य समाचारपत्र बन गया। श्री बलबीर दत्त जी ने सम्पादक के रूप में अपनी लेखनी से सम्पूर्ण झारखण्डवासियों को एक दृष्टि दी। 'रांची एक्सप्रेस' के अध्यायों में एक स्वर्णिम युग जुड़ा, जब इस पत्र ने झारखण्ड के प्रतिभाशाली उभरते हुए लेखकों को राधाकृष्ण पुरस्कार देकर सम्मानित करना आरम्भ किया। मैं जानता हूं कुछ साहित्यकारों से परामर्श और सहयोग से बलबीर दत्त जी ने पुरस्कार को प्रारंभ करने में अहम भूमिका निभाई।

झारखण्ड के जीवन में भुचाल तब आया जब झारखण्ड आन्दोलन की गतिविधियां उग्र से उग्रतर होने लगी। शिबू सोरेन, सूरज मंडल एवं हजारों झारखण्ड आंदोलनकारियों की बातें जन-जन तक पहुंचाने में 'रांची एक्सप्रेस' ने अहम भूमिका निभाई। रामगढ़-गोला क्षेत्र में हो रहे साहूकारों द्वारा शोषण के खिलाफ आवाज टुण्डी में जाकर शिबू सोरेन और सूरज मंडल ने झारखण्ड आंदोलन के नये अध्याय की शुरुआत की। उन्होंने यह स्पष्ट कर दिया कि झारखण्ड का आंदोलन अब रुकने वाला नहीं है। यह तमाम खबरें 'रांची एक्सप्रेस' में लगातार छपती रहीं।

झारखण्ड की भाषा, सभ्यता, संस्कृति, रहन-सहन और भौगोलिक संरचना उत्तर बिहार से बिल्कुल भिन्न है। हमलोग तत्कालीन बिहार सरकार के अलगाववाद का शिकार नहीं होते रहना चाहते थे। हर प्रदेश के निर्माण में बहुत सी कठिनाइयां आती हैं और सभी झंझावातों को झेलते हुए वर्ष 2000 में झारखण्ड प्रदेश का निर्माण हुआ। झारखण्ड निर्माण में 'रांची एक्सप्रेस' की भूमिका अविस्मरणीय है। 'शिबू-सूरज झारखण्ड आंदोलन के दो सिपाही' नामक उपन्यास में मैंने 'रांची एक्सप्रेस' में प्रकाशित समाचारों को न केवल समेटा है, बल्कि उनको आधार बना कर और अपनी पुरानी यादों को साथ लेकर उस किताब को तैयार किया है, जो प्रकाशनाधीन है। किसी ने ठीक ही कहा है -

सुनू क्या सिन्धु मैं गरजन तुम्हारा, स्वयं युग धर्म का हुंकार हूं मैं।

●●●

स्वर्ण जयंती वर्ष, एक स्वर्ण अवसर

✍ **आत्माराम शाह,** *(समाजसेवी/वरिष्ठ अधिवक्ता आयकर एवं वाणिज्य कर)*

यदि हम पुरानी यादों में लौटें तो याद आता है 1963 का समय। उन दिनों रांची में संचार साधनों के मामले में कुछ टेलीफोन भर थे। रेडियो केवल कुछ चुनिंदा घरों में था, जबकि टीवी तो था ही नहीं। आपसी सामुदायिक संपर्क तथा खबरों को जानने का महत्वपूर्ण जरिया समाचार पत्र-पत्रिकाएं थीं, लेकिन इस मामले में न केवल रांची बल्कि पूरा छोटानागपुर बहुत पिछड़ा था। यहां कोई भी वैसा प्रभावी अखबार नहीं था जो नियमित रूप से छपता हो और सब जगह बंटता हो। नतीजा यह कि अखबार पढ़ने के जरूरतमंद और शौकीन लोग पटना और कलकत्ता आदि के अखबार पढ़ते थे। वे सारे अखबार दिन में या देर शाम रांची आते थे और खबरों के मामले में रांची की पूरी उपेक्षा होती थी। शायद उन अखबारों के पास भी झारखंड के कवरेज के लिए सीमित संसाधन थे।

उत्साह सिद्धये

यहां अनेक लोग यह महसूस करते थे कि रांची का अपना एक अखबार होना चाहिए जिसके पन्नों पर रांची प्रमुखता से नजर आये। दो उत्साही व्यक्ति गौरीशंकर मोदी एवं देवेन्द्र कुमार दत्त (बलबीर दत्त के बड़े भाई) साप्ताहिक समाचारपत्र के योजनाबद्ध प्रकाशन के विचार के साथ सामने आये। पुन: हम तीनों को सीताराम मारू का पुरजोर साथ मिला। इस क्रम में सम्पादक का दायित्व संभालने की बात चली और बलबीर दत्त इसके लिए राजी हो गये। उनके लेख रांची के अंग्रेजी साप्ताहिक 'न्यू रिपब्लिक' के अलावा पटना और दिल्ली आदि के हिन्दी व अंग्रेजी अखबारों में छपते रहते थे। इस प्रकार कारवां चल निकला और उसने गति ऐसी पकड़ी जिसकी कोई उम्मीद नहीं की गयी थी।

शुरुआत में 'रांची एक्सप्रेस' के प्रकाशक, संपादक, स्वत्वाधिकारी तथा मुद्रक के रूप में बलबीर दत्त का ही नाम छपता था। कोई साल भर बाद भारतीय कम्पनी अधिनियम 1956 के तहत रांची प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड नाम से कम्पनी बनायी गयी। इसके लिए प्रोस्पेक्टस, आर्टिकल्स आफ एसोसिएशन, मेमोरंडम आदि की ड्राफ्टिंग मैंने ही की। जब 'रांची एक्सप्रेस' का प्रकाशन शुरू हुआ था तब हमारे कई मित्रों ने आशंका जतायी थी कि इस अखबार का भी वही हश्र होगा जो इससे पहले रांची से निकलने वाले अखबारों का होता रहा है। मुझे बहुत अधिक खुशी है कि बिल्कुल शुरुआत में भले ही कुछ अंक कुछ देर-सबेर बाजार में आये हों लेकिन पांच दशक तक अखबार का नियमित प्रकाशन अपने आप में एक बड़ी उपलब्धि है।

इस कहानी के बाद आगे की ओर देखने की जरूरत है। भले ही झारखंडी पत्रकारिता के शिखर पर चढ़नेवाला 'रांची एक्सप्रेस' पहले दमदार खिलाड़ी रहा लेकिन पहल करना और पहल आगे बढ़ने के साथ-साथ सबसे तेज बढ़ना और सबसे आगे बढ़ना भी बहुत मायने रखता है। यह अच्छी बात है कि 'रांची एक्सप्रेस' कई अर्थों में पहला है लेकिन आज इससे भी ज्यादा खुशी इस बात की है कि पूरी स्वच्छता, पारदर्शिता के साथ ही बिना किसी पूर्वाग्रह, हलकी मानसिकता तथा क्षुद्र स्वार्थ के 'रांची एक्सप्रेस' अपने रास्ते पर आगे बढ़ता रहा।

कल, आज और कल

'रांची एक्सप्रेस' ने तत्कालीन बिहार और वर्तमान झारखंड की पत्रकारिता को मजबूती देने के साथ पूरे समाज तथा इस क्षेत्र के जीवन में कई सकारात्मक बदलाव लाने में योगदान किया। राधाकृष्ण पुरस्कार ने यहां साहित्य को जिस

प्रकार प्रोत्साहित किया उसकी दूसरी मिसाल पूरे देश में नहीं मिलती। जनहित के अनगिनत मुद्दों को 'रांची एक्सप्रेस' ने उठाया जिसके कई सकारात्मक परिणाम निकले। इसे कई लाख लोगों ने अपनी आंखों से देखा है। राष्ट्रीय स्तर के अनेक राजनीतिक नेता, समाजसेवी, साहित्यकार 'रांची एक्सप्रेस' में आये। यह जनभावना के साथ रांची व 'रांची एक्सप्रेस' के जुड़ाव का सर्वश्रेष्ठ संकेत था। लेकिन इसके साथ ही यहां यह बताना भी जरूरी है कि सभी राजनीतिक दलों और सामाजिक संगठनों ने 'रांची एक्सप्रेस' की भूमिका को हमेशा स्वीकारा।

उन लम्हों को भूल नहीं सकता

✍ **डा. भुवनेश्वर अनुज,** *(वरिष्ठ पत्रकार, साहित्यकार एवं समाजसेवी, रांची)*

कसौटियों पर खरा उतरनेवाला अखबार समाचार देने के साथ-साथ इतिहास का प्रामाणिक दस्तावेज होता है जो जनभावना को अभिव्यक्ति देता है और भविष्यद्रष्टा होता है।

आज स 50 साल पहले 1963 में स्वाधीनता दिवस की पूर्व संध्या पर जब 'रांची एक्सप्रेस' की बुनियाद डाली गयी तो उसके पीछे यही सोच थी। न केवल सैद्धांतिक बल्कि व्यावहारिक भी। वैसे बरसों पहले किसी अखबार की लॉचिंग का वह कांसेप्ट अब बासी हो गया है। अब तो लाभ कमाना और अधिक से अधिक विज्ञापन व प्रसार ही किसी नये अखबार का घोषित-अघोषित एजेंडा होता है। वैसे खुशी की बात यह है कि 'रांची एक्सप्रेस' में तब भी वैसा व्यावसायिक वातावरण नहीं था और आज भी नहीं है जबकि हर ओर बाजारवाद की आंधी चल रही है।

सुविधाओं का अभाव

सीताराम मारू जी, बलबीर दत्त जी और उनके साथ कई अन्य लोग एक साप्ताहिक अखबार के प्रयास में अरसे से लगे थे। मैं उन दिनों अंग्रेजी साप्ताहिक 'न्यू रिपब्लिक' के लिए लिखता था जिसमें श्री दत्त का साप्ताहिक स्तंभ भी नियमित रूप से प्रकाशित होता था। मेरे समाचार व आलेख आदि 'इंडियन नेशन', 'आर्यावर्त', 'प्रदीप' आदि के साथ ही एजेंसियों के माध्यम से भी छपते थे।

धीरे-धीरे 14 अगस्त, 1963 का वह स्वर्णिम दिन सामने आ गया जब सीताराम जी, बलबीर जी तथा अन्य लोगों के प्रयास का परिणाम साक्षात् रूप में सामने आ गया। नगर के गोविन्द भवन (सतुलाल पुस्तकालय) में तब के छोटे से नगर रांची के गणमान्य और अन्य लोग जुटे। राज्यपाल अनन्तशयनम आयंगर ने साप्ताहिक 'रांची एक्सप्रेस' के प्रवेशांक का विमोचन किया। समारोह की अध्यक्षता सुप्रसिद्ध साहित्यकार राधाकृष्ण ने की। वह समय इतना खुशगवार था कि उन लम्हों की रोमांचकता को मैं ताउम्र भूल नहीं सकता।

उन दिनों नियमित रूप से कोई अखबार निकालने का संकल्प लेना भी काफी हिम्मत की बात थी। यह काफी कष्टकर था। पहले तो सही तरह से समाचारों का संकलन, फिर प्रकाशन और अंततः छपायी वगैरह के बाद पाठकों के हाथों तक अखबार पहुंचाना। वह भी तब जबकि कोई आधारभूत संरचना थी ही नहीं। सुविधाओं का घोर अभाव था। लेकिन दृढ़ संकल्प के सामने सभी चुनौतियां बौनी प्रमाणित हुई।

जबरदस्त क्रेज

न केवल बहुत सारे समाचार बल्कि अन्य बहुत सारी महत्वपूर्ण पठनीय सामग्रियां भी ऐसी होती है जो केवल और केवल 'रांची एक्सप्रेस' में ही मिलती है। मेरे द्वारा लिखित पुस्तक 'झारखंड के प्राचीन स्मारक' सन् 2000 में छपी। इसमें

प्रकाशित अधिकांश आलेख 'रांची एक्सप्रेस' में छप चुके थे। आम लोगों की आकांक्षा, भावना और जरूरतों के साथ 'रांची एक्सप्रेस' ने हमेशा सीधा-सच्चा संबंध कायम रखा। इसी का प्रभाव था कि कभी दिन के दूसरे पहर 'रांची एक्सप्रेस' पूरे बाजार से गायब हो जाता था। अखबार पढ़ने के लिए सभी वर्ग के लोगों में जबरदस्त क्रेज था। तब इसकी उपयोगिता जबरदस्त थी। पटना, कलकाता या दिल्ली के अखबार दिन ढले या शाम को पहुंचते थे। धीर-धीरे ऐसी स्थिति उत्पन्न होने लगी कि चुनौती देने के मामले में 'रांची एक्सप्रेस' की साख के आसपास भी कोई दूसरा अखबार नहीं रह गया। 'रांची एक्सप्रेस' या इससे जुड़े किसी भी व्यक्ति ने कभी भी अपने प्रभाव का दुरुपयोग नहीं किया। जनता के प्रति और जनता के हित में यह अखबार हमेशा से समर्पित रहा है।

मेरा यह सौभाग्य है कि मुझे इसके प्रधान सम्पादक बलबीर दत्त जी के साथ काम करने का मौका मिला। वह अब भी मेरे गहरे मित्र हैं और हमेशा रहेंगे। मैं लम्बे समय तक 'रांची एक्सप्रेस' में विशेष संवाददाता रहा। बलबीर जी सत्यान्वेषी और परिश्रमी होने के साथ-साथ काफी सुलझे हुए व्यक्ति हैं। लेकिन सबसे महान बात यह कि पत्रकारिता के मापदंड पर इतने लम्बे कार्यकाल में उन्होंने कभी समझौता नहीं किया। जब भी अखबार की साख या स्वयं के स्वाभिमान पर आंच आयी तो उन्होंने इसका मुखर विरोध-प्रतिरोध किया। उन्होंने हर किसी के सम्मान की रक्षा की है। हर कोई उन्हें अपना मानता है। यही उनकी खासियत है।

एक्सप्रेस ने अनेकों को पत्रकारिता सिखाई

✍ **राय तपन भारती,** *(दिल्ली के वरिष्ठ आर्थिक पत्रकार व टीवी चैनलों के नियमित वार्ताकार)*

'रांची एक्सप्रेस' को मैं कभी नहीं भूल सकता। यहां की नौकरी छोड़े 29 साल हो चुके हैं, परन्तु वहां से पाठकों को निष्पक्ष सूचना देने की जो शपथ ली उससे अब तक नहीं डिगा। मध्य सितंबर में जब अपनी पत्नी की दिवंगत भाभी के श्राद्ध में रांची गया तो 'रांची एक्सप्रेस' के संस्थापक संपादक बलबीर दत्तजी, जो पत्रकारिता में मेरे प्रथम गुरु हैं, से मिलने के लिए मन मचल उठा। समय लेकर शाम को पहुंच गया उनके दफ्तर। बलबीर जी को पांच साल पहले मेरी बेटी की शादी के मौके पर जैसा देखा था वैसा ही दिखे। उनके टेबल पर छपने वाले सभी पन्नों की प्रिंट कॉपी। संपादक की इजाजत के बाद ही पेज अब भी पास होता है। मुझे लगता है कि किसी भी प्रतिष्ठित और पुराने अखबार में शायद ही संपादक इतनी गहराई से सारे पन्नों की पड़ताल करते होंगे।

मैं फ्लैशबैक में चला गया। मैं 1981 से 1984 के बीच रांची में लॉ का छात्र था। छोटानागपुर लॉ कॉलेज से कुछ ही फासले पर तब रांची का इकलौता अखबार था- 'रांची एक्सप्रेस'। झारखंड के इस लोकप्रिय अखबार के 'लोकवाणी' स्तम्भ में मेरे कई पत्र संपादक के नाम छप चुके थे। पत्रकार बनने की लालसा लेकर मैं एक दिन अपर बाजार में बड़ा लाल स्ट्रीट स्थित 'रांची एक्सप्रेस' के दफ्तर में बलबीर जी से मिला। मुलाकात के लिए अनावश्यक परेशानी नहीं झेलनी पड़ी। साथ में मैं 'रांची एक्सप्रेस', दैनिक 'प्रदीप' और 'सारण संदेश' में अपने छपे समाचार और संपादक के नाम छपे पत्रों की कतरनें, एक कॉपी में चिपकाकर ले गया था। संपादकजी ने कहा-कल से आ जाओ। अखबार में मेरी यह पहली नौकरी थी। खुशी का ठिकाना नहीं था।

अनुशासन का पाठ 'रांची एक्सप्रेस' में ही सीखा। बलबीर जी नियमतः रोज सुबह 11 बजे संपादकीय बैठक लेते थे, उसमें जो लेट पहुंचता उसका नाम उनके चैम्बर में लगे नोटिस बोर्ड पर चढ़ जाता था। संयोगवश मेरा नाम एक-दो बार से अधिक नहीं चढ़ा। हमलोगों को संस्थापक संचालक सीताराम मारू, उनके पुत्रों विजयजी, पवनजी और अजयजी

से काम करने की जो आजादी मिली शायद वह व्यवस्था आज भी कायम है। इतिहास साक्षी है कि 'रांची एक्सप्रेस' ने झारखंड के लोगों में न केवल अखबार पढ़ने की आदत डाली बल्कि, देश-दुनिया के बारे में जागरूकता बढ़ाई। इसने अनेक लोगों को जहां पत्रकारिता सिखायी वहीं दूसरी ओर तमाम गतिविधियों को अपने पन्नों में समेटकर बताया कि झारखंड के लोगों को भी को आगे बढ़ने का उतना ही अधिकार है जितना शेष दुनिया के लोगों को। इस अखबार ने महत्वाकांक्षी लोगों के सपनों और अरमानों में पंख लगाये।

संपादकीय के कारण हुआ निगम चुनाव

✍ **राम किशोर प्रसाद,** *(अध्यक्ष लायर्स एसोसिएशन, झारखंड हाईकोर्ट)*

'रांची एक्सप्रेस' की शुरुआत 1963 में हुई। एक छोटा-सा पौधा विशाल वट वृक्ष बन गया। मैं पलामू जिले के डालटनगंज का स्थायी निवासी हूं। 1963 में जब यह अखबार प्रकाशित हुआ उस वर्ष मैं गणेशलाल अग्रवाल हाईस्कूल में 9वीं कक्षा में पढ़ता था। मैं शाम को प्रतिदिन कनीराम पुस्तकालय में जाता था। इस पुस्तकालय में पटना से प्रकाशित 'आर्यावर्त', 'प्रदीप', 'इंडियन नेशन', 'सर्च लाइट', कलकता से प्रकाशित 'स्टेट्समैन' एवं 'विश्वमित्र' तथा कई पत्रिकाएं जैसे 'धर्मयुग', 'दिनमान', 'बालक' आदि मंगायी जाती थीं। इनके साथ 'रांची एक्सप्रेस' साप्ताहिक भी आता था। मैं सभी पत्रों के साथ 'रांची एक्सप्रेस' भी पढ़ता था।

पलामू से हवलदारी राम गुप्त द्वारा प्रकाशित साप्ताहिक 'हलधर' एवं राजेन्द्र प्रसाद द्वारा प्रकाशित 'पलामू टाइम्स' के अलावा सत्यपाल वर्मा का 'पलामू दर्पण' भी प्रकाशित होता था।

'कानूनी सलाह' स्तम्भ

'रांची एक्सप्रेस' में छोटानागपुर के विभिन्न क्षेत्रों के समाचार प्रकाशित किये जाते थे जिनमें मुख्य रूप से रांची, गुमला, लोहरदगा, सिमडेगा, जमशेदपुर, रामगढ़, हजारीबाग, गिरिडीह, चास, बोकारो, धनबाद, डालटनगंज, चाईबासा, चक्रधरपुर वं अन्य स्थानों के समाचार होते थे। लोग 'रांची एक्सप्रेस' को छोटानागपुर का अखबार मानते थे।

1964 में मैं अपने पिताजी (स्व. जगन्नाथ प्रसाद) के साथ रांची आया तो रांची शहर में घूमने के दौरान लालपुर चौक के पास मैंने 'रांची एक्सप्रेस' कार्यालय का बोर्ड देखा। तब मुझे पता चला कि यह अखबार यहीं से छपता है, 'रांची एक्सप्रेस' का मैं निरंतर पाठक बना रहा।

मैंने 29 जून, 1971 को पलामू समाहरणालय में सहायक के पद पर योगदान दिया। सभी अखबारों के साथ 'रांची एक्सप्रेस' से भी जुड़ा रहा। वर्ष 1980 से मैं संपादक बलबीर दत्त के सम्पर्क में आया। रांची महिला महाविद्यालय की व्याख्याता उषा सक्सेना ने 14 सितम्बर, 1980 को हिन्दी दिवस पर रांची के आर्यसमाज मंदिर में एक गोष्ठी आयोजित की थी। उसी में बलबीर दत्त जी से मुलाकात हुई और उस मुलाकात ने एक स्थायी अपनेपन का रूप ले लिया।

29 मई, 1983 को पटना हाई कोर्ट की रांची बेंच के परिसर में एक बैठक हुई जिसमें पहली बार रांची में निःशुल्क कानूनी सहायता क्लीनिक की स्थापना हुई। क्लीनिक के संचालन के लिए विशिष्ट न्यायविदों की एक तदर्थ समिति गठित की गयी जिसके अध्यक्ष न्यायाधीश मदन मोहन प्रसाद बनाये गये। मुझे समिति का संयोजक सह सदस्य सचिव बनाया गया। यह समाचार 'रांची एक्सप्रेस' में प्रकाशित हुआ। क्लीनिक से संबंधित समाचार 'रांची एक्सप्रेस' में छपते रहे। 31 जनवरी, 1984 से छोटनागपुर की जनता को कानूनी सहायता देने एवं कानूनी साक्षारता को बढ़ावा देने के तहत निः

शुल्क कानूनी सहायता क्लीनिक के सौजन्य से पाठकों के लिए कानूनी सलाह स्तंभ का प्रकाशन 'रांची एक्सप्रेस' के माध्यम से प्रारम्भ हुआ। यह साप्ताहिक कालम था।

1985 का निगम चुनाव

6 अक्तूबर, 1984 को 'रांची एक्सप्रेस' में एक संपादकीय छपा जिसका शीर्षक था- 'रांची की जनता को चुनौती।' रांची नगर निगम का चुनाव 20 वर्षों से नहीं कराये जाने पर आक्रोश व्यक्त किया गया था। मैंने इस चुनौती को स्वीकार किया। श्री देवी प्रसाद वरीय अधिवक्ता, जो क्लीनिक के कार्यकारी अध्यक्ष थे, ने रांची नगर निगम के चुनाव हेतु एक रिट याचिका का प्रारूप तैयार कराया। 22 अक्तूबर, 1984 को पटना हाईकोर्ट की रांची पीठ के समक्ष विविध वाद राम किशोर प्रसाद सचिव निःशुल्क कानूनी सहायता क्लीनिक बनाम बिहार राज्य दाखिल किया गया। दिनांक 31 अक्तूबर, 1984 को इस मामले की सुनवाई हाईकोर्ट की रांची बेंच में हुई एवं सरकार को जवाब दाखिल करने का आदेश हुआ। बाद में इसे सुनवाई के लिए स्वीकार कर लिया गया। काफी लम्बी बहस हुई 28 फरवरी, 1985 को रांची नगर निगम का चुनाव कराने के लिए अंतिम आदेश हुआ जिसे 'रांची एक्सप्रेस' ने प्रमुखता से प्रकाशित किया। 'रांची एक्सप्रेस' जनहित के मामले को बराबर प्रमुखता से प्रकाशित करता रहा है। 4 मार्च, 1985 को 'रांची एक्सप्रेस' में संपादकीय प्रकाशित हुआ 'राज्य सरकार के मुंह पर थप्पड़।' यह रांची नगर निगम के चुनाव हेतु हाईकोर्ट के फैसले पर टिप्पणी थी।

'रांची एक्सप्रेस' के पचास वर्ष पूरे होना एक गर्व की बात है। 'रांची एक्सप्रेस' ने अपने 50 वर्षों के कालखण्ड में कई बदलाव देखे। अखबार ने अलग झारखंड आन्दोलन की शुरुआत से लेकर एक सपने को साकार होते देखा है।

'रांची एक्सप्रेस' जनता के हित में हमेशा खड़ा रहा है एवं खड़ा रहेगा। मेरी शुभकामना है कि 'रांची एक्सप्रेस' का नाम पूरे हिन्दुस्तान में जाना जाये।

विद्यार्थी जीवन से 'रांची एक्सप्रेस' रहा प्रेरणा स्त्रोत

✍ **सुधांशु शेखर बरवार,** *(उपायुक्त, लोहरदगा)*

झारखंड राज्य को एकसूत्र में बांधने वाले दैनिक रांची एक्सप्रेस ने सूचना क्रांन्ति के दौर में अलग विशिष्ट पहचान बनायी है। अपनी धारदार लेखनी व सशक्त प्रस्तुतीकरण समेत विभिन्न विशेषताओं के कारण यह अखबार झारखंड के आईने के रूप में जाना जाता है। मै 1969 से अबतक 'रांची एक्सप्रेस' से सीधा जुड़ा हूं। प्रतिदिन रांची एक्सप्रेस अखबार पहले देखने के बाद दूसरे अखबारों पर निगाह जाती है। 'रांची एक्सप्रेस' का कार्यालय जब लालपुर चौक में हुआ करता था उस समय मेरा एक मित्र सुदर्शन मिश्रा कार्यालय में बतौर कंपोजीटर हुआ करता था। उससे मिलने प्रतिदिन 'रांची एक्सप्रेस' कार्यालय जाता था। इस दौरान इस अखबार को निकट से देखने और समझने का मुझे मौका मिला।

उस समय रांची में सिर्फ 'रांची एक्सप्रेस' अकेला हिंदी अखबार हुआ करता था। पटना से आनेवाला 'इंडियन नेशन' व कलकता का 'अमृत बाजार पत्रिका' तथा कुछ- एक अन्य अखबार रांची में उपलब्ध थे पर रांची एक्सप्रेस के मुकाबले इनके पाठक नगण्य थे। जब मै 1969 में आईए का विद्यार्थी था, उस समय रांची से विशेष तौर पर अखबार खरीदकर अपने गांव भरनो ले जाता था। उस समय से 'रांची एक्सप्रेस' मेरे जीवन में प्रेरणा स्त्रोत बन गया। बाद में बस परिवहन के माध्यम से इस अखबार का फैलाव ग्रामीण इलाकों तक हुआ और इसको लेने में सहूलियत होने लगी। राज्य के विभिन्न जिलों के साथ ग्रामीण इलाकों में इसकी सहज उपलब्धता से इसका एकछत्र साम्राज्य था। वर्तमान में चमक

दमक व प्रतिस्पर्द्धा के दौर में भी रांची एक्सप्रेस की पूरे झारखंड में अलग पहचान है। इस अखबार की विशेषता रही है कि इसको पढ़ लेने के बाद पूरे राज्य के हालात और गतिविधियों की ताजा जानकारी सहज मिल जाती है जबकि अन्य अखबारों में इस तरह की सुविधा देखने को नहीं मिलती है। इसके प्रत्येक पृष्ठ में खबरों का चयन और उनकी सशक्त प्रस्तुति इसकी विशिष्टता को बढ़ा देती है। इस अखबार का संपादकीय पृष्ठ और संजीवनी पृष्ठ पाठकों के बौद्धिक स्तर को ऊंचा उठाने वाला होता है। जीवन के संघर्षो से लड़ने के लिए इससे आत्मबल मिलता है। 'रांची एक्सप्रेस' के संपादक बलबीर दत्त की लेखनी का जवाब नहीं है। विद्यार्थी जीवन से ही बलबीर दत्त जी का फैन रहा हूं। झारखंड में पत्रकारिता के क्षेत्र में पांच दशक पूर्व सिर्फ बलबीर दत्त का नाम काफी माना जाता था। इनकी सभी टिप्पणियां व लेख संग्रहणीय होते हैं। रांची एक्सप्रेस के साथ बलबीर दत्त का नाम जुड़ा होना इस अखबार की खास पहचान बन गई है। वर्तमान में इस प्रेरणादायी अखबार के पृष्ठों को बढ़ाकर खबरों की संख्या बढ़ाने की जरूरत है। साथ ही आधुनिकता के साथ कुछ बदलाव होने से इसकी पुरानी गौरवपूर्ण गरिमा पुनः वापस आएगी। 'रांची एक्सप्रेस' के 50वें वर्ष में प्रवेश पर 'रांची एक्सप्रेस' परिवार को मेरी ओर से ढ़ेर सारी शुभकामनाएं।

पत्रकारिता की पैनी कलम का धनी

✍ **डा. मोती सिंह,** *(वरिष्ठ चिकित्सक एवं पूर्व निदेशक स्वास्थ्य सेवाएं कोल इंडिया)*

रांची से प्रकाशित समाचारपत्रों में 'रांची एक्सप्रेस' की एक विशिष्ट पहचान है। यह जानकर प्रसन्नता हो रही है कि यह अखबार अब प्रकाशन के 50वें वर्ष में प्रवेश कर गया है।

'रांची एक्सप्रेस' के साथ मेरी रोचक एवं अविस्मरणीय यादें जुड़ी हुयी हैं। शुरू से ही मैं 'रांची एक्सप्रेस' नियमित रूप से पढ़ा करता था। उन दिनों मैं एचईसी अस्पताल में सेवारत था। यह वर्ष 1963 की बात है। रांची से एकमात्र हिन्दी साप्ताहिक 'रांची एक्सप्रेस' का प्रकाशन शुरू हो चुका था। स्थापनाकाल से ही पत्रकारिता की पैनी कलम का यह अखबार धनी रहा है। साप्ताहिक अखबार होने के नाते सप्ताह भर तक लोगों को प्रतीक्षा रहती थी। अस्पताल व घर में फुर्सत के क्षणों में अखबार के सभी पृष्ठ पढ़ जाया करता था। उन दिनों प्रिंटिंग तकनीक इतनी विकसित नहीं थी। फिर भी छपाई स्पष्ट और साफ-सुथरी होती थी। धीरे-धीरे यह अखबार काफी लोकप्रिय होता गया।

संस्थापक स्व. सीताराम मारू के कुशल मार्गदर्शन में सशक्त सम्पादकीय टीम के प्रयासों से यह अखबार बाद में दैनिक के रूप में प्रकाशित होने लगा।

निर्भीक व निष्पक्ष पत्रकारिता

निर्भीक व निष्पक्ष पत्रकारिता की जो मशाल 'रांची एक्सप्रेस' ने जलायी उसका लाभ झारखंड ही नहीं बल्कि देश की पत्रकारिता को भी हुआ है। बहुत कम अखबार ऐसे हैं जिनके सभी संस्करणों में देश-प्रदेश के सभी समाचार मिलते हैं। लेकिन 'रांची एक्सप्रेस' के एक ही संस्करण में सभी जिलों, राज्य, देश एवं विदेश के समाचार मिल जाते हैं। पाठकों के लिए यह खुशी की बात है।

अखबार के लोकप्रिय होने का एक कारण यह भी लगता है। समाचारों के चयन में भी 'रांची एक्सप्रेस' अग्रणी है। 'रांची एक्सप्रेस' में शायद ही कभी तथ्यहीन समाचार देखने को मिलते हैं। लोकवाणी, सम्पादकीय, रविवारीय परिशिष्ट,

स्वास्थ्य-शिक्षा से जुड़ी सामग्रियां, विभिन्न स्तंभों व परिशिष्टों के प्रकाशन से पाठक लाभान्वित होते रहे हैं। 'रांची एक्सप्रेस' के सम्पादक बलबीर दत्त की पत्रकारिता की धार आज भी बरकरार है। उनके सम्पादकीय लेख व टिप्पणियां लोग बढ़े चाव के पढ़ते रहे हैं। मुझे यह जानकर काफी प्रसन्नता हो रही हैं कि 'रांची एक्सप्रेस' 50 वर्ष पूरे कर गोल्डन जुबली मनाने जा रहा है। मेरी शुभकामना है कि 'रांची एक्सप्रेस' ने पत्रकारिता के शिखर पर पहुंचने में जो कामयाबी हासिल की है उसकी लौ से पूरे राज्य की जनता को लाभ मिलता रहे। झारखंड एवं बिहार सहित देश के कई बड़े अखबार आज संक्रमण के दौर से गुजर रहे हैं। इसलिए समाचारों पर कम व्यवसाय पर अधिक ध्यान दिया जा रहा है। लेकिन 'रांची एक्सप्रेस' का ध्यान आज भी पठनीय सामग्री एवं विश्वसनीय समाचारों पर केन्द्रित है। यह खुशी की बात है।

मेडिकल सेवा में 50 वर्ष

मैं 1963 से 1983 तक एचईसी अस्पताल में, वर्ष 1983 से 1989 तक सीसीएल के गांधी नगर अस्पताल में मुख्य चिकित्सा पदाधिकारी और 1989 से 1991 तक कोल इंडिया लिमिटेड में मुख्य मेडिकल सर्विसेज स्वास्थ्य सेवाएं के पद पर पदस्थापित था। 1991 में कोल इंडिया से सेवानिवृत्त हुआ। 'रांची एक्सप्रेस' के प्रकाशन की तरह चिकित्सा क्षेत्र में मेरी सेवा भी लगभग 50 वर्ष पूरी हो गयी है। लगभग इतने ही वर्षों में मेरा नाता 'रांची एक्सप्रेस' के साथ रहा है। जब मैं कोल इंडिया एवं सीसीएल में पदस्थापित था तो कोल इंडिया के सभी अस्पतालों में मैं 'रांची एक्सप्रेस' मंगाता था। चिकित्सक, पारा मेडिकल स्टाफ, स्वास्थ्य कर्मी एवं मरीजों के परिजन काफी चाव से इसे पढ़ते थे। आज भी मैं कई हिन्दी एवं अंग्रेजी अखबारों के साथ-साथ 'रांची एक्सप्रेस' अवश्य ही पढ़ता हूं।

जेपी आंदोलन के समाचारों की याद

✍ **डा. अजय कुमार सिंह,** *(प्लास्टिक सर्जन/पूर्व राष्ट्रीय उपाध्यक्ष इंडियन मेडिकल एसोसिएशन)*

हम लोगों का रांची आना 1963 में हुआ और सौभाग्य एवं संयोग से 'रांची एक्सप्रेस' का भी प्रकाशन उसी वर्ष प्रारम्भ हुआ। हम लोग पटना से आये थे 'आर्यावर्त', 'सर्च लाइट', 'इंडियन नेशन' अखबारों से वाकिफ थे। पर रांची में आकर रांची की खुशबू और समाचारों से सान्निध्य 'रांची एक्सप्रेस' से प्रारम्भ हुआ।

जेपी आंदोलन और नवनिर्माण समिति

1967-68 में कालेज में अध्ययन के दौरान महामाया बाबू की सरकार का बनना, उनका रांची आना, जिगर के टुकड़ों वाला उनका सम्बोधन 'रांची एक्सप्रेस' से ही पता लगा। 1974 में जे.पी. आन्दोलन में नवनिर्माण समिति के बैनर पर हमारी और दोस्तों की भूमिका 'रांची एक्सप्रेस' में प्रकाशित होती रही। यूं कहें कि 'रांची एक्सप्रेस' हमारी दिनचर्या का एक प्रमुख अंग तब भी था और क्या कहें सब होते हुए भी आज भी है। 1980 और तक हमारा संबंध इस अखबार के पाठक के रूप में था। फिर जून 1980 में मैं बसिया गया अपनी पहली सरकारी पोस्टिंग पर। मेरे लिए और मेरी पत्नी के लिए यह एक बिल्कुल नयी जगह थी, नये लोग अपनों से 120 किलोमीटर दूर एकान्त में। रेफरल अस्पताल शुरू करने का जिम्मा। लोगों का काफी सहयोग मिला। नगर से संबंध मात्र 'रांची एक्सप्रेस' के माध्यम से था वहीं पर शाम तक यह अखबार मिल जाता और हम अपने नगर और क्षेत्र की गतिविधियों से अवगत होते थे। उस समय पूरे राज्य (अविभाजित बिहार) में 'रांची एक्सप्रेस' का एक ही संस्करण होता था और 'गागर में सागर' की तरह यह दैनिक अपने में सभी प्रमुख समाचार संजोये रहता था। 1981-82 की बात है राज्य में

आम चुनाव हो रहे थे। सभी राजनैतिक दलों के कद्दावर नेता इस क्षेत्र में घूम रहे थे। संत जेवियर कालेज का विद्यार्थी होने, तद्उपरान्त 1974-75 जे.पी. आंदोलन में सहभागिता के कारण इस क्षेत्र के सभी दलों के प्रमुख नेताओं से मेरा सम्पर्क था।

दायित्वशीलता का परिचय

उसी दौरान एक दिन हम दम्पति अपने अस्पताल परिवार के कवार्टर के बरामदे में बैठे थे कि एकाएक एक एम्बेस्डर गाडी आयी। उसमें से एक बड़ी ही सभ्रांत महिला उतरी। देखते ही हमने पहचान लिया वह राजमाता ग्वालियर श्रीमती विजयाराजे सिंधिया थी। वह भारतीय जनसंघ की राष्ट्रीय उपाध्यक्ष थी। हम सम्मान में उठकर उनके पास पहुंचे, प्रणाम किया। उन्होंने स्नेह से मेरी पत्नी को आगोश में ले लिया। तब तक हमने देखा कि उनके साथ हमारे पिता तुल्य श्री सीताराम मारू जी भी हैं जो मेरे पिता जी के अभिन्न मित्र भी थे और साथ ही श्री ननी गोपाल मित्रा विधायक। सब जल्दी में थे। हमने उन्हें अस्पताल परिसर चलने का आग्रह किया ताकि अनशन पर बैठे दिगम्बर मुखिया को फलों का रस पिलाकर अनशन समाप्त कराया जाये। राजमाता राजी हो गयीं। अनशन टूटा, फोटो खिंचे और हम अपनी मांग की पूर्ति और समाचार का इंतजार करने लगे 'रांची एक्सप्रेस' में। अगले दिन अखबार आया पर सब उलट गया। किसी अति उत्साहित संवाददाता ने जो समाचार भेजा उसमें राजमाता सिंधिया और श्री सीताराम मारू द्वारा अनशन समाप्त कराने का उल्लेख करते हुए लिख दिया कि मुखिया श्री दिगम्बर सिंह की मांगों में डा. अजय सिंह को हटाने की मांग शामिल थी। नयी उम्र, नया जोश। अखबार पढ़ते ही मैंने पत्नी से कहा कि अब यहां एक पल भी मैं नहीं रह सकता। प्रकाशित समाचार की बात दावानल की तरह पूरे इलाके में फैल गयी। सब बेचैन, सब भूल को समझ रहे थे। मैं वापस जाने पर अडिग।

आपात स्थिति बन गयी। स्थानीय लोगों की बैठक हुई। समाचार का खण्डन करवाने का फैसला हुआ। तहसीलदार साहब के बेटे सतीश जी को रांची जाने एवं समाचार दुरुस्त करवाने का जिम्मा दिया गया, वह मजदूर बस से शाम को रांची के लिये चल दिये। बात श्री सीताराम मारू जी के संज्ञान में आ गयी थी। दूसरे दिन पूरे समाचार का खण्डन 'रांची एक्सप्रेस' में प्रमुखता से छपा। हमारी सही स्थिति बतायी गयी। आज भी मैं आभारी हूं 'रांची एक्सप्रेस' दैनिक की उस संवेदनशीलता का जिसने हमें तत्काल इंसाफ दिया। बसिया के लोगों को हम आज भी याद करते हैं प्यार से। वो हमारे चिकित्सकीय जीवन का स्वर्णिम अध्याय था। वहां के लोग भी हमें दिल से चाहते थे। 'रांची एक्सप्रेस' के स्वर्ण जयन्ती वर्ष पर बधाई। हम आशा करते हैं कि 'रांची एक्सप्रेस' पाठकों के प्रति अपनी संवेदनशीलता और दायित्वशीलता बनाये रखेगा।

झारखंड की पत्रकारिता का स्वर्ण जयंती वर्ष

✍ **बिसेश्वर प्रसाद केशरी,** *(बुद्धिजीवी, पूर्व विभागाध्यक्ष, जनजातीय तथा क्षेत्रीय भाषा विभाग, रांची वि.वि.)*

'रांची एक्सप्रेस' के 50 वर्ष पूरे हो गये हैं। यह जानकर मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई। 1963 में 'रांची एक्सप्रेस' का प्रकाशन एक साप्ताहिक पत्र के रूप में हुआ था। तत्कालीन राज्यपाल अनन्तशयनम आयंगर ने 'रांची एक्सप्रेस' के उद्घाटन के अवसर पर कहा था कि यह साप्ताहिक पत्र इस क्षेत्र की जनता का शक्तिशाली प्रवक्ता बने और चिरंजीवी हो। इस बात के आज 50 वर्ष पूरे हो गये। आयंगर जी ने इस पत्र के लिए जो कामना की थी सत्य साबित हुई।

निश्चित तौर पर कहा जा सकता है कि 'रांची एक्सप्रेस' सम्पूर्ण झारखण्ड का ही प्रवक्ता न बना बल्कि आसपास के क्षेत्रों तक अपनी अच्छी उपस्थिति दर्ज की। 'रांची एक्सप्रेस' के उद्घाटन समारोह में मैं उपस्थित नहीं था। उस वक्त मैं डाल्टनगंज में महाविद्यालय की सेवा से जुड़ा था। मेरा रांची (पिठोरिया) आना-जाना लगा रहता था। 'रांची एक्सप्रेस' का अंक देख कर मैं बहुत खुश हुआ था। पहले ही अंक ने मुझे प्रभावित किया और मस्तिष्क में आशा बंधी थी कि निश्चित तौर पर यह अखबार दूर तक जाएगा। मित्रों से यह भी पता चला था कि (स्व.) सीताराम मारु और संपादक बलबीर दत्त ने 'रांची एक्सप्रेस' की शुरुआत की है। दोनों के बेहतर तालमेल से दिन-ब-दिन 'रांची एक्सप्रेस' आगे बढ़ता गया।

झारखंड में पत्रकारिता की नर्सरी

मैं 'रांची एक्सप्रेस' का एक सुधी पाठक होने के नाते बता सकता हूं कि 'रांची एक्सप्रेस' का हर अंक अपने पिछले अंक से बेहतर होता था। इसी कारण बहुत कम ही समय में 'राँची एक्सप्रेस' पूरे दक्षिण बिहार का सबसे ज्यादा पढ़ा जाने वाला अखबार बन गया था।

'रांची एक्सप्रेस' के पूर्व भी दक्षिण बिहार से काफी संख्या में पत्र निकले थे किन्तु ज्यादा दिनों तक चल नहीं पाए थे। 'रांची एक्सप्रेस' निरन्तर प्रकाशित हो रहा था। यह क्षेत्र के लिए बड़ी बात थी। इस अखबार ने एक बड़ा अच्छा काम यह किया था कि इसने पत्रकारों को बाहर से नहीं बुलाया बल्कि स्थानीय पत्रकारिता से लगाव रखने वाले लोगों को प्रशिक्षित किया और 'रांची एक्सप्रेस' से जोड़ा। दूसरे शब्दों में कहा जा सकता है कि 'रांची एक्सप्रेस' ने इस क्षेत्र में पत्रकारिता की नर्सरी का काम किया था। दक्षिण बिहार के अधिकांश पत्रकारो ने पत्रकारिता का पहला पाठ 'रांची एक्सप्रेस' से सीखा था। 'रांची एक्सप्रेस' से प्रशिक्षित पत्रकार आज मीडिया के विभिन्न क्षेत्रों में देशभर में चमक रहे हैं। 'रांची एक्सप्रेस' ने झारखण्ड की पत्रकारिता को एक मजबूत स्वरूप प्रदान किया था। मेरी दृष्टि में सिर्फ 'रांची एक्सप्रेस' का जयन्ती वर्ष न होकर झारखण्ड की पत्रकारिता का स्वर्ण जयंती वर्ष है।

1976 में आपातकाल के दौरान 'राँची एक्सप्रेस' साप्ताहिक से दैनिक बना था। उस वक्त अखबारों में सेंसरशिप लागू था। दक्षिण बिहार में दैनिक अखबार का कोई ट्रेंड विकसित नहीं हुआ था। परिस्थितियां सब उल्टी थी। मैं समझता हूँ कि 'रांची एक्सप्रेस' का यह दौर साधना और संघर्ष का था। आपातकाल की काली छाया देश पर छायी हुई थी। देश के कई बड़े नेता जेलों में बंद थे। अखबार ही एक मात्र विकल्प शेष थी जो देश में छायी कालिमा को दूर कर सकते थे। 'रांची एक्सप्रेस' ने इमरजेंसी में भी काफी हद तक अपना तेवर कायम रखा।

'रांची एक्सप्रेस' के संपादकीय में एक खास आकर्षण हुआ करता था। बिना पढ़े रहा नहीं जाता था। यहां के नेतागण 'रांची एक्सप्रेस' पढ़कर अखबारों में बयान दिया करते थे। 'रांची एक्सप्रेस' के सम्पादकीय की बुद्धिजीवियों के बीच काफी चर्चा हुआ करती थी। विभिन्न मुद्दों पर बलबीर दत्त प्रारम्भ से लिखते रहे हैं। वे एक कुशल संपादक के साथ अच्छे चिंतक और लेखक भी हैं। बलवीर दत्त ने पूरी जिन्दगी लगा दी 'रांची एक्सप्रेस' को संवारने में। उनमें आज तक मैंने कोई लंदफंद नहीं देखा। वे खालिस पत्रकार हैं। उनके इस पहलू पर किसी ने नोटिस लिया है या नहीं, मैं नहीं जानता हूं। बलबीर दत्त की 'कहानी झारखण्ड आंदोलन की' एवं 'सफरनामा पाकिस्तान' दोनों अद्वितीय कृतियां हैं। उनकी वर्षों की साधना और संघर्ष ने 'रांची एक्सप्रेस' को उस मुकाम तक पहुंचाया था। बलबीर दत्त से मेरा कई बार मिलना हुआ। वे एक खुले दिल के मिलनसार व्यक्ति हैं। उन्होंने 'रांची एक्सप्रेस' के लिए मुझसे भी लिखवाया और विभिन्न अवसरो पर छापा।

मतभेद मनभेद नहीं

झारखण्ड के मुद्दे पर हमारी सोच से 'रांची एक्सप्रेस' की दृष्टि भिन्न थी। फिर भी हम सबों की गतिविधियों की खबरें 'रांची एक्सप्रेस' विस्तार से प्रकाशित करता रहा। हमलोगों का 'रांची एक्सप्रेस' से वैचारिक मतभेद है किन्तु मनभेद नहीं। 1987 में मैं, एन.ई. होरो, डा. रामदयाल मुण्डा आदि ने मिलकर 'झारखण्ड समन्वय समिति' बनाई थी। इस समिति में झारखंड के अनेक राजनीतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक संगठनों का विलय था। बतौर संयोजक हमलोगों ने जिस झारखण्ड की मांग की थी, वह आज का झारखंड न था। इस मुद्दे पर 'रांची एक्सप्रेस' अपनी दृष्टि अपने संपादकीय और लेखों के माध्यम से रखता रहा था। 1988 में भाजपा ने जब 'वनांचल' की मांग को अपने एजेन्डा में डाला था तब 'रांची एक्सप्रेस' ने बिना संकोच 'वनांचल' की मांग को सही ठहराया और पक्ष में कई लेख प्रकाशित किये थे। 'वनांचल' के मुद्दे पर हमलोगों की असहमति थी। जिस अलग प्रांत की मांग को लेकर हमलोगों ने अनेक संगठनों का विलय किया था उसमें वनांचल बहुत छोटा क्षेत्र था। इस सम्बन्ध में हमलोगों की बराबर बैठकें होती थी। 'रांची एक्सप्रेस' बिना भेद-भाव के हमलोगों की भी खबरें छापा करता था।